

**THE BOOK WAS
DRENCHED
TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182547

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83

Accession No. L PG
H18

C435

Author धगताई, मिर्जा अजीमवेग.

Title शरीर बीवी . 1951.

This book should be returned on or before the date
last marked below.

श्री-सरोजमाला संख्या—६

शरीर बीबी

[हास्यरस प्रधान मनोरञ्जक पठन्यास]

ले०—स्वर्गीय मिर्जा अजीमबेग चगताई

अनुवादक

श्री व्यथितहृदय

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. B.

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग

चतुर्थ संस्करण]

१९५१

[मूल्य १।।।]

प्रकाशक

श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०

छात्रहितकारी पुस्तकमाला,

दारागञ्ज, प्रयाग ।

Printed 1969



Printed at the
College of Arts & Commerce (I),

मुद्रक

सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'

नागरी प्रेस, दारागंज,

प्रयाग

भूमिका

मिर्जा अजीमबेग चगताई का 'कोलतार' नामक हास्यरस का उपन्यास, जो अभी हाल ही में हमारे यहाँ से प्रकाशित हो चुका है; पाठकों तथा समालोचकों को इतना सुन्दर और सुरुचिपूर्ण प्रतीत हुआ है कि सभी ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आज हम उन्हीं लेखक का यह दूसरा हास्यरस का उपन्यास प्रकाशित करके पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं। आशा है सहृदय पाठक कोलतार की तरह इसे भी पसन्द करेंगे। साथ ही पाठकों ने यदि इसे अपनाया तो यथा समय हम शीघ्र ही चगताई साहब के अन्य उपन्यास भी प्रकाशित कर उनकी सेवा में उपस्थित करेंगे।

—प्रकाशक

सूची

परिच्छेद			पृष्ठ संख्या
१—हमारी शरारतें	...	...	१
२—शरीर लड़की	...	...	२५
३—गलत फहमी	...	...	६१
४—लाहौर का सफर	...	...	४८
५—कुनैन का इस्तेमाल	...	...	६२
६—हिन्दुस्तानी परदा	...	...	६१
७—गुमनाम पत्र	...	...	११०
८—दोस्त की बेवकूफी	...	...	११२
९—आबरू की फिलासफी	...	...	११४

पहला परिच्छेद

हमारी शरारतें

आज हम पाठकों को अपनी शरारतों का कुछ खुलासा-सा हाल सुनाते हैं। कुछ अधिक दिन नहीं बीते, जब हमारे पिता कानपुर में थे, तब हम सातवें दर्जे में पढ़ते थे और सरकारी बँगले में ठंडा सड़क पर रहते थे। इतवार का दिन था। सबरे तड़के हो हमारे बँगले पर दो-तीन दोस्त आ पहुँचे, जिनसे तै हो गया था कि नदी के किनारे ककड़ों खाने चलेंगे। हम लोग सबरे-सबरे बँगले से निकले। जैसे ही बाहर निकले, कोई साहब सड़क के किनारे बैठे हुए पेशाब कर रहे थे। इसलिये सबसे पहले यह काम किया गया कि एकदम से उनके दोनों कन्धों को पड़क कर उन्हें जमीन पर थिलकुल चित लिटा दिया और भागकर यह गया, वह गया। गालियाँ तो नही मालूम कितनी ही थीं, किन्तु दूर से यह अवश्य देखा था, कि वे नल पर नहा रहे हैं। थोड़ा आगे बढ़े तो एक साहब साइकिल पर जा रहे थे। इसलिए हम उचककर पीछे कील पर खड़े हो गये थे। भलेमानस हँसने लगे। हम निराश होकर थोड़ी देर में उतर पड़े। एक दूसरे साहब मिले। उनकी साइकिल पर जब हम खड़े हुए, तब वे बहुत गुस्सा हुए। उस तरह कि हमें चरत मारकर भागना पड़ा। एक और 'साइकिल सवार' साहब तार के एक खम्भे के पास खड़े होकर सिगरेट सुलगा रहे थे। उनके पास पहुँचकर हमने कहा, 'हजरत, जरा दियासलाई की मेहरबानी कीजियेगा।' उन्होंने जब दियासलाई दी, तब हमने कहा, 'जरा सिगरेट दीजियेगा।'।'

उन्होंने कहा, ऐसे उल्टू कहीं और रहते हैं। हमने दियासला, जेब में रक्खी और कहा, अच्छा न दीजिये। वे हमारे पीछे दौड़े किन्तु “लाहौल बिलाकूबत” कहाँ हम, कहाँ वे। हम लोग बहुत आगे निकल गये और वे लौट गये। थोड़ी देर बाद जब हमने मुड़कर देखा, तब वे हजरत साइकिल पर धीरे-धीरे चले आ रहे हैं। हम एक किनारे के पेड़ की ओट में छिप गये कि कहीं देख न लें। हमने देखा, कि उनके मुँह के सिगरेट के साथ ही जैसे ही साइकिल सामने आई; हाथ बढ़ाकर उनके मुँह से सिगरेट छीन लिया। उन्होंने जब देखा, तब झुककर सलाम किया। वे बे बिके हुए की तरह हमारे पीछे साइकिल रखकर दौड़े। उधर हमारे एक दोस्त ने क्या किया, कि उनकी साइकिल लेकर यह गया, वह गया। वे हमें छोड़कर उम आर लपके। जब हमने यह देखा तब हम रुक गये हमारा माया ने कुछ दूर जाकर साइकिल जमीन पर रख दी, किन्तु एक छेद उनके ट्यूब में कर दिया। हम अपने दोस्तों से दूसरी सड़क पर जाकर मिल गये। दाहिने हाथ की ओर देखते क्या हैं, कि एक बहुत बड़ा मैदान दूर तक चला गया है। एक अदमी लोटा लेकर हुए मैदान के बीच में चला आ रहा था। मालूम होता था, कि वह पाखाने जा रहा है। जिस बँगले से वह आया था, वह बहुत दूर था और नल भी वहाँ से बहुत दूर था। हम शीघ्र सड़क छोड़कर दौड़ते हुये उसके पास पहुँचे। उसे पुकारते जाते थे, कि भई भैया बात सुन लो। हम हाँफते-काँपते हुए उसके पास पहुँचे। उसकी सूरत-शकल देखकर भय मालूम हुआ। क्योंकि वह तगडा-मजबूत जवान था। किन्तु हम भी जान पर खेल गये कि हमारी मिहनत बेकार न जाये! चलती-सीधी दो एक बातें करके लोटे में हाथ मारकर गिरा दिया और यह गया, वह गया! वह बड़े जोर से हमारी ओर दौड़ा, किन्तु

हमारी खुश-किस्मती कहिये कि उस शक्ति ने उसको रोक लिया, जिससे रस्तम भी हार मान गया होगा। हमने जब मुड़कर देखा तब वे हजरत बिलकुल हारे हुए थे। फिर तो हमने उसको मारे ईंटों के परीशान कर दिया। तात्पर्य यह कि इस काम को पूरा करके कुछ दूर गये होंगे कि देखा कि एक पहलवान साहब तह-बन्द बांधे चले जा रहे थे। उनके पैर इस प्रकार पड़ रहे थे कि हमारे मुँह में पानी भर आया, कि काश हम इनसे भी कुछ मनो-रञ्जन करते, और कम से कम इनकी मजबूत पेंडुलियों में पैर अड़ाकर इन्हें गिराते। हमारे साथियों ने कहा कि यह हमें अवश्य मारेगा। हम इसको सलाह नहीं देते। हमने कहा, चाहे जान जाये या रहे, इसका अवश्य एक टङ्गड़ी देंगे। हमारे साथी घबड़ाकर अलग हो गये, किंतु हमने खुदा का नाम लेकर पीछे से जाकर उनके पैर में इस प्रकार अड़ाया, कि वे घुटनों के बल गिरे। वहीं से पहलवान साहब जूता लेकर उठे और उठते-उठते उन्होंने जूता फेंककर मारा; जो हमारी पीठ में लगा। हमने बेवकूफी की, जो मुड़कर देखा, क्योंकि आनन-फानन में हम पकड़ लिये गये, और पहलवान साहब ने मुझे एक तमाचा ऐसा मारा कि यदि हम अपने हाथ पर न रोकते तो कदाचित् हमारा मुँह फिर जाता। दूसरा पड़ने ही को था, कि हमारे साथी ने उनकी सोने के काम की टोपी उनके सिर से चक्क ली। वे हमें छोड़कर उधर दौड़े, और हमारे साथी ने उनकी टोपी फेंककर अपनी जान बचाई। बहुत चूल्हा-सीधा चक्कर देकर रास्ता काटा। हम चले जा रहे थे कि एक साहब ने हमको एक दूकान से पुकारा, 'मियाँ शाहजादे ! जरा बात तो सुन जाओ।' हम जब पहुँचे, तब उन्होंने एक चिट्ठी सामने रखी कि यह बड़ी जरूरी चिट्ठी है, जरा पढ़ दो। हमारा तो जान ही जल उठा।

हम जरा दूकान से हटकर चिट्ठी को फाड़कर अपने साथियों सहित ऐसे भगे, कि गालियों को मधुर और प्रिय आवाज भी कानों में न पहुँच सकी। कुछ और आगे पहुँचे तो देखा, कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। चूँकि हमें मंजूर नहीं था कि उनमें लड़ाई हो, हम भी लड़ाई में शामिल हुए, और बिलकुल न्याय से काम लिया कि दोनों को दोनों से मारना शुरू किया। फल यह हुआ कि दोनों लड़ना बन्द करके हम पर हमला कर बैठे, किन्तु हम भला कहाँ हाथ आते थे। दूर से देखा कि दोनों में मेज हा गया था। क्योंकि दोनों साथ-साथ चले जा रहे थे। प्यास बहुत लग रही थी। एक नल पर पहुँच कर हमने पानी पिया। पास ही एक किताबवाले ने एक बड़ी चटाई बिछाकर दूकान लगाई थी। हमने जब ध्यान से देखा, तब मलूम हुआ कि नल से जो पानी वह कर बरबाद हो रहा है, बड़ी आसानी से एक कच्ची मुँडेर तोड़ कर इस तरह काम में लाया जा सकता है, कि वह इन किताब बेचने वाले साहब की दूकान को तर-वतर कर दे, फौरन इसे काम में लाया गया, और हमें इसमें बड़ा मजा आया कि कह नहीं सकता। किताब बेचने वाले साहब अपनी किताबों को बचाने के लिए इस बुरी तरह कूद-फाँद रहे थे कि हम कह नहीं सकते। कुछ आगे बढ़ कर हमने देखा, कि एक साकी साहब बहुत बड़ा हुक्का लिये चले आ रहे हैं। चिलम के सिर पर मानों पेचंदबे की टर्किश कैप रखी थी, और कोयले चोटी तक भरे हुए खूब दहक रहे थे। हम लोग सलाम बन्दगी करके आगे बढ़े और हुक्का गुड़-गुड़ाने लगे। हमारे दूसरे साथी हुक्के की तारीफ करने में लगे हुए थे, और साकी साहब को बातों में लगाये हुए थे। हमने आँख से इशारा किया,

और एक लम्बी साँस लेकर अपने दोनों फेरुड़ों की ताकत को लगाकर जोर से जब हुक्के को फूँका तब पानी चिलम के भीतर पहुँचा, उधर साकी साहब कोयला के बुझने की आवाज से चिलम की ओर आकर्षित हुए ही थे, कि हम सिर पर पैर रख कर भागे। न मालूम कितनी गालियाँ सुनी। कुछ और दूर जा कर हमने पतङ्गबाजी देखी और कुछ दूर भी लूरी, जो फेंक फाँक दी, कुछ ही दूर गये थे, कि सामने से मिस विलियम अपनी साइकिल पर आती हुई दिखाई पड़ी। यह एक लड़की थी, जो मिशन स्कूल में पढ़ती थी और हमसे बहुत डरती थी। क्योंकि हम मौकें बे मौकें जब कभी उसको दूर से आते हुए देखते, तब अपनी साइकिल की हवा निकाल कर खड़े हो जाते और साइकिल रोक कर उसका पर्य लेकर बड़ी देर लगाकर हवा भरते। हमने उसे इतना तंग किया था, कि उसको हर जगह रोकते थे। नौबत यहाँ तक पहुँची कि एक दिन हम पकड़ कर उसके बाप के बैंगले पर ले जाये गये; किन्तु वहाँ बजाय सजा मिलने के मेरी आव-भगत हुई, और केक खाने की नौबत आई। इस पेशी का फल यह हुआ कि मिस साहबा उलटी डाँटी गई और हमसे कहा गया कि तुम आवश्यकता पड़ने पर इनसे पर्य माँग कर साइकिल में हवा भर लिया करो। मिस साहब ने हमसे मेल इन शर्तों के साथ किया था कि वे हमको देखते ही साइकिल से इकत्री सड़क पर डाल देती थीं, और हम केवल सलाम ही पर संतोष करते थे। हालाँकि हमारे पास साइकिल नहीं थी, किन्तु हमने आगे आकर रोकना चाहा। फौरन इकत्री वसूल करके फौजी सलाम करके साइकिल को जाने दिया। इससे छुट्टी पाई थी, कि सामने से दो गोरे आते हुए दिखाई पड़े। वे अभी दूर ही थे कि हमने निश्चय कर लिया कि चाहे

कुछ ही क्यों न हो, हम इनसे अवश्य उलझेंगे। वे जब पास आ गये, तब हम स्वीकार करते हैं, कि हम डर गये और कुछ न कर सके; किन्तु थोड़ी देर के बाद जोश आया, और अपना रास्ता छोड़कर गोरों का पीछा किया। खुलासा यह कि कोई विशेष शरारत करने की हिम्मत न पड़ी। विवश होकर हमने पीछे से उन पर धूल फेंकने ही पर सन्तोष किया और सिर पर पैर रख कर भाग आये।

खुदा खुदा करके, न मालूम कितने चक्कर काटकर अन्त में नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ कुछ लोग हमारा रास्ता देख रहे थे। ककड़ी के खेत, नदी के बीचोबीच, एक द्वीप में थे, और वहाँ जाने के लिए किसी नेक महाजन ने एक नाव दान में दे दी थी। यह नाव बड़ी-सी थी, और उसके दोनों किनारों पर रस्से बँधे हुये थे। एक रस्सा इस किनारे के खूँटे से बँधा हुआ था, और दूसरा रस्सा नदी के उस पार। हम लोग नाव में सवार हो गये। रस्से का दूसरा सिर घसीट कर उस पार खेत पर पहुँचे। खेत पर पहुँच कर हमने पैसे की चार ककड़ियाँ ठहराई, किन्तु शर्त यह की कि कड़ुवी होगी तो फेंक देंगे और दूसरी लेंगे। अतः बहुत सी मीठी ककड़ियाँ काट-काटकर फेंक दी, और उनके बदले में दूसरी लीं, किन्तु चलते समय जब हिसाब हो चुका, तब जमीन के उन ककड़ियों को भी उठा-उठा कर खा गये और इस प्रकार हमें पैसे की चार की जगह पर पैसे की पाँच ककड़ियाँ पड़ीं। यहाँ किनारे पर साधु भी रहते थे। और हमने बहुत सफाई से, एक बहुत अच्छे ढङ्ग का चिमटा अर्थात् भाग उठाने का हस्त-कवच चुराया, और उसको कोट में छिपाकर ले आये। लौटते समय हम लोग जब नाव पर पहुँचे तब वह उस पार थी, और कुछ लोग उस पर बैठना ही

चाहते थे। हम शीघ्र दौड़े और रस्सा खींचना शुरू किया। यह हमारी हृदय दर्जे की बदतमीजी समझी गई, और वे लोग गुस्से में आकर उधर से खींचने लगे, किन्तु इस रस्साकशी में हमारी जीत हुई और हम नाव पर बैठ गये। चूँकि हम इन लोगों को सजा देना चाहते थे, अतएव हमने रस्सा घसीट कर इस किनारे का झूँटा उखाड़ दिया, जिसका पता उनको तब लगा, जब हम जरा दूर से खड़े होकर तमाशा दे रहे थे कि ये लोग अब उस पार नहीं जा सकते। तात्पर्य यह कि बीसों आदमी उस पार जाने को खड़े थे; और झूँटा उखाड़ जाने के कारण न जा सकते थे। यहाँ से दोस्तों की सलाह हुई कि चलो वे फसली बेदाना अमरुद् के बगीचे में चलें, और खुतासा यह कि दो मील का सफर तै किया और बगीचे में पहुँच गये। बगीचा बहुत बड़ा था और हमने निश्चय किया कि इस पर चारों ओर से हमला करना चाहिए। अतः दो-दो, तीन-तीन की टोलियाँ बन गई; और चारों ओर से किनार के पेड़ों पर बिना किसी बनावट के चढ़ गये, और अमरुद् तोड़ना और फेंकना शुरू कर दिये। बगीचे के माली की निगाह पहले हमारे ऊपर पड़ी, और वह दौड़ा। सामनेवाली पार्टी ने जब देखा कि उसने मुझे देख लिया है, तब उन्होंने बड़े जोरों के साथ लकड़ी से कच्चे-पक्के अमरुद् फाड़ना शुरू कर दिये, और शोर मचाकर उसे अपनी ओर आकर्षित किया। उसने देखा कि उस ओर अधिक नुकसान हो रहा है, वह उस ओर भागा, और इस ओर हम उसके पीछे-पीछे उसकी झोपड़ी पर हमला कर बैठे। जो कुछ पाया, लूट लिया। मिट्टी के बड़े फोड़ डाले, और हुक्का फेंक दिया। तात्पर्य यह कि बहुत नुकसान हुआ। वे लोग पेड़ से उतर कर भागे। जब देखा कि माली नहीं मानता, तब दूसरी पार्टी की

और संकेत किया, कि देखो, वे अधिक नुकसान कर रहे हैं। उसने जब मुड़कर देखा, तब बुरा हाल था। हमारी पार्टी के जवाँमँद लकड़ियों से मार-मार कर पेड़ों को बिछाये देते थे। वह अभागा उस ओर दौड़ा कि उस पार्टी ने फिर अपनी जगह ले ली। खुलासा यह कि इतनी ही देर में हाँफ कर थक कर बैठ गया, और कहने लगा, खूब खाओ। हमने उसके कथन को पूरा किया, और आनन्द से खाकर लौट आये। लौटते समय हमें एक खेत के किनारे नारियल का एक ढुक्का रखा हुआ मिला। जिसका ढुक्का था, वह कुछ थोड़ी दूर पर कुँये के पास था। हमने झट ढुक्का उठा लिया। अब मजे में उस समय तक उससे मनोरंजन करते रहे, जब तब कि उसने काम दिया। फिर फेंक दिया। वहाँ से वापसी में हमको एक पेड़ मिला, जिस पर कच्चे कैंत लगे हुए थे। सलाह हुई कि इनको तोड़ना चाहिए। फिर क्या था? सैकड़ों-हजारों कैंत गिरा दिये। इतने में एक आदमी आगया। उसने बुरा-भला कहा। तब हमने उसको उसी साधु वाले चिमटे से मारना शुरू किया। हमारे साथियों ने हमारा हाथ बँटाया, और उसको बेतरह लकड़ियों से मारना शुरू किया। खुलासा यह कि उसको धेड़ कर गिरा दिया, किन्तु मारना बन्द न किया। उसका सौभाग्य था, जो सामने से चार-पाँच आदमी हमको लट्ठ लिये, शोर-गुल मचाते हुए आते दिखाई पड़े। हम वहाँ से तारे की तरह भागे। हमारा बहुत कुछ पीछा किया गया किन्तु बेकार। वापसी में किसी नई शरारत का अवसर न मिला अलावा इसके, कि एक खोंचेवाले की मिठाई इस प्रकार बरबाद की कि उसके पास की नाली में इतने जोर से पत्थर मारा कि वामां छटि उड़कर उसके और उसके खोंचे पर पड़े। धीरे-

धीरे वहाँ से ऊलन मिल कम्पनी के पास होते हुये, और मामूली शरारतें करते हुये हम यंगमैन असोशियेशन क्लब पहुँचे। वहाँ क्या देखते हैं कि फुटबाल का एक मैच हो रहा है; और बहुत ज्यादा भीड़ है। जारों से मैच हो रहा था। हमारे सभी साथी अलग हो गये थे। केवल वे ही रह गये, जो हमारे बैंगले से हमारे साथ चले थे। हम भी थके हुए थे। अतएव मैच में जी न लगता था। बहुत तरकीबें सोचीं, कि क्या करें, किन्तु कुछ समझ में न आया। विवश होकर समय बिताने के लिए वहाँ पहुँचे, जहाँ अनगिनती साइकिलों की भीड़ थी, और सेफ्टीपेन निकाल कर पंजर करना शुरू कर दिये। सुलासा यह कि एक-एक साइकिल बेकाम कर दी। इससे छुट्टी पाये ही थे, कि सोचा कि मैच खतम करना चाहिये। फुटबाल मैदान से बाहर भी आकर गिरता था, और लड़के दौड़कर उठाकर खिलाड़ियों को वापस कर देते थे। हमने भी एक बार सेवा के इस काम को पूरा किया, किन्तु धीरे से अपने सेफ्टीपेन की नोक उसमें गड़ा दी। कठिनाई से दो किक लगे होंगे, कि दूसरा फुटबाल जो मौजूद रहता है, माँगा गया। उसका भी हमने वही हाल किया। चलिये छुट्टी हुई, दूसरा फुटबाल ही न रहा। मैच गड़बड़ हो गया, किन्तु साथ ही हमारे ऊपर सन्देश-सा क्रिया गया। हमने अच्छा समझा कि वहाँ से खिसक चलें। मैच तितर-बितर हो गया, और वास्तविक आनन्द तो तब आया, जब बाइसिकिल वाले अपनी बाइसिकिल पर चढ़कर शीघ्र ही उतरने के लिए लाचार हुए। अजीब मजा आ रहा था, सब लोग कह रहे थे, कि यह कौन शैतान था, जिसने फुटबाल को भी बिगाड़ा और बाइसिकिलों को भी। मैच से लौटकर हम अपने बैंगले में जाने ही वाले थे, कि हमने देखा कि सामने

के परेड के मैदान में दो साँड़ लड़ रहे हैं। यह मैदान चारों ओर, से एक नीची दीवाल से घिरा हुआ है, जिस पर सींकचे लगे हुए हैं। हम उस पर खड़े होकर तमाशा देखने लगे, किन्तु कुछ लोग भीतर खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। दूसरों के साथ ही उनमें एक मिठाई वाला भी था। साँड़ों में ऐसी रेल-पेल हुई कि खोंचे वाला दीवाल और साँड़ों के बीच में इस तरह आ गया कि उसको दीवाल पर खोंचा कन्धे पर रख कर इस प्रकार बैठना पड़ा, कि खोंचा हमारे सामने दस्तरखान की तरह लग गया। हमने भी खूब खाया। खोंचा वाला देख रहा था, किन्तु कुछ कर न सकता था। क्योंकि शोर-गुल और हुल्लड़ अधिक था, अफसोस, कि हमारी हँसी ने हमको अधिक न खाने दिया, और लड़ाई खतम होने के पहले ही हम भाग गये। चिराग जल गये थे कि इतने में एक साहब आये। उन्होंने कहा कि चलो खिलौनों का मेला देख आयें, जो याद नहीं कि किस मन्दिर के हाते में होता था। हमने पहले तो इन्कार किया लेकिन फिर जाना पड़ा। परेड के मैदान से होते हुए उसके दूसरे फाटक पर निकले। देखा कि एक आदमी कपड़े की दूकान लगाये हुये है। इस दूकान की दीवालें उसने चादरें तान कर कपड़े ही की बनाई थी, और कपड़े ही की छत बनाई थी। हम उसके पीछे से होकर निकले, कि हमको एक छोटा-सा ठेला दिखाई पड़ा, जिस पर इन कपड़ों को वह घर से लाकर लाया था। हमने शीघ्र ठेले को दूर ले जाकर जोर से दौड़ा कर दूकान की पीठ में इतसे जोर से रेला, कि वह कपड़े की दीवाल को तोड़ता हुआ दूकान के भीतर इस तरह घुस गया, कि सारी दूकान गिर गई। भीतर से दो आदमियों के चीखने की आवाज आई। किन्तु हम भाग गये। अब हम ट्राम की

पटरी-पटरी जा रहे थे। सोचा कि लाओ ट्राम की पटरी पर ईंट रखें, देखें क्या होता है। फौरन रख दी, और अस्पताल के पीछे की ओर खड़े होकर तमाशा देखने लगे। इतने में एक ट्राम जोर से आई और ईंट पर आकर बड़े झटके से रुकी। ट्राम वाले ने शोर मचाया और एक सिपाही दौड़ा हुआ आया। लोगों ने इधर-उधर देखा और एक शैतान ने न जाने हम लोगों की ओर कुछ सन्देह से—छँगुली उठाई, या इसलिये कि हम लोग अस्पताल की दोवाला फाँदकर भागे और हमारे पीछे कानिसटेबुल दौड़ा। हम अस्पताल के कम्पाउण्ड में अँधेरे में बे-तमाशा भागे और बदकिस्मती से ठोकर खाकर गिरे और पकड़े गये। कानिसटेबुल ने बुरी तरह हमको घसीटा और डाँटा और पकड़ कर ले चला, किन्तु हम भला कब हिलने-डुलने वाले थे। वहीं पसर गये। वह हमारा नाम और पता पूछता था और हम बता कर शीघ्र छूट सकते थे। किन्तु इसमें डर था कि घर पर मरम्मत होगी।

अतः हमने न बताया ! इतने में हमारी फौज आगई और हमने इतमिनान से देखा कि हमारा साथी पीछे से कानिसटेबुल पर हमला कर बैठा, और साफा झटका कर चलता बना। कानिसटेबुल का उस ओर मुँह करना था कि हमने झटका देकर हाथ छुड़ाया और यह गया, वह गया। हमारा साथी भी थोड़ी दूर चलकर हमें मिला। वह साफा फेंक कर आया था। हम लोग सीधे अपने मन्दिर की ओर चले। रास्ते में देखा कि एक खोंचे वाले ने नौजवान मजदूर को पकड़ रखा है, और हुज्रत हा रही है। हम झट आ पहुँचे, और उसमें मुनासिब दखल दिया। हमने खोंचे वाले को बड़ी बुरी तरह डाँटा कि हमारे नौकर को छोड़ो, क्यों पकड़े हो, यह हमारा आदमी है।

उसने कहा कि मुझको उससे पाँच आने पैसे लेने हैं। हमने झट कहा, इसके जन्मेवार हम हैं, इसको छोड़ दो। वह छूटते ही भागा, और इधर हम भी चल दिये। मन्दिर के हाते में पहुँचे। बड़े ओर से मेला लगा हुआ था। यह धकापेल थी कि खुदा की पनाह। सबसे पहले यह निश्चय हुआ कि कचालू और सोंठ के बताशे खायेँ जायँ। अतः खूब उससे शौक किया। इसके बाद उसी जगह बैठ कर मिठाई की ठहरी। हम रुपया लेकर एक साथी के साथ मिठाई लेने के लिए गये, और बाकी दो को वहीं छोड़ा। हर दूकान पर पहुँच कर हर प्रकार की मिठाई चक्खी और वह भी इस तरह कि अन्त में उन्होंने चक्खाने से इनकार कर दिया। हमने बङ्गाली मिठाई पसन्द की। यद्यपि हमारे साथी काश्मीरी ब्राह्मण थे, किन्तु दूकानदार हम दोनों को भङ्गी समझता था, और उसने कहा, अलग खड़े हो। हमको बुरा मालूम हुआ। उसने हमारी माँग के मुताबिक सेर भर मिठाई तौली, और हाथ में न देकर हमसे कहने लगा, हाथ फैलाओ, हमने हाथ फैला दिये, उसने दूर ही से मिठाई का दोना हमारे हाथ पर छोड़ा। हमने झट हाथ ढीले कर दिये, और मिठाई का दोना नीचे गिर पड़ा। हम झट गरज कर दूकानदार पर बरस पड़े, और उधर वह दूकान से नीचे उतर पड़ा, कि अपने पूरे दाम ले लूँगा। पूरा फसाद खड़ा हो गया। किन्तु हमें न दाम देने थे, न दिये। दूसरी जगह से मिठाई खरीदी, और लाकर पान वाले की दूकान पर पहुँचे। यह पान की दूकान भी देखने योग्य थी। पान वाला मुख्य दरवाजे के बाईं ओर आदमी के कद की ऊँचाई पर एक मचान बाँध कर बैठा था, और उसने दूकान को ऐसा सजाया था कि, लोग उसी दूकान पर दूट पड़ते थे। पानवाले साहब

अपने आप को न जाने क्या समझे हुए थे। दूकान पर बीसों रङ्ग विरङ्ग की बोतलें और सजावट का सामान, बड़ी ऊँचाई तक चुना हुआ चला गया था। कपड़े की छत लगाई थी, जिस में छोटे-छोटे फानूस लटके हुए थे। बहुत-सी तलवारें चारों ओर लगी थीं। पानवाड़ी साहब के साथ में एक छड़ी थी, जिसे वे हर ऐरे-गैरे लड़के को रसीद करते थे, जो उनके मचान के खम्भे के पास आ जाता था। हमको वह बहुत बुरा मालूम हुआ, और हमने उनसे कहा कि ऐसा क्यों करते हो, तो उन्होंने कहा, कि साइब समय नहीं था। यह बाँस का मोटा खंभा, जिस पर कि मचान रुका हुआ है, जमीन पर योंही रुका हुआ है, और मुझे डर है कि कहीं धक्का लग कर सारी दूकान का दूकान नीचे न आ पड़े। हमने कहा कि यह तो जमीन में गड़ा हुआ है, भला कैसे गिरेगा ? उन्होंने कहा कि साहब गड्ढा खोदने का समय ही नहीं मिला। यह योंही रक्खा हुआ है, और फिर खूबी यह कि मचान के तख्ते में बँवा भी नहीं है, इसलिए मुझको बहुत डर है।

अब पान खाकर हमने जब दोस्तों से सलाह की, कि भाई बोलो क्या राय है ? इस पान वाले की दूकान क्यों न गिराई जाय ? तब इस पर हमारे किसी साथी ने हामी न भरी। दूकान क्या थी, पूरा ताजिया था। मचान पर आराम और ठाट-बाट के इतने सामान थे, कि तिल धरने की जगह नहीं थी, और भीड़ यहाँ इतनी थी कि पकड़ा जाना निश्चय था; किन्तु हमने कहा कि चाहे कुछ भी हो, हम इस काम को अवश्य करेंगे। हमारे साथियों ने कानों पर हाथ रक्खे। हमने भागने का रास्ता इत्यादि बड़े ध्यान से देखा, और घूम-फिरकर उस समय पहुँचे, जहाँ हाते की छोटी-सी कच्ची दीवाल थी। यह जगह

अलग-सी थी। हमने साथियों के साथ दो-तीन घंटे सैर की, और फिर अपने काम की ओर ध्यान दिया। घूमते फिरते दूकान के पास आकर हमने हिम्मत करके भीड़ के दबाव में खंभे से लग कर जब ढण्डे को घसीटा, तब एक जोर का शोर गुल हुआ, और दूकान छत के सजावट के सामान, पान वाले, और बोतलों के साथ नीचे आ पड़ी। कस्थे और चूने की कुलियाँ सब एक हो गई, और गजब यह हुआ, कि वह बरतन भी गिरा, जिसमें पान वाला पैसे रखता जा रहा था। पैसे जब भीड़ में गिरे, लोगों ने हाथ लगाना शुरू कर दिया। हमको इसमें भागने का अवसर मिल गया, और इस शोर-गुल में हम अपने दोस्तों सहित दीवाल फाँड़कर गली में कूद कर इस बुरी तरह भागे, कि न जाने कहाँ आकर निकले। हमको पड़े जाने का बहुत ही डर था, क्योंकि दरवाजे पर जो कानिसदेबुल था, उसने हमको शरारत करते हुए कदाचित् देख लिया, और आश्चर्य नहीं कि हम पकड़ लिए जान, यदि कहीं दूकान न लुटने लगी होती! रात काफ़ हो चुकी थी। अगर हम नहीं मालूम किस जगह थे, जहाँ हृद से अधिक सन्नाटा था। लोग जगह-जगह चारपाइयों पर सड़क के किनारे सा रहे थे। एक लाला एक बीच मोड़ पर नंगे बदन पलंग पर इस तरह तोंद फैलाये लेटे हुए थे, कि हमको लाचार होकर अपना सिगरेट, जहाँ खतम होने के करीब था, उनके पेट पर रख देना पड़ा। वे ऐसे तड़पकर पेट पीटते हुए उठे, कि हमको मजा ही आ गया और हम भाग कर दूसरी जगह पहुँचे। कुछ आगे पहुँच कर हमने एक चारपाई सोने वाले के सहित उलटी, और घर लौटने से पहले हमने एक और नंगे बदन सोने वाले के पेट पर जलता हुआ सिगरेट रख कर बहुत अच्छा तमाशा देखा। अधिक रात बीते घर लौटे।

चूँकि सबेरे हम घर से छुट्टी माँगकर नहीं गये थे, इसलिए दूसरे दिन केवल यही जुर्ना हमारे ऊपर लगाया गया था कि दिनभर क्यों गायब रहे ? इसके बदले में हमारा दिन का खाना बन्द किया गया; और हमें विवश होकर अपने पण्डित दोस्त के यहाँ खाना खाना पड़ा ।

दूसरा परिच्छेद

शरीर लड़की

हम एन्ट्रेस में पढ़ रहे थे और एक कौमी स्कूल के बोर्डिंग में रहते थे । बोर्डिंग से कुछ ही दूर पर एक मकान था जो बोर्डिंग से स्कूल और हाकी खेलने के फील्ड में जाने के रास्ते में पड़ता था । इस मकान में एक सय्यद साहब रहते थे, जो कचहरी में नौकर थे । सड़क से कुछ हट कर मकान की एक खिड़की थी जिसमें लोहे के छड़ लगे थे और किवाड़ भी लगे थे । ये किवाड़ हमेशा बन्द रहते । एक दिन की बात है कि हम उस खिड़की के नीचे खड़े होकर अपने एक दोस्त से बातें कर रहे थे; कि हमको खिड़की के उस ओर कुछ आइट मालूम हुई । हमने ध्यान से देखा तो एक सूराख से एक आँख का भाग दिखाई पड़ा । ऐसा मालूम होता था कि कोई झाँक रहा है । हम भी उस ओर देखने लगे कि आँख उस सूराख के सामने से छिप गई । हमको जो शरारत सूझी, तो हमने गली को सूनी पाकर अपने दोस्त का सहारा लेकर उसी सूराख से अपनी भी

आँख लगा दी, किंतु अब वहाँ वह न थी। सूरख में से मकान के भीतर का भाग साफ-साफ दिखाई पड़ा। यह खिड़की दालान में थी। दालान के बीच में एक नवजवान लड़की खड़ी उस सूरख की ओर देख रही थी। यह लड़की ऐसी थी कि हमको बहुत अच्छी मालूम हुई और हम उसको देख रहे थे। ऐसा मालूम होता था, कि उसने समझ लिया कि हम सूरख में से झाँक रहे हैं। अतः वह सामने से हट गई। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि फिर सामने आये। आँख खोले हुये देख ही रहे थे कि उसी छोटे सूरख पर किसी ने मुट्ठी भर कर धूल भोंक दी जो सब की सब आँख में पड़ी और हम बेचैन होकर गिर पड़े। हमारे दोस्त जो चश्मा लगाये हुये थे, उन्होंने जब पञ्जों के बल खड़े होकर देखा, तब उनके साथ भी यही व्यवहार हुआ, और उन्होंने देख लिया कि यह शरारत उसी लड़की की थी; किन्तु चूँकि वह चश्मा लगाये हुये थे, अतः उनकी आँख के भीतर कुछ न पड़ा। हमारी आँख दिन भर गड़ती रही, और हमसे क्लास में पढ़ा न गया। यद्यपि उस शरीर लड़की पर बहुत ही क्रोध आ रहा था, किन्तु साथ ही हमको वह पसन्द भी थी, और विशेषतया उसका वह स्वाभाविक ढङ्ग।

लौटते समय हमने फिर झाँका और उसने फिर हमारी आँख में मिट्टी डालने की कोशिश की, किंतु हम सावधान थे और बच गये। ऐसा मालूम होता था कि स्कूल की घंटी की आवाज सुनकर वह खिड़की के पास आ गई थी। अब भविष्य के लिए हमने दैनिक नियम बना लिया, कि अवश्य-अवश्य सूरख में से झाँकते, और आँख में धूल डलवाते। जब यह प्रतिदिन का नियम हो गया, तब हमने केवल इसीलिये तीन माने का चश्मा खरीद लिया, किन्तु उसको इस बात का पता

लग गया। क्योंकि एक दिन उस चुलबुली ने हमारी आँख में छतरी की लोहे की लम्बी सलाख इस तरह भोंक दी, कि हम अन्धे होते-होते बचे और हमारे चश्में का शीशा फूट गया। किन्तु हम भी बाज न आये। उसने हमारे इस हठ को देखकर एक दिन धीरे से जैसे निज से कहा, “आखें फोड़े बिना न मानूँगी।” हमने क्रोध में आकर कहा कि “हम तुमको देखने से बाज न आयेंगे।” इस लड़की से यह हमारी पहली बात-चीत हुई।

२

हमारे घर से हलुये का पारसल आया हुआ था और हम जेब में डाले हुये दिन भर खाते रहे। नियमानुसार हमने आकर भाँका और उसने हमारी आँख में धूल भोंकी। हमने जवाब में कहा, “ले हलुआ खा।” यह कह कर हलुये का टुकड़ा जो मुलायम था, सूरुख के ऊपर रखकर जोर से दबा दिया। सूरुख बिलकुल गोल न था, किन्तु कम से कम और ज्यादा से ज्यादा दुअन्नी बराबर था। अतः काफी हलुआ पहुँच गया। हम थोड़ी देर बाद चले आये। नहीं पता, उसने हलुआ खाया या नहीं।

दूसरे दिन जब हम पहुँचे, और भाँककर देखा तब कोई न था। हमने खिड़की पर हाथ मारा तो क्या देखा, कि लपकी हुई आ रही है, और झट से उसने मुटठी भर राख जमीन से उठाई। हम भी होशियार हो गये, और बार खाली गया। शीघ्र ही हमको सूरुख से कोई सफेद चीज पतली सी निकलती हुई मालूम हुई। हमने पकड़ कर जो घसीटा, तो खोये की लम्बी-लम्बी बत्ती सी थी। हमने झट चक्का और उसको

पेड़े के स्वाद का पाया। हमने कहा, “इससे अच्छा तो हमारा हलुआ ही था।” लड़की ने कहा, “किसने बनाया था।” हमने झट कहा, “हमारी अम्माजान ने बनाया था। घर से आया था।” तीन दिन बाद फिर उसी सूरख से एक दिन उसी ढङ्ग की खोये की लम्बी सी बत्ती निकली, और हमने लेकर झट मुँह में रख ली। दो ही तीन दाँत चलाये होंगे, कि गले का भीतरी भाग तक कड़ुआ हो गया, और हमको थूकना पड़ा। उस चुलबुली लड़की ने उसमें कुनैन मिलाकर बेवकूफ बना दिया। कुछ दिनों तक इसी प्रकार नई-नई भेंटों का हेर फेर होता रहा। किन्तु उस जालिम की आँख में धूल डालने की आदत न गई। एक दिन जब हम आये, तब खिड़की की कुण्डी खुली, और किवाड़ थोसा-सा खुला, और उसके बीच में से खीर का एक प्यला बाहर निकला। हमने झट ले लिया, और चखते हुये बोडिङ्ग चले आये। हमारी इस अनोखी दोस्ती का पता किसी को न था और काफी दिन तक इसी तरह हमारा मिलना-जुलना जारी रहा। एक दिन हमने पूछा, “क्या तुम्हारे घर में कोई नहीं है?” तो उसने कहा, “बस, बीमार माँ के अलावा कोई नहीं है।” हम अपना नाम पहले ही उसको बता चुके थे, किन्तु उसने अपना नाम हमें न बताया था। कुछ दिनों बाद हमारे घर से मेवे का हलुआ आया, और हमने सोचा कि हम उस को अवश्य खिलायेंगे। अतः हमने उससे खिड़का, खुलवाकर एक कागज में लपेट कर रख दिया, जिसे उसने खुशी के साथ स्वीकार कर लिया।

३

हमारा उससे पान-के लिए बड़ा तकाजा रहता था। एक दिन उसने कहा कि “हम तुमको पान खिलायेंगे।” अतः बादे

के मुताबिक उसने खिड़की खोली। सामने हमको कुछ दिखाई न पड़ा। हमने भीतर हाथ फैला दिया, और उसने हाथ पर पान रख दिया। हमने सलाम करके खा लिया, कि इतने में उसने कहा, कि “इलायची खाइयेगा।” हमने “नेकी और पूछ पूछ” कहकर हाथ फिर भीतर डाल दिया, किन्तु इस बार उस जालिम ने हमारी हथेली पर एक दहकता हुआ अंगार रख दिया। हम व्याकुल हो गये, और तड़प उठे, और हाथ भट बाहर निकाल कर भटका। उसका हँसी के मारे बुरा हाल था, और यहाँ तकलीफ के मारे आँसू निकल पड़े। क्योंकि वह ऐसा दहकता हुआ था, कि हथेली के चमड़े से चिपट कर रह गया था, और दो-तीन भटके देने पर गिरा था। दो दिन हम क्रोध के मारे न आये, किन्तु तीसरे दिन हमारा क्रोध जाता रहा। हम फिर आये, तो उस शरीर लड़की ने हमसे फिर कहा, कि “इलायती खाइयेगा।” किन्तु इस बार हमको गुस्सा न आ कर हँसी आई। काफी दिन तक हमारी मुलाकात इसी प्रकार जारी रही, किन्तु कभी हमने इस प्रकार की हँसी-दिल्लगी को छोड़कर और कोई बात न की, और न उसको कोई पत्र लिखा। हाँ, यह अवश्य रोज लगभग कहते थे कि, “तू हमारी कौन है।” चूँकि इसका उसके पास कोई उचित जवाब न था, इसलिये वह कभी कुछ कह देती थी, और कभी कुछ कह देती। किन्तु प्रायः यह कहा करती थी, कि तेरी बहन हूँ, जिसका हम तीव्र विरोध करके कहते कि बहन नहीं, बल्कि कुछ और हो।

एक दिन हमारी सहेली ने हमसे कहा, कि “देखो तुम्हारे साथी भी कितने कमीने हैं।” यह कहते हुए उसने कागज की एक बत्ती सूराल ख से बाहर की। हमने उसको लेकर पढ़ा तो हमको बड़ा रस हुआ। यह हमारे स्कूल के एक लड़के का पत्र

था, जिसमें दुनिया भर का प्रेम का हात और रुपये-पैसे के लालच के किस्से लिखे हुये थे। हमने कहा कि हम इसके हर-गिज जिम्मेदार नहीं। उसने कहा, “यदि कहो तो मैं इसको कुछ सजा दूँ और उल्लू बनाऊँ।” हमने सहमति दी। हमसे उसने कहा, कि तुम मेरी ओर से अपना अच्छर बदल कर एक पत्र लिख लाओ। उस पत्र में दूसरी बातों के अलावा यह अवश्य लिखना, कि यदि आप मुझको इस समय दस रुपये कर्ज दे सकेंगे, तो कृतज्ञ हूँगी।” हम बोर्डिङ्ग आये और हमने बहुत हा विचार पूर्ण शब्दों में पत्र के लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुए दस रुपये की आवश्यकता प्रकट की, और नीचे नाम इत्यादि लिखने वाली का न लिखा। बल्कि केवल लफ्ज ‘फकत’ लिख दिया। हमने जाकर पत्र सूराख से अपनी साथिनी को दिया। उसने पढ़कर बहुत पसन्द किया, और कहा, कि इसको दरवाजे की चौखट के पास ईंट से दबाकर रख दो, जैसा कि उन्होंने अपने पत्र में लिखा था। उन्होंने चालाकी, या बेवकूफी से अपना नाम नहीं लिखा था, किन्तु पत्र की इशारत से पता चलता था, कि हमारे साथी हैं। क्योंकि बोर्डिङ्ग और स्कूल की चर्चा थी। हम इस फिक्र में थे कि किसी प्रकार हमको नाम मालूम हो तो अच्छा है, और इसी लिये हमने वह पत्र अपने पास रख लिया कि कदाचित् लिखावट से हम नाम का कुछ पता लगाने में सफल हो जायें।

तीसरे दिन हमारे दोस्त ने हमको खिड़की से दस रुपये का नोट दिया, और कहा, कि “उल्लू फँस गया।” हमने कहा, हमको नोट नहीं चाहिए। इसका जवाब हमको यह मिला, कि इसको रख लो, मैं नहीं रक्खूँगी। हमने नोट रख लिया, और

परिणामतः हमने और हमारे दोस्त ने बड़े आनन्द से महीने भर तक मेवे खाये ।

इस बीच में हमने कोशिश करके यह भी पता लगाया कि हमारी सहेली के बेवकूफ प्रेमी कौन हैं । हमने उनको अपनी शरीर सहेली से षड्यंत्र कराके इस बुरी तरह लूटा कि वे बोर्डिङ्ग के बहुत से लड़कों के कर्जदार हो गये और इस तरह कि प्रेम को विदा करने पर लाचार हो गये ।

४

हालाँकि इस लड़की की और हमारी बड़ी गहरी दोस्ती हो गई थी, किन्तु वह हमारे साथ शराबत करने से न चूकती थी । एक दिन तो उसने हमारी उँगली में, जो हमने शराबतन्सूराख में डाल दी थी, ऐसा काटा कि उसमें दाँतों के निशान बन गये, और वह सूज गई, और फिर यह जुल्म था, कि तीसरे दिन जब हम नाराज होकर फिर लौटकर उस जालिम को उँगली दिखाने आये, तब उसने उसमें इस प्रकार सुई भोंक दी, कि हमने जोर से जो हाथ भटका, तो सुई की नोक उँगली में दूढ़ कर रह गई । हम जल कर लौट आये और वह पहले ही की भाँति हँसती हुई चली आई । हमारी उँगली में सख्त दर्द हुआ, और शाम तक सूज आई । रात भर हम तड़पते रहे, और उस जालिम को दुआयें देते रहे । तीसरे दिन ऐसा बुरा हाल हुआ, कि उँगली बिलकुल फोड़ा हो गई । एक दिन हम इसी बीच में गये, और अपना हाल सुनाया, किंतु उसके दिल पर कुछ असर न हुआ । उसने यही कहा, कि “अच्छा हुआ ।” नौबत यहाँ तक पहुँची, कि हमारी उँगली पक गई और चीरी जाने को हुई । अस्पताल जाते समय हम यह कहते गये कि तूने हमारी उँगली का यह हाल कर दिया है । हम कभी अब तेरे पास न आयेंगे और यह

कहकर उँगली खोल कर जो दिखाई, तो वह घबड़ाई, और कहने लगी, कि “माफ करना, मुझको नहीं मालूम था कि तुम्हारी उँगली का यह हाल है।” किन्तु हम यह कह कर चले आये कि “हम अब तुम्हारे पास न आयेंगे।”

खुलासा यह कि हमारी उँगली पन्द्रह-बीस दिन में अच्छी हुई, और इस बीच में हम खिड़की के पास तक न गये। दो एक बार जब हम उधर से निकले, तब उसने हमको अप्रसन्न करने के लिए खिड़की पर हाथ भी मारा; किन्तु हम चूँकि वास्तव में नाराज थे, हमने कुछ भी परवाह न की। एक दिन हम जा रहे थे कि सूराल में से कागज की बत्ती दिखाई पड़ी। हम लेते हुए चले गये। यह पहला पत्र था, जो उसने मुझको लिखा था, इसमें आदाब-अलकाब इत्यादि कुछ भी न थे। केवल यह लिखा था कि “माफ कर दो। भविष्य में सुई कभी इस प्रकार न चुभोऊँगी कि उँगली पके, बल्कि धीरे से चुभोऊँगी।” हमको शरारत से भरी हुई इस दरखवास्त को पढ़कर हँसी आ गई। खुलासा हाल यह कि हम पहुँचें, और अपनी उँगली, उस शैतान को दिखाने के लिये, सूराल में डाली। उसने देख-भालकर फिर सुई उसमें चुभो दी। किन्तु वादे के मुताबिक इस तरह धीरे से चुभोई, कि हमको अधिक कष्ट न हुआ। किन्तु उसकी शरारत का कायल हो जाना पड़ा। हमारी और उसकी दोस्ती को हद बस यहीं तक थी कि हम अपने घर के किसी जब वह पूछती, तब बताया करते, या वह स्वयं अपने घर की बातें बताया करती। खिड़की चूँकि ऐसे स्थान में थी, जो सड़क से कुछ अलग स्थित था, और सुनसान सी जगह थी, अतएव हमें हमेशा काफ़ी मौका मिलता था कि खूब बातें करें। बाप की चूँकि इकलौती लड़की

थी, इसलिए बाप उसको बहुत प्यार करता था और वह अधिकतर अपने बाप ही के किस्से सुनाया करती थी।

हमारे इम्तहान का समय करीब आया तो हमारे लिए उसने बड़-दुआयें माँगी, जिससे कि हम फेल होकर यही रहें। अन्त में वह दिन आया कि हम इम्तहान देकर जायें, और पास होने पर कदाचित् इस शहर में कभी न आयें। हमने उसको जब 'खुदा हाफिज' कहा, तब उसने प्रभावित होकर हमसे केवल इतना कहा, कि "हमारी शरारतों को भूल जाना। किन्तु हमको न भूलना।" हम चले गये, किन्तु हमको यह वाक्य याद रहा।

५

जब हम पास हो गये, तब अलीगढ़ जाने का निश्चय हुआ। कालिज में दाखिले से पन्द्रह दिन पहले ही हम चल दिये। क्योंकि हमको हेडमास्टर साहब से सर्टीफिकेट लेना था, कि हम बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं, और होनहार और अच्छी चाल-ढाल के लड़के हैं। जिस दिन हम आये, उसी दिन खिलाड़ी के पास पहुँचे और खिड़की पर हाथ मारकर अपने दोस्त को बुलाकर सलाम किया। हमारी सखी बहुत प्रसन्न हुई और उसने कहा कि "इतने दिन बाद आये हो, जरा उँगली तो लाओ जिससे मैं तुमको सजा दूँ।" हमने उँगली सूराख में डाल दी, किन्तु चू कि उसके पास उस समय सुई इत्यादि न थी, उसने केवल चुटकी पर सन्तोष किया। थोड़ी देर तक बात करते रहे। चलते समय उसने हमसे विचित्र ढंग से यह कहा कि "मैंने आज तक तुमसे किसी काम के लिए नहीं कहा, किन्तु अब मेरा एक काम है।" मैंने कहा, "बह क्या" तो उसने कहा, "शाम को आना।" हम पहुँचे तो उसने सूराख में

से एक रुक्का दिया। हमने जब रुक्के को पढ़ा, तब उसमें संक्षेप रूप में यह लिखा था, कि “जज साहब की कचहरी में जहाँ उसके बाप काम करते हैं, जाकर चुपके से किसी प्रकार मुंशी हामिद अली को देख आओ और मुझको स्पष्ट बताओ कि वे कैसे आदमी हैं।” हम कुछ पूछें, उसके पहले ही वह खिड़की के पास जा चुकी थी, जो हमको बहुत ही विचित्र मालूम हुआ। क्योंकि हम जब तक चले न जाते, वह कभी नहीं जाती थी। हम विचित्र हैरानी में थे, कि “इलाही, माजरा क्या है।” पहली बार हमने अब कमजोरी अनुभव की।

दूसरे दिन हम जज की कचहरी पहुँचे और पता लगाकर मालूम किया, कि ये हजरत मुंशी हामिद अली कौन हैं? अजीब रंग-ढंग के आदमी थे। हमने देखा कि मानों चिड़ी का बादशाह बैठा है, जिसकी दाढ़ी बुरे प्रकार के खिजाब के कारण विभिन्न रङ्ग उपस्थित कर रही है। चेहरे पर झुर्रियाँ ऐसी पड़ी हैं, कि प्याज का भ्रम होता है। हम दरवाजे पर खड़े देख ही रहे थे कि ये हजरत खाँसते हुये बाहर निकले, और हमारी जानकारी में इतनी और वृद्धि हुई कि इन हजरत को हमे की बीमारी भी है। हम देख भाल कर चले आये, और ये सब बातें अपनी प्यारी सखी को बताकर कारण पूछा। शरारतभरी बातें न करके वह चुप थी। हम आश्चर्य में थे, कि उसने हमसे कहा, कि “मुझको तुम इस मुसीबत से बचाओ।” हमको सन्देह तो पहले ही हो गया था, कि कुछ ढाल में काला है। अब हम वास्तविक बात समझ गये। हालाँकि हमको कोई कारण न था, कि दुख हो; किन्तु न जाने क्यों हम अपने आप अधिक चिन्तित हो गये, और हमने भी हँसी-दिल्लगी को विदा करके बहुत ही गम्भीरता से पूछा,

कि 'क्या सभी बातें' ते हो चुकी हैं।' इस पर उसने कहा, कि "तारीख तक नियत हो गयी है और अब केवल डेढ़ महीना रह गया है।' हम वचन देकर आये कि यदि हमारी जान में जान है, तो हम तुमको इस मुसीबत से बचायेंगे, किन्तु चलते समय शरारत के उद्देश्य से हमने इतना अवश्य कह दिया है कि 'चिड़ी के बादशाह तुमको सलाम कहते थे।' किन्तु वहाँ तो मजाक ही विदा हो गया था।

हम घर आये तो विचित्र उधेड़ बुन में थे। बुद्धि काम न करती थी कि आखिर क्या करें। एक अनजान शहर, जहाँ हम विद्यार्थी की हैसियत से रहते थे, और न किसी को पहचानते थे। दूसरी बार जब हम मिलने आये, तब हमने स्वीकार किया कि हमारी बुद्धि काम नहीं करती कि किस प्रकार मदद करें। तीसरे दिन परेशान होकर हमने यह सलाह दी कि तुम अपने बाप से क्यों न साफ-साफ किसी से कहलवा दो। किन्तु यह कहना भी मानों जुझ था। उसने कहा, "मैं मरना अच्छा समझती हूँ।" उसने चलते समय हमसे यह कहा कि 'तुम यदि कुछ न कर सको तो इतना अवश्य कर देना कि जब जाने लगे, तब मुझको बाजार से जहर ला देना।' मैं सन्नाटे में आ गया, कि इलाही, क्या करूँ, जो उसको इस मुसीबत से निकालूँ। जब हमारे जाने में थोड़े ही दिन रह गये, तब हमको एक उपाय सूझा।

६

हमने अपना सबसे अच्छा सूट निकाला, और कालर और टाई से दुरुस्त होकर जेन्टिलमैन बनकर दूसरे ही दिन सबेरे जज साहब, मिस्टर क्लार्क, के पास पहुँचे। जज साहब ने नाश्ते के बाद बुलाया। हम बड़े कायदे के साथ सलाम करके बैठ गये,

और हमने जज साहब से कहा “कि हम आपके पास एक ऐसे काम से आये हैं, जो आपको करना पड़ेगा और आपका कर्तव्य है।” जज साहब ने आश्चर्य में आकर पूछा, तो हमने उनसे यह कहा, कि “आपके दफ्तर में कोई मुंशी हामिद अली हैं। आप उनको जानते हैं।” जज साहब ने कहा, “हम जानते हैं,” और उनकी हुलिया बताया। हमने कहा, “वे हजरत आप हो के दफ्तर के सय्यद जामिन अली को पन्द्रह वर्षीया लड़की से शादी करना चाहते हैं। आपको यह शादी हर प्रकार से अपना प्रभाव डालकर रुकवा देनी चाहिए।” जज साहब ने आश्चर्य में आकर हमसे पूछा, कि “तुम कौन हो, जो इस सम्बन्ध में दखल देते हो।” इसका जवाब हमने यह दिया कि हेडमास्टर साहब का दिया हुआ चाल-चलन का सार्टीफिकेट पेश किया और फिर कहा, हम इस मामले में पड़ने वाले कोई भी नहीं। किन्तु सिर्फ कौम की बुरी हालत को देखते हुए हम आपके पास आये हैं। जज साहब ने हमारी पीठ ठाँकी और हमसे कहा, “कल हमारे पास आना।”

मुन्शी हामिद अली साहब, चूँकि छः महीने बाद हो, पेंशन पाने वाले थे, और स्वयं दूल्हा को हैसियत रखते थे, अतएव उन्होंने तो जज साहब को साफ जवाब दे दिया, कि “साहब ! इस मालिले से आपको क्या मतलब ?” किन्तु सय्यद जामिन अली साहब जो उम्र में अपने अनर्वाचित दामाद से बहुत छोटे थे, और उनको अभी बहुत दिन तक नौकरी करनी थी और जज साहब के जरा कलम हिला देने से बर्खास्त हो सकते थे, लाचार हो गये। बड़ी बुरी तरह डाँटे गये। जज साहब ने उनसे साफ कह दिया कि यदि तुमने शादी कर दी तो मैं तुमको एक कलम बर्खास्त कर दूंगा। सय्यद साहब ने यह उज्र किया

कि साहब मैं लड़की की शादी जल्द करना चाहता हूँ, क्योंकि वह जवान हो गई है, और यह सम्बन्ध मैं केवल इसलिये कर रहा हूँ कि लड़की आराम से रहेगी। क्योंकि मुन्शी हमिद अली साहब के पास जायदादें हैं, और दूसरी जगह मुझको कोई दिखाई नहीं पड़ती। जज साहब ने उसका जवाब दिया कि 'हम तुम्हारी लड़की की शादी करा देंगे।'

दूसरे दिन हम जज साहब के बँगले पर हाजिर हुए, और यह सुनकर हमारी प्रसन्नता की सीमा न रही कि हमारे मन की मुराद पूरी हुई। जज साहब ने फिर स्वयं ही हँसकर पूछा कि "तुम उस लड़की के साथ शादी करने के लिए तैयार हो या नहीं।" न जाने क्यों हमारा दिल फड़कने लगा। हमने कुछ रुक कर कहा कि साहब हम अभी पढ़ते हैं। हमारे बाप भी नहीं हैं, और हम गरीब आदमी हैं। जज साहब को मालूम हुआ, कि हमारे स्वर्गीय पिता अच्छे सरकारी पद पर नौकर थे, और पेन्शन लेने से पहले ही मर गये और हम अपने बाप के अकेले लड़के हैं, तब जज साहब ने कहा कि "तुम नौकरी क्यों नहीं कर लेते।" हमने कहा, "हम नौकरी करेंगे, या जो कुछ भी करेंगे, अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद करेंगे। किन्तु वैसे हमको इस लड़की से शादी करने में कोई इन्कार नहीं। हमको केवल यही चिन्ता है, कि छोटी सी जायदाद की आमदनी से हमारी और हमारी माँ ही की गुजर कठिनाई से हो रही है बीबी को कहाँ से खिलायेंगे।" इसका जवाब जज साहब ने दिया कि तुमको इससे कुछ बहस नहीं। केवल यह बताओ कि "तुम लड़की से शादी करने को तैयार हो या नहीं।" हमने स्वीकार किया। जज साहब ने हमको रात में बँगले पर बुलाया। वहाँ हम जब पहुँचे, तब सय्यद साहब पहले ही से मौजूद थे। सय्यद

साहब की खिदमत में जज साहब ने हमको पेश करके कहा, कि “बोलो, यह लड़का तुमको पसन्द है, या नहीं।” सय्यद साहब की भला मजाल थी कि चूँ भी करते। हम जबरन व कहरन पसन्द किये गये। हमसे जज साहब ने कहा, तुम जाओ। अतः हम हाँफते-काँपते लौटकर सीधे खिड़की के पास आये और हमने सवेरे जो खुशखबरी सुनाई थी, उसे प्रमाणित करते हुए कहा कि “अब हम तुमसे शादी करने वाले हो रहे हैं।” उसने इसको मजाक ही समझा, और जवाब में यह कहा, कि “कदाचित् तुम्हारी शामत आने वाली है।” इस पर हमने कहा, कि “लगभग बहुत जल्द हम स्वयं तुम्हारी उल्टी शामत बुलाने वाले हैं।” इमने बहुत कुछ गम्भीर होकर कहा कि हम दिल्लगी नहीं करते, बल्कि वास्तव में हमारी शादी तुम से निश्चित हो गई है; किन्तु उसे विश्वास न हुआ। क्योंकि न तो वह भैंसी और न उसने शरारत से भरी हुई बातें बन्द की।

७

हम बोर्डिङ्ग ही में ठहरे हुए थे कि हमारे पास हमारे कृपालु हेड मास्टर साहब आए; जिनको जज साहब ने बुलाया था, और वे उनसे मिलकर आ रहे थे। जब बातचीत हुई, तब हमने उनसे साफ कह दिया कि बिना अपनी बुजुर्ग माँ से मिले हुए और उसकी इच्छा के कुछ नहीं कर सकने। किन्तु दूसरे ही दिन हेड मास्टर साहब ने हमारे स्वर्गीय पिता के एक दोस्त को, जो यहाँ डिप्टी कलक्टर थे, ला खड़ा किया; और उन्होंने उसी दिन कुछ गड़बड़ करके ऐसा तार दिया कि हमारी अम्मा जान दूसरे दिन ही उनके घर पर मौजूद थीं और दल्हा बनाये जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। इनसे और हमारी

अम्मा जान से कहा गया कि इस विवाह के करने में हमारे भविष्य की अच्छाइयाँ हैं ।

चौथे दिन हमारा निकाह उस शरीर लड़की से हो गया और निश्चय यह हुआ कि विदाई तब होगी जब हम पढ़ाई खतम कर लेंगे । हम को मालूम हुआ कि जज साहब ने हमारी बीबी से चाचा और भतीजी का सम्बन्ध जोड़कर उसको बीस रुपया माहवार देने का विचार किया है । हमारी प्रतिष्ठा इस बात को कभी भी स्वीकार न करती; किन्तु चूँकि यह मामला हमारे ससुर साहब और जज साहब के बीच का था, अतः हम कुछ न बोले ।

अब जरा विचार तो कीजिये कि निकाह के बाद जब हम खिड़की के पास पहुँचे, तब जवाब नदारद । बहुत कुछ हाथ मारा, खटखटाया, किन्तु बेफायदा । हम झूठमारी कर चले गये और चलते समय भी हमारी विवाहिता बाँबी हमसे बात करने न आई ।

किन्तु यह बेरहमी और खामोशी अधिक दिनों तक न रही । हम खिड़की बजाने के लिए चुपके से छुट्टियों में अली-गढ़ से भाग-भागकर आते थे और अपनी शरार बाँबी से मिल कर चले भी जाते थे । हमारे ससुर साहब या किसी दूसरे को पता भी न चलता था । हमारी बाँबी की शरारतें उसी प्रकार जारी हो गईं । हम कभी न भूलेंगे कि कैसी-कैसी खुशामदें करवाती थी । तब कहीं, और वह भी उंगली में अच्छा तरह सुई भोंकने के बाद अपना चुलबुलाती सूरत की बस एक झलक दिखाती थी ।

पढ़ाई खतम होने पर विदाई हो, इसकी जगह पर हमारी अम्मा जान हमारी बाँबी को डेढ़ साल बाद ही घर ले आई ।

जब हमसे हमारी बीबी की पहली मुलाकात हुई, तब भी वह शरारत से बाज न आई। हम जब कमरे में पहुँचे तब क्या देखते हैं कि लैम्प जल रहा है, और हमारी बीबी अपने आप को अच्छी तरह कपड़ों में लपेटे और सिर मुँह सब छिपाये पलंग पर बैठी है। हमने अपनी प्यारी बीबी के कन्धे पर हाथ रखकर हिलाकर कहा; “बन्दा परवर सलाम अलेकुम, कहिये, मिजाज अच्छा है।”

यह कहते हुए हमने रजाई घसीट कर अलग कर दी, किन्तु वह न बोली, और शर्म और लज्जा की सीमा बन गई। फिर हमने हँस के उद्देश्य से कहा, “कहिये, आपकी वे शरारतें क्या हुईं; क्या घा छोड़ आईं ?” यह कहकर जब हमने जवाब न पाया, तब हम पलंग पर बैठ गये, और हमने कहा, लाओ अपनी चुलबुली बीबी को जरा गले तो लगायें।” यह कह कर हमने उस शरीर को गले से लगाया ही था, कि रात में उसने ऐसी निष्ठुरता से सुई चुभोई कि हम व्याकुल होकर उछल ही तो पड़े। फिर इसके बाद उसने मुझसे मजाक न किया और यह सुई का अन्तिम मजाक था।

हमारी इस शरीर के साथ खूब निभी और आनन्द से निभ रही है, और यह केवल उसी का फल है, कि हमारी बीबी के नकली चाचा अर्थात् जन्म साहब ने हमको पढ़ाई खतम करने के बाद ही ऐसी नौकरी दिलवा दी, कि अब हम चैन करते हैं।

चूँकि हमारी कोर्टशिप की कहानी लोगों को मनोरञ्जक मालूम हुई, अतः हमने भी उसे बहुत ही संक्षेप के साथ पाठकों को भेंट की है।

तीसरा परिच्छेद

गलत फ़हमी

१

हम बीवी से सबेरे यह कहकर गये थे कि नौ-दस बजे तक लौट कर आ जायेंगे, किन्तु मछली का शिकार भी क्या बेकार चीज है। नौ बजे की जगह पर, गर्मियों की कड़ी धूप में, बारह बजे के बाद घर पहुँचे। शिकार में हमें उतनी ही सफलता मिली, जितनी आमतौर से मछली के शिकारियों को मिलता करती है। हैरान भी हुए, और कुछ न मिला। भूखे प्यासे, जलते-भुनते घर पहुँचे। नहा-धोकर कमरे से जब पहुँचे, तब नौकरानी ने कहा—‘बेगम साहिबा आपका इन्तज़ार करते-करत अभी सोई हैं।’ हम झट दूसरे कमरे में गये और खान खाया। हाथ धोकर सिगरेट सुलगाया और सीधे कमरे में पहुँचे। हमें ऐसा मालूम हुआ कि हम स्वर्ग में आगये। तीन ओर खस की टट्टियाँ लगी हुई थीं, और बिजली का पल्ला जोरों में चल रहा था। हमारी शरीर बीवी सो रही थी। हमने ध्यान से उसके पवित्र चेहरे को देखा। कुछ सोचा। सामने देवात रक्खी थी। कुछ और खयाल आया। अतः कलम को चली और से डुबाकर चेहरे को भयानक बना दिया, और उसके बाद हम भी अपने पलँग पर पड़ कर सो रहे। थके माँदे तो थे ही। ऐसे सोये कि तन-बदन का खयाल न रहा !

कुछ देर के बाद हमने मुँह पर ठंडक-सा अनुभव किया। आँख खुली तो बेगम साहिबा को शरारत करते हुए पाया।

अर्थात् बर्फ का टुकड़ा लेकर हमारे मुँह पर मल रही थीं। अपनी मूँछों का उनको पता भी न था। जरा सोचिये, यह पाक और भयानक चेहरा, और उस पर यह शरारत। हमें बेकाबू हँसी आई, जिसे हमने अच्छी तरह शाबाशी दी। उठकर हमने दरवाजा खोला। शाम होने को करीब थी। इतने में एक नौकरानी आई, और उसने जब अपनी स्वामिनी के भयानक चेहरे को देखा तब हँसती हुई भागी।

“क्यों हँसती है !” हमारी बेगम साहिबा ने नाराज होकर पूछा। किन्तु वह लौटकर न आई। गुस्से में मूँछें विचित्र बहार दे रही थीं।

इतने में दूसरी नौकरानी आई और दरवाजे पर पैर रखते ही उसने कहा:—

“क्या आप मुझे बुलाती हैं ?” यह कहकर उसने भी अपनी स्वामिनी का डरावना चेहरा देखा, और वह भी हँसी को रोकती हुई बाहर निकल गई।

हमारी बीबी ने कहा, “आज मालूम होता है, इनकी शामत आई है !”

हमने कहा, “आज हमें भी डर लग रहा है।” वह कुछ न समझी; और हमने इस हँसी में सम्मिलित होना व्यर्थ समझा और उठ कर बाहर चल दिये।

२

घण्टे भर बाद जब हम घर में आये तब मालूम हुआ कि बेगम साहिबा नहाकर निकली हैं और आइने वाली मेज पर कंधी कर रही हैं। हम कमरे के दरवाजे पर खड़े हो गये।

हमने देखा कि आदमी के कद के बराबर के आइने में देख-देखकर पंखे की हवा से बाल सुखाये जा रहे हैं। बाल उड़-उड़ कर हमारे लिए विचित्र भाव पैदा कर रहे थे, और हम उस सौंदर्य के प्रेमी बने हुए थे कि आइने में हमारी आँखें चार हुईं। मुड़कर हमारी ओर देखा, किन्तु शीघ्र ही फिर मुँह मोड़ लिया कि करीब पहुँचे, और जैसे ही आँख से आँख मिली तो क्रोध से भरी आँखें हमारी ओर डालीं, और व्यों ही मुश्कुराहट आई, तो उसको दबा कर और मस्तक पर शिकन डालकर चिड़चिड़ाहट के साथ कहा, 'इस प्रकार की हरकतें हमें पसन्द नहीं हैं।'

हमने कहा, "क्यों, क्या हुआ ?"

"ऐसे मजाक से क्या फायदा कि सभी नौकरानियाँ हँसती फिरे।"

"हमने कोई मजाक नहीं किया।" हमने खुशामद से कहा।

"तो फिर यह आखिर क्या था ?"

"आज हम अस्तुरा लेकर आदत के मुनाबिक बैठे थे, तब तुमने ही तो कहा था, कि हमें मुँछें बहुत पसन्द हैं। हमने दिल में सोचा की हमें तो पसन्द नहीं। क्योंकि हम प्रतिदिन उनको साफ कर डालते हैं। किन्तु चूँकि हमारी बीबी को पसन्द है, तो लाओ जरा उसकी मुँछें ही बना दें।"

यह सुनकर गुस्सा रफूचककर हो गया और बीबी ने हमारी शरारत को पसन्द करते हुए हँसकर कहा, "हमारा यह मतलब कब था.....मुँछें तुम रखो।"

हमने खुशामद के साथ कहा, "लादील बिला कूह, तुमने यदि पहले ही बता दिया होता, तो यह गलती ही क्यों करते।"

इधर-उधर मतलब की दो-तीन बातों के बाद हमने अपनी बीबी को एक गिलाम अनार का शर्बत पिलाया, और वह भी अपने हाथ से, और मजदूरी वसूल करने के बाद हमने कहा, “क्यों दोस्त, हमारा एक काम कर दोगे !”

“फिर तुनने उसी मरदानी बोली से मुझे सम्बोधित किया, क्या काम है !”

“हमारे एक हिन्दू दोस्त आ रहे हैं, उनके खाने का प्रबन्ध । प्रबन्ध खास, और यह कि अपने हाथ की कोई चीज उनको अवश्य खिलाना । ये भी वैसे ही दोस्त हैं कि जिनसे रात भर बातें की जानी चाहिये ।”

“आखिर तुम यह रात भर क्या बातें करते हो ?” बीबी ने खोदकर पूछा ।

“उनमें से अधिकतर तुम्हारी शरारतों की बातें करेंगे”— हमने हँसकर कहा ।

“यह गलत है । तुम बदचलन आदमियों से मिलते हो । आखिर बताओ तो सही, कि गुलाबचन्द से तुमको क्यों इतना प्रेम है ? वह आदमी, जो बाजारू औरतों में तुम्हें ले जाये, कभी भी मिलने योग्य नहीं ।”

“हम ठीक कहते हैं कि यह जो आ रहे हैं, उनसे तुम्हारी या उनको अपनी बीबी की बातें करने के अलावा और कुछ भी नहीं करेंगे । तुम स्वयं जानती हो कि यदि तुमसे हमें झूठ ही बोलना होता तो हम तुमसे कहते ही क्यों ?”

वे बोलों, “यह तो हम जानती हैं कि यदि तुम किसी रंडी के यहाँ जावोगे, तो हमसे अवश्य कह दोगे और यह भी मालूम है कि यार-दोस्तों के साथ जबरदस्ती चले जाते हो, किन्तु

आखिर उसका परिणाम क्या होगा ?”—बीबी ने कुछ दृढ़ता के साथ कहा ।

“कुछ नहीं, परिणाम क्या हो सकता है । तुम स्वयं जानती हो कि मैं तुम्हारा हूँ । चाहे मैं दिन-रात बाजारू औरतों में ही रहूँ, तब भी कोई अन्तर न होगा ।” इतना कहकर मैंने बीबी की ओर ध्यान से देखा और फिर कहा:—

“अच्छा, जैसा कहोगी, वैसा ही करेंगे । किन्तु इन दोस्त का हम हृद से ज्यादा आदर-सत्कार चाहते हैं ।”

३

रात का खाना हमने बाहर दोस्त के साथ कमरे में खाया । खाना खाकर हम अपने दोस्त सरदार सुन्दरसिंह से बैठे हुए बातें कर रहे थे । बगली की रोशनी चूँकि तेज थी, अतः हम कमरे के उस दरवाजे के पास बैठे हुए थे, जो सड़क की ओर खुलता था । इस कमरे के बीच के दरवाजे के सामने ही एक बड़ी आलमारी रक्खी थी, जिसमें आदमी के कद के बराबर का आइना लगा हुआ था ।

सहसा एक नौकरानी आई और उसने सिर डालकर झोंका ही था कि झट लौट गई । हम चूँकि सरदार साहब से बातें करने में लगे हुए थे, अतः उस ओर ध्यान न दिया । नौकर को बुलाकर पान लाने के लिए कहा और फिर बातों में लग गये ।

×

×

×

अब जरा भीतर का हाल सुनिये—

बीबी ने पान बनाकर नौकरानी से हाथ भेजे थे, कि इतने में वह हाँफती काँपती दौड़ी हुई आई । पान की थाली रख कर बोली “बेगम साहिबा, गजब हो गया ।”

“क्यों क्या, हुआ ?”—बीबी ने घबराकर पूछा ।

उसने कहा, “मैं जब पान लेकर पहुँची, तब मुझको कोई दिखाई पड़ा। मैंने सोचा कि कमरे में होगा। कमरे के दरवाजे पर पहुँची ही थी कि बेगम साहिबा, बस क्या बताऊँ, कि क्या देखा।”

“अरी कमबख्त, आखिर क्या देखा ?”

“कमरे में कोई औरत खड़ी थी। बस, मैं चले पैरों ही भागी।”

“भूठी कम्बख्त पागल है। औरत भला कहाँ से आई ?”

“यदि विश्वास न पड़े तो किसी दूसरे को भेजकर दिखा लीजिये।”

बीबी ने शीघ्र दूसरी नौकरानी को भेजा। वह भी उसी प्रकार दौड़ी आई और उसकी बात को सही बताया। सूत-शकल या कपड़े के बारे में कुछ विवरण हमारी बीबी को मालूम न हो सका। क्योंकि दोनों औरतें शीघ्र ही एक झलक दिखाकर भाग आई थीं।

उधर हम इस प्रकार बातों में लगे थे कि कुछ खबर न थी। दूसरी औरत जब फिर उसी प्रकार भाँक कर चली गई तब हमने नौकर को बुलाया कि पान लाओ।

नौकर पान लेने चला कि नौकरानी ने रास्ते ही में उसको पकड़ा कि चलो, बेगमसाहिबा बुलाती हैं। बेचारा नौकर कसमें खा रहा था कि बेगम साहिबा, कोई औरत नहीं है, किन्तु बेगम साहिबा को कैसे विश्वास होता, जब कि दो आँखें देखी गवाहियाँ मौजूद हों। खुलासा यह कि हम बुलाये गये।

हम सरदार साहब से इजाजत लेकर गये, तो बीबी को अलग टाइलती हुई पाया। हमने आवत के मुताबिक कन्धे पर हाथ रखकर कहा कि “दोस्त, क्या है ?”

कोई जवाब न देकर वे रुक गईं । हमने देखा तो चेहरा उदास और चिंतित था । पहले इसके कि हम कुछ कहें हमारा हाथ पकड़कर कहा, “मैंने कौन-सा अपराध किया है ? मुझसे क्यों नाराज हो गये ?” यह कहकर हमारी छाती पर सिर रख कर सिसकियाँ भरने लगीं । हम इसके लिए बिलकुल तैयार न थे । बबड़ाकर हमने कलेजे से लगाकर कहा—“खुदा के लिए कुछ कहो तो ।”

उसने आँसू पोंछते हुए कहा, “बाहर कमरे में यह औरत कौन बैठी है ?”

हम हँसी आई और हमने आश्चर्य-चकित होकर कहा, “तुम क्या बक रही हो ?”

“मैं बक नहीं रही हूँ, बल्कि सच कह रही हूँ ।” बीबी ने ग़ोर देकर कहा ।

“मालूम होता है, तुम्हारा दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा है ।”

“मेरा दिमाग बिलकुल ठीक काम कर रहा है ।”

हमारी बुद्धि चकरा गई थी, किन्तु हमने मुसकुराकर कहा, “मान लो यदि बैठी भी है तो तुम्हारी बत्ता से ।”

“खुदा के लिये कोई नुक़सान नहीं । जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा खुश खुश । जाओ, शौक से रात भर बाहर रहो । किन्तु मेरे दिल पर जो चोट लगी, वह इस बात पर कि आखिर बहाना करने से क्या फायदा ? पहले ही कह देते कि एक दोस्त रण्डी सहित आयेंगे और मैं रात भर बाहर रहूँगा ।” ये शब्द बीबी ने दर्दिले स्वर में कहे ।

“आखिर तुम्हें यह” इतना ही हम कहने पाये थे, कि बीच ही में बात काट दिया और फिर उसी प्रकार कहा—

“मैं उन औरतों में नहीं हूँ जो अपने शौहर को खाहमखाह तज़्ज़ करें। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम मेरे ही हो। चाहे बुरे आदमियों में बैठो चाहे नेक आदमियों में। मैं यदि तुमको रोकूँगी तो और उपायों से रोकूँगी न कि लड़कर। किन्तु दुख तो मुझे अपने भाग्य पर होता है कि तुमने मेरी इज्जत न की। मुझको बे-कूठ समझा और मुझमे सचसच न कहा। यह तो तुम्हारे दोस्त की रण्डी है। यदि कहीं खुदा न करे, तुम्हारी बुलाई होती तो क्या मैं उसकी या तुम्हारी सेवा न करती। खुदा न करे कि ऐसा हो, किन्तु यदि खुदा के लिए ऐसा हुआ, तो तुम मुझे स्थिर-वित्त पावोगे।” इतना कहने ही पाई थी कि उसकी आवाज विचारों के आवेग से घुट गई और फिर सिसकिबाँ लेकर रोना शुरू किया।

हम अधिक हैरानी में थे कि इलाही, माँजरा क्या है। बीबी को हमने गले लगा लिया और चुमकारा और संधे छत पर ले गये। वहाँ जब हमने सब किस्सा सुना, तब दङ्ग रह गये और दोनों नौकरानियों को बुलाया और हाल पूछने के बाद उनको जाने का हुक्म देकर बीबी से कहा—“मालूल होता है, तुम्हारी नौकरानियाँ झूठ नहीं बोलती हैं, किन्तु उनको कुछ धोखा हुआ है। हम तुमसे झूठ कभी भी नहीं बोले। और न बोलेंगे। हम सच कहते हैं और तुम विश्वास करो कि कोई औरत कमरे में नहीं है। कदाचित् उन्होंने किसी को कहीं और देखा है।”

‘मेरा मज़हब, दीन और ईमान सब तुम्हीं हो। खुदा के वास्ते जो तुम कहो वह सच है। मुझका पूरा विश्वास है कि वहाँ कोई और नहीं। केवल इस सबब से कि तुम ऐसा कहते हो।’ बीबी ने प्रगट रूप से यह खश होकर कहा।

हम सरदार साहब के पास आये और असाधारण देर का कारण बताया। हमारी बुद्धि काम न करती था कि इलाही, औरतों के दिमाग में यह क्या खलल आ गया, जो उनकी आँखों के सामने रण्डों की कल्पित तस्वीर आगई, बड़ो रात तक हम सरदार साहब से बातें करते रहे। विचार तो हमारा यही था कि हम बाहर हो सांयें। किन्तु रात की घटना के कारण हमने सोचा; कि हम अपनी बीबी से बातें कर लें तो अच्छा है।

४

हम छत पर पहुँचे तो बीबी को सोती हुई पाया। यह असम्भव था कि हममें कोई एक दूसरे को सोते देख पाये, और कुछ शरारत न करे। क्योंकि इस मामले में हमारी बीबी का दिल हर समय तैयार रहता था। हमने बिलकुल निश्चय कर लिया कि बीबी का मजाक उड़ाया जाय, अतः हमने पानी की दो-तीन बूँदें नाक में जब डाली, तब बाँवी हँसती, खाँसती और छींकती हुई उठी। बीबी ने कहा कि एक नौकरानी फिर गई थी, और फिर आकर उसने यही कहा था कि औरत कमरे में है।

“तो फिर तुमने क्या किया?” हमने आश्चर्य से पूछा।

“मैं करती क्या? खूब डाँटा कि तू भूठा है। किन्तु समझ में नहीं आता कि आखिर दोनों ने सलाह करके ऐसा झूठी बात क्यों गढ़ी? मुझसे तुमने कह दिया, बस काफी है। यदि मैं स्वयं भी आँखों से देख लूँ, तो भी तुम्हें भूठा न समझूँगी।”

हमने प्रभावित होकर बीबी से केवल इतना कहा कि “तुम बड़ी अच्छी हो।” हम दोनों कुछ देर तक यही बातें करते

रहे कि आखिर इन नौकरानियों को क्या सूझी, जो ऐसी बेजुब की बात कह दी और फिर उस पर अटल हैं। बीबी उसको निकालने को कहती थीं, किन्तु हमारा विचार यह अवश्य था कि वे किसी गलत-फहमी में पड़ी हुई हैं।

×

×

×

सरदार सुन्दर सिंह खूबसूरत जवान नहीं, बल्कि बहुत ही सुन्दर आकर्षक जवान थे। खुदा की शान है कि बुद्धि काम न करती थी कि उनको भी कैसा सौन्दर्य मिला था, लोगों की समझ ही में न आता था कि इनमें स्त्री-सौन्दर्य की वास्तविकता अन्तर्हित है, या पुरुष-सौन्दर्य की। गोरा चमकता हुआ रंग, शरीर बहुत ही कोमल और इकहरा। कद बहुत ही मुनासिब। आँखें, नाक, ओठ, दाँत, मतलब कि पूरा चेहरा इस तरह हलका और खूबसूरत कि जो देखता तारीफ करता। इन सभी बातों के अलावा कमर तक रेशम की भाँति मुलायम बाल उनके सौन्दर्य-संसार को परिपूर्ण करते थे, किन्तु उनकी दाढ़ी ! खुदा की पनाह, माशा अल्लाह ! डेढ़ बालिशत की दाढ़ी नहीं, बल्कि दाढ़ा था। यही एक ऐसी चीज थी जो उनके सौन्दर्य-संसार को दबाने और पराजित करने की असफल कोशिश करती थी। क्योंकि सब की मिली हुई राय यही थी कि इस तरह लम्बी दाढ़ी को भी इस उद्देश्य में कुछ भी सफलता नहीं प्राप्त होती। वे अपनी दाढ़ी लपेट कर रेशमी ढोरे से इस प्रकार बाँध लेते थे, कि यही मालूम होता था कि मामूली छोटी-छोटी दाढ़ी है। केवल उनकी दाढ़ी ही एक ऐसी चीज थी जो उनको एक खूबसूरत मर्द बना देती थी। फिर भी स्त्री-सौन्दर्य की वास्तविकता, जैसा कि हम कह चुके हैं, अन्तर्हित ही रहती थी। क्योंकि आपस के चार दोस्त

उनके स्त्री-सौन्दर्य की इतनी तारीफ करते थे, कि वे भेंप जाते थे; कहा करते थे, कि यदि कहीं मेरे दाढ़ी न होती तो मुझसे यार-दोस्तों के मजाक का जवाब ही देते न बन पड़ता ।

×

×

×

सच्चे हमारी आँख कुछ देर से खुली । उठकर हम बाहर पहुँचे । सरदार साहब नहाने के कमरे में थे । हम बरामदे में एक कुर्सी पर बैठे हुए थे, कि सरदार साहब नहाकर मुमकुराते हुए निकले । डेढ़ बालिशत की दाढ़ी इस खूबसूरत चेहरे पर विचित्र बहार दे रही थी । एक सफेद धोती साड़ी की भाँति बाँधे हुए थे और आधे ओढ़े हुए थे, जिससे सारा शरीर हाथों की कुड़नियों तक और सिर के अलावा खुजा हुआ था । उनके लम्बे और रेशमी बाल कमर तक लटक रहे थे । हमारी कुर्सी ही के पास मेज थी, जिस पर आइना रक्खा था । वे कुर्सी के बराबर आइने के सामने खड़े होकर बाल पोंछने लगे और कहने लगे कि “तुम अपनी बीवी से कब मुलाकात कराओगे ।”

हमने हँसते हुए और उनके बालों से खेलते हुए कहा, जो हमारे सामने ही लटक रहे थे, कि—“सरदार साहब, हमारा तो यह विचार था कि आप से कल ही मुलाकात करा दें, किन्तु अभाग्यवश यह विचार बदल देना पड़ा, और अब कदाचित् मुलाकात बिलकुल न करा सकें ।”

“भई ! यह क्यों ?” सरदार साहब ने अपने रेशमी बाल झटकते हुए विचित्र अदा के साथ कहा ।

रात की घटना आपको मालूम है । आपको अनुमान हो गया होगा कि हमारी बीवी ने भी कैसा संश्लिष्य हृदय पाया है ।”

“तो आखिर इससे क्या मतलब ?” सरदार साहब ने मुसकुराते हुए कहा ।

“अजी हजरत, सभी नौकरानियाँ यही कह रही हैं कि आपकी दाढ़ी नकली है, हमें शक है कि हमारी बीबी कहीं आपसे जलने न लगे । अतः अच्छा है कि मुलाकात न हो ।”

सरदार साहब ने एक कहकहा लगा कर कहा, “शुक्रिया, तसलीम, तसलीम, भई ! मेरी इस तरह बड़ी तो दाढ़ी है । बात तो यह है कि इस दाढ़ी पर तुम्हारा कोई जुमला ठीक ही नहीं बैठ सकता ।”

हमने हाथ में बाज़ लीं हुए कहा—“सूरत और शकल और इन्हें कहाँ ले जावोगे ।”

इतना ही कहा था कि नौकर आया और उसने हमसे कहा, कि आपको भीतर किसी बहुत ही जरूरी काम से बुलाया है । हम शीघ्र उठकर आये । मालूम हुआ कि ऊपर हैं, वहाँ जब पहुँचे, तब सबसे पहले दोनों नौकरानियाँ आँखें फाड़े व्याकुल पराशान मिलीं । इलाही, खैर तो है । हमने दिल ही दिल में कहा और कमरे में पहुँचे । क्या देखते हैं, कि बीबी साहिबा तकिये में मुँह छिपाये पड़ी हैं । पैरों की आहट पाकर जो सिर उठाया तो हम देखते ही दंग रह गये । रंज और दुख से चेहरा लाल हो रहा था और आँखों से आँसू निकल रहे थे । हम अधिक परी-शान हुए और पास बैठकर हमने कंधे पर हाथ रख कर दुखी होकर कहा, “मेरी जान, तुम्हें क्या हुआ ? कुशल तो है ?”

रोते हुए बीबी ने जवाब दिया, “मालूम होता है कि मेरे दिन अब करीब आ गये ।”

बेचैन होकर हमने फिर कहा, “कुशल तो है । आखिर क्या हुआ ?”

“तुम्हारा विश्वास जब मेरे ऊपर से उठ गया तब मैं क्यों कर जीवित रह सकती हूँ। यदि किसी बाजारू औरत से तुम मिलो और मुझसे कह दो तो खैर कुछ नहीं। किन्तु वह घर में आये और तुम मुझसे छिपाओ तो उसका यही मतलब है कि मेरी मृत्यु करीब है। मुझको अब तक घमण्ड था कि मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूँ। किन्तु खुदा...।” इतना कहकर आबाज बंध गई, और फिर मुँह छिपाकर बुरी तरह रोना शुरू किया। हम सख्त चक्कर में थे कि इतनी ही, यह कैसी आपदा है! “क्या मुझको पागल बना दोगी? आखिर यह मामिला क्या है?” कैसी रण्डी और कैसा मुण्डी? यहाँ कहाँ है?”

बीबी ने आँसू पोंछकर और आँखें चार करके कहा, “क्या अब भी यही कहे जाओगे कि औरत नहीं है?”

“कोई नहीं, बिलकुल गलत है। मालूम होता है फिर वही रात का किस्सा पेश है।”

“जो तुम कहो वह ठीक है। कह चुकी कि मेरा मजहब तो तुम हो और ईमान हो तो तुम हो, किन्तु अब मैं बिना अपनी आँखें फोड़े न रहूँगी। मेरा मजहब है कि यदि एक चीज मेरी आँखें देखें कि है, किन्तु तुम कहो कि नहीं है, तो मेरी अखें झूठी और तुम सच्चे। कदाचित् मेरी आँखों ने भी नौकरानियों की आँखों की भाँति धोखा खाया हो। अतः एक बार और आजमा लूँ।” यह कहती हुई उठी और खिड़की से बाहर जाकर झाँका। उँगली से हमें इशारा किया। हम भी गये।

“वह देखो, मेरी आँखें तो अब भी मुझे धोखा दे रही हैं।” इशारे से बताते हुए कहा। हमने जब खिड़की में से बाहर की ओर दृष्टि डाली तब निस्सन्देह अपनी बीबी का कहना ठीक पाया। क्या खते हैं कि बरामदे में एक औरत खिड़की की

ओर पीठ किये खड़ी आइना देख रही है। उसके लम्बे-लम्बे बाल उसकी कमर तक लटक रहे हैं, जिनको वह अपने कोमल और गोरे हाथों से सझला रही है और झटक रही है। सफेद साड़ी बाँधे, सिर और कुहनियों तक हाथ खुले हैं, जिनसे पता चलता है कि बहुत खूबसूरत होगी। हमने यह दृश्य देख कर बीबी की ओर देखा, तो उसने विचित्र दर्दिले और दुःख भरे ढङ्ग से कश—‘क्या बताऊँ, मेरा उस समय क्या हाल था, जब मैंने अपनी आँखों से देखा कि तुम हंस हँसकर उसके बालों में हाथ डालकर खेल रहो।’

अलावा इसके कि हम कुछ जवाब देते, हमने बीबी का हाथ पकड़ा और कमरे में लाये, और गले से लगाकर बीबी से खुशामद कर करके अपने अपराध को स्वीकार किया और हाथ जोड़कर क्षमा माँगा।

‘खुदा के लिए मुझे गुनहगार न करो। मैं भला इस योग्य हूँ कि तुम मुझसे माफी माँगा।’

‘यह कोई बात नहीं। जब हमारा अपराध है, तब हम क्यों न क्षमा माँगें?’

राखी होकर बीबी ने कहा, ‘अच्छा यह बताओ कि तुमने मुझसे रात में ही क्यों नहीं कह दिया?’

‘सिर्फ बेवकूफी और मूर्खता! यही खयाल था, कि तुमको बुरा मालूम होगा।’

‘मैं फिर कहती हूँ कि जिसमें तुम खुश, उसमें मैं खुश, और मेरा खुदा खुश। खुदा के वास्ते मुझसे कोई बात न छिपाया करो।’

हमने वादा कर लिया और कहा कि हम तो तुमसे असली बात स्वयं ही कहने वाले थे, क्योंकि हमें तुम ही इस औरत से

मिलाना था। अब हम तुमसे एक बात कहते हैं और वह यह कि तुम उससे चलकर अभी मिल लो, जिससे हमारा दिल हलका हो जाये।”

“मलने में मुझको कोई इनकार नहीं, किन्तु अभी?”

“हाँ अभी और इसी तरह। यदि तुमको मुझसे मुद्बत है तो फिर मैं जो कहूँ वह करो। लो उठो।”

यह कहकर हमने बाबी का हाथ पकड़कर उठाया और कहा, “वहीं बाहर चलकर मिल लो, और इस समय उसके अलावा दूसरा कोई नहीं है।”

हमारा शरीर किन्तु निरपराध और वफादार बीबी सदैव हमारे इशारे पर चलती थी। सांघी हमारे साथ हो ली। हम दरवाजे पर न आकर उस सीढ़ी से उतरे, जो खास उस बरामद में निकलती थी। यहाँ सरदार साहब नहीं थे। हमने बीबी को वहीं छोड़ा, और चुपके से कमरे में भाँककर देखा कि सरदार साहब किधर हैं। सरदार साहब कमरे में सड़क की ओर वाले दरवाजे में, हमारी ओर पीठ किये हुए, वालों को हवा दे दे कर सुखा रहे थे। हम झट लौट आये और बाबी को आगे किया। बीबी की दृष्टि सामने वाले लम्बे चौड़े आइने पर पड़ी, और वह सहसा कुछ रुकी कि नजर दाहिनी ओर पड़ी। भीतर आई तो देखा कि वही औरत उस ओर मुँह किये बाल सुखा रही है। कुछ आगे बढ़ा कि सरदार साहब ने पैर की कुछ आइट पाकर मुँह जो फेरा, तो डेढ़ बालिशत की दाढ़ी वाला चेहरा सामने था। घबड़ाहट में सरदार साहब के मुख से केवल इतना निकला—“हैं!” हमने जो पीछे घूमकर देखा तो बीबी नदारद।

सरदार साहब हैरान और परेशान थे और इधर हँसी के

मारे हमारा यह हाल, कि हँसते-हँसते पागल हुए जा रहे थे। जितना ही सरदार साहब बिगड़कर हमसे पूछते थे, कि आखिर यह मामिला क्या है, उतना ही हमारा हँसी के मारे बुरा हाल होता जाता था। हँसी को बार-बार जबर्दस्ती से रोक-रोक करके और साँस ले-लेकर किस्सा सुनाया कि जनाव, आप तो खिड़की की ओर पीठ किये कंधा कर रहे थे, और हम आपके रेशमी वालों से हँस-हँकर खेल रहे थे। हमारी बीबी ने दाढ़ी देखी या नहीं, यह हम नहीं कह सकते। क्योंकि आपका मुँह दूसरी ओर था। किन्तु बात यह है कि वे ईर्ष्या की भाग में जल मरीं और रो-रोकर वह हाल किया कि खुदा की पनाह। खुदा आपकी दाढ़ी की उम्र लम्बी करे, और इलाही वह खूब तरक्की करे कि आज उसने एक मियाँ और बीबी में ऋगड़ा होते-होते बचा लिया। यहाँ वास्तव में वह उस ओरत से मिलने आई थीं, जिसको उन्होंने खिड़की में से अपनी ओर पीठ किये हुए सफेद साड़ी बाँधे बरामदे में बाल सुखाते देखा था। अब यह उनकी किस्मत है कि आपने जब मुँह मोड़ा तब डेढ़ बालिशत की दाढ़ी का कुछ ऐसा डर समाया कि भागते ही बन पड़ी।

सरदार साहब को भी यह लतीफा सुनकर हृदय से ब्यादा हँसी आई, किन्तु हमारे सभी जुमिले अब हर एक तरह से ठीक चतर रहे थे और सरदार साहब वेहद रूँप रहे थे।

+

+

+

हम जब भीतर गये, तब बीबी साहिबा ने हमें देखकर फिर तकिये में मुँह छिपा लिया। हमने पास जाकर गुदगुदाया तो बीबी को हँसी के मारे बेहाल पाया। हमने कहा, तुम कितनी

असंभव हो कि उस औरत से बात भी न की। वह क्या कहती होगी कि कैसी समझदार बीबी है !”

×

×

×

इसके बाद ही रात की वह गलतफहमी भी दूर तो गई। बात यह थी कि रात में बिजली की रोशनी में कमरे में जब कोई औरत भाँकती थी, तब सामने लम्बे-चौड़े आइने में उसको अपनी चित्र-छाया दिखाई पड़ती थी। रात के समय यह तो समझ में न आता था कि कौन है, और फिर जल्दी में एक झटका देखकर भाग जाती थी। यह पहली हमारी बीबी ने हल की। क्योंकि जैसे ही वह कमरे में पहुँची थी, तो वह स्वयं अपनी चित्र-छाया देखकर एक क्षण के लिए भिन्न गई थी। अतः जब नौकरानियों को दिन के समय भेजा कि जाकर देखो वह औरत है कि नहीं तो उनको अपनी बेवकूफी का पता चला। वास्तव में बात यह थी कि इस कमरे में नौकरानियाँ बहुत कम आती थीं।

अब सरदार साहब बीबी से मुलाकात करने को तैयार ही न होते थे और न बीबी ही राजी हुईं। सरदार साहब कहने लगे कि अबकी बार जब आयेंगे तब मुलाकात करेंगे।

मतलब यह कि देर तक हमारा यह तन्नाजा रहा, किन्तु सरदार साहब मुलाकात करने के लिए राजी ही न हुए।

जब और दोस्तों को यह बात मालूम हुई, तब सरदार साहब जगह-जगह तङ्ग किये गये और अब तक बराबर तङ्ग किये जाते हैं। यह बात उनको यार-दोस्तों में लज्जित बना देने के लिये काफी है, किन्तु जबर्दस्ती तो देखिये दोस्तों की।

चौथा परिच्छेद

लाहौर का सफर

चाँदनी का बड़े जोरों का तकाजा था कि लाहौर की सैर करें। अतः दिसम्बर की छुट्टियों में हम लाहौर गये। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि हम किस जगह ठहरे, किन्तु खूब सैर की। चलने से एक दिन पहले हमने अपनी बीबी से कहा कि बगदादी चोर का प्रसिद्ध फिल्म आया हुआ है, क्या तू देखेगी? चूँकि हमारी बीबी के स्वभाव में सैर और आराम समाया हुआ था, अतएव शीघ्र ही वह तैयार हो गई। अभाग्य से हम दोनों सिनेमा ऐसे तङ्ग समय पहुँचे, कि कठिनाई से अन्वल दर्जे में जगह मिली, और यह भी बदकिस्मती से ऐसी कि इधर हम और उधर बीबी और बीच में एक पगड़ी-बाज, जो बहुत ही बड़े खतरनाक ढंग का बड़ा साफा बाँधे हुए थे। हमने उनसे कहा कि साहब आप अपनी जगह बदल लीजिये तो बड़ी मेहरबानी हो, जिससे हम अपनी बाबा के साथ का आनन्द उठा सकें। किन्तु वे न माने और बुरे स्वभाव से पेश आये, और नौबत यहाँ तक पहुँची कि कहा-सुनी होते-होते रुक गई। किस्मत की खूबी या संयोग कि आगे की कतार से एक साहब बहादुर उठकर रफूचक्कर हुए और उनकी जगह खाली हुई। हमने उनसे कहा कि हजरत आगे वाली जगह खाली है, आप बैठ जायें। अतः वे पगड़ीबाज आगे जा बैठे। और चाँदनी उनकी जगह आ बैठी, और उनकी जगह एक और साहब ने पीछे से आकर ले ली। ये साहब बहुत ही सभ्य और बहुत ही मुनासिब आदमी मालूम होते थे। ये

लाहौर के नये हिन्दू वकील थे। अब मालूम हुआ कि चाँदनी को कुछ दिखाई नहीं देता, क्योंकि सामने जबर्दस्त पगड़ी थी। हमने बहुत ही नम्रता से उन हज़रत से व्यर्थ कहा कि हज़रत आप अपना साफा उतार लें। वे न माने और चाँदनी ने तङ्ग आकर हमको भी न देखने दिया और बातों में लगा लिया। वह धीरे धीरे कह रही थी कि इन पगड़ीबाज से बदला लो और उनका साफा चसीटो। हम कह रहे थे कि हमें मालूम होता है कि तू आज मारी जायगी और हमें भी अपमानित करायेंगी। वह कहती थी कि आखिर फिर क्या क्रिया जाये? वकील साहब उसकी सलाहों में बहुत दिलचस्पी ले रहे थे, किन्तु यह सलाह उनकी भी थी, कि तुम औरत हो, शरारत करना उचित नहीं; तो इनका जवाब हमारी शरीर बीबी ने यह दिया कि हज़रत फिर आप हो मर्द बनिये और किसी प्रकार उनका साफा उतरवाइये। वकील साहब ने स्वयं इन पगड़ी प्रिय हज़रत से कहा कि साफा उतार डालिये या कोई और उपाय कीजिये, किन्तु ये न माने।

१

चाँदनी हमें तमाशा देखने ही न देती थी। हमारी कुर्सी के तकिये पर बाँया हाथ रखे हुए हमारी टोपी के फन्दने से खेल रही थी और बातों में लगाये हुई थी। हम कह रहे थे कि न तो स्वयं तमाशा देखती है, और न हमें देखने देती है। आखिर यह क्या मामिला है कि इतने में उसने कहा कि बाहर चलो, चाय पियें। हमने इन्कार किया और कहा कि तुम जाओ और हमें देखने दो। वह चली गई और वहाँसे जब लौट कर आई तब उसके हाथ में हमारी टोपी के फन्दने के दो छोर थे, जो बत्ती की तरह सुलग रहे। एक इनमें से उसने वकील साहब

को दिया और दूसरा अपने हाथ में लिया। हमने पूछा कि यह क्या मामिला है, तो उसने न बताया। उसने हाथ बढ़ाकर पगड़ीबाज हजरत की गर्दन पर सुलगता हुआ डोर का किनारा छुआ दिया। बस, हम क्या बतायें कि उन्होंने किस सफाई से अपने गर्दन का पिछला भाग झाड़ा, मानों उनकी गर्दन में किसी काँड़े ने डंक मार दिया। जैसा ही उन्होंने मुड़कर देखा तो चाँदनी ने वकील साहब से कहा कि वकील साहब आपको ऐसा न करना चाहिये। वकील साहब ने इस मजाक से काफी दिलचस्पी ली। पगड़ीबाज हजरत इस मजाक को पी गये; और दो एक बार सिर हिला-हिला कर वकील साहब को देखने के अलावा और कुछ न किया। अब हमारी बीबी ने फिर यही करना चाहा। हमने बहुत कुछ कहा कि बदतसीब, तू मार खायेगी और तेरो शामत आ रही है किन्तु वह न मानी और उसने फिर एक चरखा दिया। अब की बार ताँवे बल खा गये। शोर तो मचा न सकते थे, न जाने क्या फुस-फुसाने लगे। किन्तु बहुत नाराज थे। वकील साहब ने जब देखा कि मामिला मेरे ऊपर आता है तब उन्होंने हाथ की बत्ती फेंक दी। किन्तु पगड़ीबाज ने उसको देखा था। और वे यही सोच रहे थे कि शरारत वकील साहब की है। क्योंकि चाँदनी तो बिलकुल भीगी धिल्ली बनी बैठी थी और बार-बार कहती थी कि ऐसा न करना चाहिये, बुरी बात है। अब ऐसा मालूम होता है कि ये हजरत पगड़ीबाज सान्धान होकर बैठे थे, और बेहोश न थे।

थोड़ी देर बाद वकील साहब ने उठकर एक साहब से सिगरेट माँगना चाहा और उधर पगड़ीबाज समझे कि मेरे साथ शरारत करने का विचार है। ये साहब इन पगड़ीबाज के बायें

हाथ बैठ हुए थे। वकील साहब ने चठकर हाथ जो लम्बा बढ़ाया कि पगड़ीबाज ने, जो बिलकुल सावधान बैठे थे, घुमाकर एक हाथ बिना देखे-भले अँधेरे ही में ऐसा वकील साहब को दिया कि उनकी कनपटी पर पड़ा। मुनासिब बात थी कि वकील साहब भी उसका जवाब देते, और उन्होंने जोर से पगड़ी पर एक ऐसा हाथ मारा कि यह उनके गले में उतर आई। पगड़ी-बाज के धैर्य का प्याला भर चुका था, और वे ऐसी मुसीबत की तरह, जिसका इलाज न हो, शार मचाकर कूद कर हमारी लाइन पर गिरे और वकील साहब से भिड़ गये। एक बड़ा दुर्लभ मचा और रोशनी हुई। एक अँगरेज सार्जेंट ने आकर देखत दिया। चाँदनी ने और पास बैठने वालों ने इन पगड़ीबाज की भूठी सच्ची शिकायत की। वे हजरत सार्जेंट से भी कड़ाई से पेश आये, जिसका यह नतीजा निकला कि वे हरजत पकड़कर निकाले गये और फिर हमने बाकी खेल इतमिनान से देखा।

खेल खतम हुआ तो वकील साहब से हमने अपनी बीबी की शरारतों की माफी माँगी। किन्तु वकील साहब चाँदनी की शरारतों के कायल हो चुके थे और उन्होंने हमारा नाम और पूरा-पूरा पता पूछा और अपना पता बता दिया, और दूसरे दिन अपने यहाँ चाय पीने के लिये बुलाया। हमने तो ज़मा चाही, किन्तु हमारी बीबी ने बात काट कर कहा कि नहीं साहब, हम इस सेवा के लिये हाज़िर हैं और ज़रूर आपके यहाँ आयेंगे। बड़ी कोशिश से वकील साहब हमसे आने क दृढ़ वचन लेकर रुखसत हुए।

शाम को हम वकील साहब के यहाँ पहुँचे जहाँ, बहुत ही बनावट के साथ चाय पी और कई ऐसे साहबों से और भेंट

हुई कि यदि उनमे न मिलने तो अफसोस ही रह जाता । इसी रात को हम लाहौर से लखनऊ के लिये चल दिखे ।

२

लौटते समय दो दिन देहली में ठहरे और खूब सैर की । हमने चाँदनी से कहा कि तेरी सैर-सपाटे की भेंट हम दो सौ रुपये से अधि कर चुके हैं और अब तुझको तीसरे दर्जे में सफर करायेंगे । खुलासा यह कि शिकायत की दृष्टि से यह निश्चय हुआ कि यहाँ से इन्टर क्लास का टिकट लिया जाय । बदकिस्मती से देहली के स्टेशन पर हमारी बीवी की एक परिचिता मिल गई, जो अलीगढ़ जा रही थीं और हमारी बीवी ने कहा कि अब हम जनाने डब्बे में सफर करेंगे । हम हमेशा अपनी बीवी को अपने साथ ही बैठाना पसन्द करते हैं । कुछ लोग अपनी बीवी को अपने साथ इस सबब से बैठाते हैं कि बीबी अपनी है; किन्तु वास्तव में हम बातूनी अधिक हैं और फिर बीवी के साथ बातें करने में जो आनन्द आता है वह किसी में नहीं ।

हम सोचते थे कि अलीगढ़ के बाद बाँकी का साथ हो जायगा, किन्तु बदकिस्मती से मरदाने डब्बे में जगह की इस तरह तंगी हुई कि बीबी को साथ बैठाने का विचार ही छोड़ देना पड़ा । वह तैयार न हुई । क्योंकि उसको स्वयं ख्याल था कि बहुत रुपया खर्च हो चुका है ।

बदकिस्मती पर बदकिस्मती थी । अच्छी बीवी और अच्छा मुसाफिर दोस्त कठिनाई ही से मिलता है । अलीगढ़ के बाद तो हमें नरक से आनन्द मिल रहे थे । क्योंकि दो-तीन सेठ साहबान आ बैठे थे, जो व्यापार की इस प्रकार अनुचित बातें कर रहे थे कि हम सरसों और तेल का भाव सुनते-सुनते

परीशान हो गये और हमें कहना पड़ा कि हजरत यह रेखा है दूकान नहीं; कि आप साहब तमाम खरीद-फरोख्त कै किससे यहाँ सुनायें ।

डूँडला का स्टेशन आया और हम चाँदनी से मजेदार गर्भों के ने पहुँचे । उसने इच्छा प्रकट की कि कहीं उम्मे केक मिलें ता अच्छा है । हम केक को तलाश में वेटिङ्ग रूम के होटल को ओर चले । भोड़-भाड़ में थोड़ी ही दूर गये होंगे कि सामने से पुराना दोस्त आता हुआ दिखई पड़ा । हम दाढ़कर उससे लिपट गये और दानों के मुँह से एक साथ निकला कि भाई ! खूब मिले । कहाँ जा रहे हों, कहाँ से आ रहे हो, कैसे हो और कहाँ हो ? यही दो चार वाक्य थे, जिनसे सवाल और जवाब दानों ओर से हुए । दो चार ही बातें हुई थीं कि हामिद ने हमसे कहा, “यार एक बड़ी जोरदार लड़की देखने में आई है ।” हमने आश्चर्य में आकर पूछा कि “कहाँ है ?”

हामिद ने कहा, “जनाने डिब्बे में जमी हुई है । अरे यार क्या बताऊँ कि बराबर लगभग हर एक स्टेशन पर उसे देखने के लिये उतरता हूँ ; किन्तु योंही पास पहुँचता हूँ, वह जालिम मुँह फेर लेती है । भाई ! क्या कहूँ, गन्ध की लड़की है ।”

हामिद यह कहते हुए हमें लेकर दिखाने चले ।

हम दिल में सोच रहे थे कि आखिर वह कौन लड़की है जिसने जुलन ठा रक्खा है । क्यों कि हमें तो अब तक दिवाई न पड़ी थी । हम दोनों तेजी से जनाने डिब्बे की ओर पहुँचे । कुछ दूर खड़े रह कर हामिद ने कहा, “वह देखो, काले बुरक की नकाब सिर पर डले मुँह खोले हुए बैठी है । कहो, कुछ है जोरदार !”

हम भला इसके अतावा और क्या जवाब देते कि भाई

वास्तव में जोरदार है। क्योंकि जिसको इस व्यवस्था से मियाँ हामिद ने दिखाया था, वास्तव में वह हमारी बीबी ही थी। हमने मन में कहा कि हामिद बहुत दिन बाद मिला है। और कोई सबब नहीं कि इसको अभ्यास की पट्टी न बनायें। अतः हमने हामिद से कहा कि “भई, हम करीब जाकर जरा देखें तो ठीक राय कायम कर सकें।”

“कहीं ऐसा गजब भी न करना, नहीं तो वह जालिम मुँह मोड़कर बैठ जायगा और फिर इससे भी हाथ धोवोगे।” हामिद यह कहकर हमें राका।

हमने हामिद से कहा कि “यार यह तो बड़ी टेढ़ी बात है, किन्तु यह तो बताओ कि तुम हर स्टेशन पर उतर कर उसके पास गये तो, किन्तु कुछ डोरे भी डाले।”

हामिद जलकर बोले, “तुम भी अजीब बेवकूफ हो। सूरत तक तो वह दिखाती नहीं, डोरे क्या खाक डालेंगे ?”

हमने हामिद से कहा कि तुम दा के बेवकूफ हो और तुम से कुछ नहीं साधता। हामिद ने इसका यह जवाब दिया कि “अच्छा तुम अकलमन्द हो तो कुछ कर लो।” हमने मन में सोचा कि हामिद ढर्रे पर आ रहा है, अतः हमने कहा कि “इस प्रकार नहीं। कुछ शर्त करो।”

हामिद ने कहा, तै रही। हमने कहा कि हम उस पटाखे से यदि पान ऐंठ लायें तो क्या दोगे ? हामिद ने ताव में आकर पाँच रुपये वाला एक नोट निकाला और हमने उसको अपनी जेब में रक्खा और चलने को तैयार हुये। हामिद सहसा बोले “याद रखना, दुगुने लूँगा।” हम रुक गये और हमने हामिद से कहा, दोस्त यह झूठी बात है। हम तो एक तरफा शर्त बदते हैं। पान ले आवें तो नोट हमारा, नहीं तो अपना नोट व्यों का

त्यों बापस ले लेना ।” हामिद इस पर तैयार हो गये । हमने दूनी शर्त इमलिये नहीं रखी कि कहीं हामिद को सन्देह न हो जाये और मामिला बिगड़ जाये ।

३

हम पहले धीरे-धीरे खिड़की के सामने से चाँदनी को देखते हुए निकल गये । हमारी बीबी भी मानों फुलझड़ी है कि हर बात में उसको मजाक ही दिखाई पड़ता है । हमें इस प्रकार असम्बद्ध जाते हुए देख कर मुस्कुराई और देर तक हमें देखती रही । इस तरह कि हम भीड़ में मिलकर गायब हो गये । घूम कर हम हामिद के पास आये और कहा कि बोलो अब क्या कहते हो ?

“अरे यार तू भी गजब का आदमी है । हमारी तो अक्ल का दिवाला निकल गया । तुमने तो केवल एक ही बार उसको सिर उठा कर देखा; किन्तु वह तुमको बराबर देखती रही, और सितम यह कि हँस रही थी ।”

हमने कुछ अरुढ़ कर कहा कि “भारें ! तुम्हारी तरह बेकूफ थोड़े ही हैं । अब की बार हम बात करेंगे ।”

हामिद कहने लगे कि मालूम होता है, तुम्हारी किस्मत ठोकर खा रही है, और ‘पटका-पटकी’ के कुछ हौसले दिखाना चाहते हो । अच्छा जाओ तो सही, याद रखना, बुरी तरह मारे जाओगे ।

हम फिर टहलते-टहलते पहुँचे । इधर-उधर संदिग्ध आंखों से बन-बन कर देखते जाते थे और बीबी से मजेदार बातें करते आते थे । उसने जब सुना कि हम अपने एक दोस्त पर चोट कर रहे हैं, तब वह बहुत प्रसन्न हुई । हमने एक पान उससे इस प्रकार लिया की जैसे कोई देख न ले और चले आये ।

अब हामिद सख्त चक्कर में थे और कहने लगे “यार तुम्हें कुछ जादू आता है।” यह कहकर लाचारी की अवस्था में जेबों में हाथ डालकर मामिले पर विचार करने लगे।

हमने नोट को जिसे हम जोत गये थे, जेब में से निकाला और आगे बढ़ा कर उनके सामने करके उसको चुम्बन दिया। हामिद हँसकर बोले—“हाँ भई ! हम हार गये, नाट तुम्हारा है। किन्तु यह अवश्य कहेंगे कि हो घुटे हुए।”

हमने कहा कि तुम भूलते हो, इमारा इसमें कुछ चालाकी नहीं। बल्कि यह तो हमारी मरदानी खूबसूरती है कि ऐसा-ऐसी छोरियाँ न मालूम कितनी प्रतिदिन फिदा होती हैं।”

हामिद ने कहा, “उस्ताद, बन आई है। ओ जी चाहे कहो। अब फिर जावोगे ?”

हमने कहा, “अब हम जाना ठीक नहीं समझते। क्योंकि वह हमसे केक माँग रही है।”

“अच्छा खाओ कसम”—हामिद ने आश्चर्य में आकर कहा। हमने झट कसम खाई। क्योंकि सच बात थी, कि वह केकों के लिये कड़ा तकाज कर रही थी। हामिद इस पर बोले कि फिर दे क्यों नहीं आये ? जिसका हमने यह जवाब दिया कि हम ऐसी बेवकूफी कभी भी न करेंगे। ऐसा हाँ है तो तुम स्वयं दे आवां।” हामिद ने जाने का इच्छा प्रकट की किन्तु इस शर्त पर कि हम जाकर मामिला ठीक कर दें। हम दौड़े हुए बीवी के पास पहुँचे और उसको खुशखबरी दी कि दोस्त तुम्हारी दावत कर रहा है और चूकना मत। केक फौरन ले लेना।

हामिद केक तो ले आये, किन्तु अब उनको डर लगा कि कहीं कोई मद न हो। हमने कहा कि उसके साथ कोई मद

नहीं। क्योंकि वह अकेली यात्रा करने की आदी है। तुम बेडर जाओ, किन्तु हामिद तैयार न होते थे। हमने कहा, “अच्छा तुम केक लिए हुए डिब्बे के सामने से निकलो। यदि माँगे तो देना, नहीं तो चले आना।”

हामिद खिड़की के सामने से केक लेकर निकले। उधर हमने अपनी चुलचुली बीबी को इशारा किया। उसने मट हाथ बढ़ाकर ले लिये, और कृतज्ञता ही प्रकट नहीं कि बल्कि उनके हाथ में पान भी दे दिया।

हामिद हमारे पास आये तो क्या बनाये क्या हाल था। हमारी बीबी के सौंदर्य और रूप कीन्होंने वह तारीफ की कि हम कृतज्ञता प्रकट करते-करते थक गये। क्योंकि हम हामिद से कह रहे थे कि वह हमारी है। गाड़ी चलने की हुई तब हमने भी हामिद के साथ अपना टिकट दूसरे दर्जे का बनवा लिया।

४

अब हामिद दूसरे-तीसरे स्टेशन पर अवश्य हमारी बीबी के पास जाते। हम बीबी से कह आये थे कि हामिद हमारा ऐसा दोस्त है, कि उससे तिनका भर भी बनावट न करना और साथ ही शरारत में भी कमी न करना। हामिद के साथ एक बार हम भी जब उतरे, तब वे बोले कि दो आदमियों का जाना ठीक नहीं। तुम यहीं ठहरा नहीं तो फिर वह बातचीत नहीं करेगी। हमने कहा यदि ऐसा ही है, तो हम सब मामिला चौपट किये देते हैं, नहीं तो तुम हमें जाकर उससे बातचीत करने दो। अतः हम चाँदनी के पास पहुँचे, उसकी शरारत से भरी हुई मुसुकुराहट हमारे दिल पर बिजलियाँ गिरा रही थी। हमने जाते ही कहा कि कहो दोस्त, क्या रङ्ग है। इस पर

उसने अपने कोट की चेब से सौ रुपये का नोट निकल कर कहा कि, “हम तो हामिद साहब के साथ अब इलाहानाद जा रहे हैं।” हमने कहा, ‘वाह दोस्त, तुमने क्यों कर ऐंठा?’ तो उसने कहा कि रुपये का बोझ ज्यादा था। मैं तुमसे दो बार कह चुकी थी कि नोट भुना लो, किन्तु तुमने पर-बहन की। हामिद साहब के बटुये में जब नशोंने खोजा, यह दिखाई पड़ा। अतः हमने फौरन कहा कि रुपये लांजिये और नोट दे दीजिये। नोट तो वे दे गये, किन्तु जल्दी में रुपये न ले सके।” हमने नोट लेकर जेब में रक्खा और कहा कि अब आवें तो उनको एक पुड़िया देना। बंवी की खुशी के मारे रङ्गत बदल गई और कहने लगी, “जरूर, जरूर मुझको तो याद ही नहीं रहा था।”

हम जब लौट कर आये, तब हामिद ने पूछा कि क्या बातें कर आये। हमने कहा कि हम न बतायेंगे। क्योंकि प्रेमी और प्रेमिका की बातें करके आ रहे हैं। हामिद ने कहा, तुम बदतमीज हो। यह अच्छे चाल-चलन की लइकी है। तुम उससे-प्रेमी और प्रेमिका की बातें कर ही नहीं सकते।” नोट इत्यादि का किस्सा भी हमने हामिद से न कहा।

दूसरे स्टेशन पर मियाँ हामिद ने कहा, कि हम तो पान खाने जाते हैं। हमने कहा कि मियाँ ज्यादा चोंच न लाल करो, नहीं तो पछतावोगे। हामिद उतरकर गये, समय कम था। शीघ्र ही पान मुँह में दाबे हुए लौट आये। अभी अच्छी तरह बैठ भी न पाये थे कि मुँह बनाना शुरू किया, और खिड़की के बाहर मुँह करके बुरी तरह थूकना शुरू किया। हमारा हँसी के मारे पुरा हाल हो गया। क्योंकि हम जानते थे कि कुनैन की पूरी पुड़िया हामिद के मुँह में घुली हुई है। हमने हँस कर कहा।

कि भाई, क्या मुसीबत आई ? कुछ तो बताओ; तो थूक थूककर कहते थे कि बड़ी शरारती है। मेरा पूरा गला तक कड़वा हो गया। मालूम होता है कि उसने कुनैन मिला दी। हमने कहा, कि भाई कोई-कोई पान स्वयं ऐसा कड़वा होता है। बहुत संभव है, तुम्हारा विचार गलत हो। दूसरे स्टेशन पर हामिद तो अपना गला साफ करने में और कुल्लियाँ करने में लगे और हम अपनी बीबी से कह आये, कि अब जब हामिद साहब आयें, तब खिड़की बन्द कर देना।

अब जब हामिद साहब वहाँ पहुँचे, तब खिड़की बन्द। बिजली होकर लौट आये। दो तान बार अगले स्टेशनों पर भी कोरिश की, पर असफल रहे। अब हमने कहा कि हजरत वह आपसे बिलकुल बात न करेगी, और स्वयं जाकर और बात करके लौट आये। हामिद ने, आश्चर्य है कि, अब तक नोट की चर्चा ही न की थी। हमने स्वयं नोट निकालकर हामिद को दिखाया, और कहा कि भई ! वह तो हमारे ऊपर जान निष्ठा-वर किये देती है, और यह नोट उसने ज़बर्दस्ती दे दिया और तुमसे वह बातचीत भी करने के पक्ष में नहीं है। हामिद ने कुछ चौंकर कहा कि वह नोट तो मेरा है, और कायदे से मुझे वापस मिलना चाहिए। हमने हामिद से कहा, कि भई ! कायदे से तो यह हमारा है। क्योंकि हमारी प्रेमिका ने हमें दिया है। लेकिन यदि तुम सब कहते हो कि तुम्हारा है तो हम तुमको अवश्य लौटा लेंगे, यदि उसने वापस न लिया तो। हमने हामिद से दूसरी बार कहा, कि भई ! जाओ। अपने नोट के लिये भी कुछ कोशिश कर आओ, तो वे बोले कि अब मैं नहीं जा सकता। क्योंकि वह अब तुम्हारी चीज है। जो तुमको प्यार करती है, मैं उससे प्रेम नहीं कर सकता

हाँ, इज्जत कर सकता हूँ। हमने अपने प्यारे दोस्त की पीठ ठोकी और कृतज्ञता प्रकट की। हामिद सहसा बोला कि “यार यह तो बताओ कि अब तुम करोगे क्या ? क्या इससे शादी करोगे ? यदि शादी करोगे तो भला किस तरह ? हमने कहा कि हम इस शरारत भरी लड़की से शादी इत्यादि नहीं करोगे, और न हम इसकी आवश्यकता समझते हैं। हम तो इस समय उसको लेकर लखनऊ ले जाते हैं। हामिद ने हमसे कहा कि यदि वास्तव में ऐसा विचार है तो बुरा है कि एक लड़की की जिन्दगी को नष्ट करके उसे बुरे रास्ते पर लगा रहे हो। हमने कहा, कि “मियाँ हम उसकी आकषत्र बना देंगे। तुम क्या जानो ?” किन्तु हामिद यही कहते गये कि यदि तुम बुरी नीयत से इसको लिए जा रहे हो तो बिलकुल घृणा के योग्य है। हम मन ही मन अपने दोस्त की पवित्रता की अवश्य प्रशंसा कर रहे थे, किन्तु बातों से पता तक न चलने दिया और यह कह कर खूब आनन्द लिया कि चूँकि तुम अज्ञफल रहे, अतः हमको भी उपदेश और सुशिक्षा का शिकार बनाना चाहते हो।

५

कानपुर का स्टेशन आया और हमने हामिद से कहा कि तुम हमारा सामान उतरवाना। हम जरा उसको उतरबायेंगे। हामिद ने कहा कि क्या वास्तव में तुम उसको उतार ले रहे हो, वह तो इलाहाबाद जा रही थी। तुमको कदापि ऐसा न करना चाहिये। हमने कहा कि इस समय तो हम उसको लखनऊ की हवा खिलायेंगे। यह कहते हुए हम चले गये। हामिद को इस गाड़ी से सीधा जाना था, अतः हमारा सामान उतरवा कर वहीं खड़े थे।

हम अपनी शरारत से भरी हुई बेगम साहिबा को लेकर

हामिद की ओर आये। हामिद ने कुछ मुँह सा फेर लिया। किन्तु हम आगे बढ़े और हमने कहा, कि हामिद अब मजाक समाप्त होता है और हमारी बीबी से तुम कायदे के साथ भेंट करो। यह कहकर हमने अपनी शरारत भरी बीबी का हामिद से परिचय कराया। वे हक्का-बक्का रह गये और चुप थे, मानों अस्वीकार कर रहे थे।

हमने कहा, यार तुमको पुरानी बातें भी याद हैं! उस चुलबुली लड़की को भूल गये, जिसने एक दिन खिड़की के सूराख में से हमारी और तुम्हारी आँखों में धूल भोंकी थी। हामिद ने चाँदनी को ध्यान से देखा, और हालाँकि एक ही बार देखा था किन्तु भट पहचान गये, और उछल पड़े और फिर तो इस शोक से मिले कि बयान से बाहर, और कहा, कि मैं पहचान गया, पहचान गया। हमारी मसखरी बीबी ने कहा, कि यदि आप जल्दी पहचानते तो आपका गला हो क्यों कड़ुआ होता। हामिद से हमने बहुत कहा कि लखनऊ चलो किन्तु वे न मानते थे। हमने चाँदनी से कहा, कि इनको पकड़कर अवश्य ले चलो, नहीं तो हम इन्हें अपनी शादी की मनोरंजक चर्चा न सुना पायेंगे।

आखिर हामिद हमारे साथ लखनऊ दो दिन रहे और हमने ये दो दिन अपने दोस्त के साथ अधिक आनन्द से बिताये। तीसरे दिन हामिद हमें, हमारी मनोरंजक बीबी से मिलने पर बधाई देते हुए विदा हुए, किन्तु इसके जरूर कायल थे कि रेल में उन्हें बेवकूफ बनाया गया। हमने उनके शर्त के रुपये, और सौ रुपये का नोट कानपुर ही में लौटा दिया था। चाँदनी को उन्होंने जो भेंट स्वरूप घड़ी दी उसकी पोठ पर

उन्होंने इस सफर की यादगार इस प्रकार कायम की, कि ये शब्द खुदवा दिये।

“हामिद की ओर से भेंट, अपने प्यारे दोस्त को प्यारी, किन्तु बहुत ही शरारतभरी बाबी को।”



पाँचवाँ परिच्छेद

कुनेन का इस्तेमाल

वैसे तो हमारी कई मौखियाँ हैं किन्तु इनमें से जो सबसे छोटी हैं वे बहुत फर्ट क्लास हैं। इस कारण से नहीं कि वे हमें अधिक प्यार करती हैं बल्कि इस कारण से कि हमें और हमारी बाबा को वे बहुत पसन्द करती हैं। एक बार हमारे यहाँ आईं तो हमारी बीबी का नाम चाँदनी रख गईं। वे कहने लगीं कि चूँकि तेरी बबो चाँदनी की तरह खिली रहती है अतः उसका नाम चाँदनी बहुत ठीक है। हमने कहा कि आपको नहीं मालूम यह कदापि इस योग्य नहीं कि इसका नाम चाँदनी रक्खा जाये; बल्कि इसका नाम तो हम अँधेरा इत्यादि रखने की बात सोच रहे हैं। किन्तु वे न मानीं और उन्होंने हमारी जन्मजात नेक बाबा को चाँदनी की उपाधि दे ही दी। हम दो-चार दिन चाँदनी कहने के बजाय अँधेरा ही कहते गये किन्तु अन्त में हम भी चाँदनी कहने लगे, जो अब तक जारी है और उसी समय से हम उसे चाँदनी कहते हैं।

नौकरी पेसी चीज है कि एक जगह रहना ही नहीं होता।

किन्तु एक बात यह भी है कि जहाँ जाना होता है वहाँ नये यार-दोस्त पैदा हो जाते हैं। इस नई जगह में हमारे एक दोस्त पैदा हो गये। ये काश्मीरी पंडित थे और नहर के इन्जीनियर थे और थोड़े ही दिनों में उनसे काफी दोस्ताना हो गया, जिसका कारण कदाचित् यह था कि चाँदनी की और उनकी बीवी की खूब घुमती थी। चाँदनी उनके यहाँ प्रायः आया करती थी। उनके बँगले पर जब एक बड़ा-सा नहाने का हौज देखा, तब उसने उनकी बीवी से कहा, कि आखिर क्यों न इसको साफ करके भरा जाये ? यह हौज बहुत ही मैला पड़ा था। तैरना सीखने के लिये बनाया गया था और नहर से उसमें पानी आने का रास्ता था। चारों ओर से बन्द था और छत पर टीन छाया हुआ था। दोनों की सलाह हो गई और पंडित जी की बीवी ने उसकी सफाई इत्यादि शुरू करा दी। इस हौज के शौक में चाँदनी पागल हो रही थी। कई दिन हौज की मरम्मत और सफाई देखने के लिये गई और बड़ी दिलचस्पी ले रही थी। हमने उसके लिये बम्बई से नहाने का जनाना सूट मँगाया, जिसको देखकर इन्जीनियर साहब की बीवी ने भी मँगाया। बड़े शौक और प्रतीक्षा के बाद वह दिन आया कि हौज भरा गया और वह नहाने गई। सफर में, पहली बार उबरे पानी में खेजने का अवसर मिला, तो वह प्रतिदिन जाने लगी। धीरे-धीरे इस शौक ने संक्रामक रूप धारण कर लिया और दूसरी औरतों को भी शौक पैदा हो गया और इन्जीनियर साहब के बँगले पर माना नहाने और तैरना का एक क्लब स्थापित हो गया। हम इस क्लब से बहुत ज्यादा परीशान थे। क्योंकि यह तो प्रतिदिन का झगड़ा हो गया कि बीवी तैरने चली जाती और हम शाम को इधर-उधर मारे-मारे फिरते। हम बहुत प्रयत्न करते कि

किसी दिन तो न जाये और उसको रोकते, किन्तु वह कहती थी कि अब तुम क्लब इत्यादि जाना शुरू कर दो, मैं तैरना सीख रही हूँ। हम कहते थे कि एक न एक दिन तू डूबेगी और उल्टी लटकाई जायगी। इंजिनियर साहब के यहाँ उनकी बीबी ने यह सलाह दी थी, कि मोटर के ट्यूब में हवा भरकर उसकी सहायता से तैरना चाहिये। अतः हमने दो ट्यूब मोटर के मँगाकर दे दिये। खुलासा यह कि उसको ऐसा शौक पैदा हो गया कि दिन भर यहाँ इन्तजार करती रहती थी कि अब शाम को और मैं जाऊँ। वहाँ से आकर अपनी तैराकी और गोताखोरी की मनोरञ्जक कहानियाँ सुनाया करती। शरारतें वहाँ भी उसके साथ थीं और उसका यह मनोरञ्जक काम था कि कि वह चुपके से पानी में बैठकर किसी नई आने वाला बीबी के पैर को घसीट कर उसे गिरा दिया करता थी।

यह ही ज़वास्त में केवल तैरने और नहाने के लिये बनाया गया था। तीसरे दिन सबेरे नहर से साफ पानी हममें भर दिया जाता था। एक ओर इसमें दो-तीन सीढ़ियाँ थीं और कम पानी था; किन्तु आगे दूसरी ओर सनह ऐसी ढालुआँ थी कि गहरा होता चला गया था, इस तरह कि दूसरे किनारे पर आदमी के कद से भी अधिक गहराई थी।

एक दिन की बात है कि चाँदनी ने हमसे कहा, आज हम बहुत जल्द जायेंगी; क्योंकि इंजिनियर साहब के यहाँ कुछ मेहमान आये हुए हैं और दूसरी बीबियाँ भी आयेंगी। हमसे कहा करती थी कि अब हम कुछ तैर लेती हैं। वहाँ आज काफी औरतों का मजमा था और चाँदनी को एक और शरारत भरी बीबी वहाँ मिल गई। इन दोनों ने यह सलाह की कि एक बीबी को जो पानी में बहुत डरती थी, घसीटा जाय। अतः इन दोनों

ने ऐसा ही किया और फिर पानी में ऐसा हुल्लाह मचाया कि वह बेचारी गहरे पानी की ओर गिरी। इस गड़बड़ में उन्होंने चाँदनी को बसीठ लिया और उसका परिणाम यह हुआ कि दोनों गहरे पानी में गोते खाने लगीं। हालाँकि मोटर ठीक पानी में मौजूद थी, किन्तु वहाँ होश ही दुस्त न था कि उसकी सहायता ली जाती। तात्पर्य यह कि एक दूसरे को पकड़कर इस प्रकार गोता खा रही थीं कि नौबत डूब जाने तक की पहुँची। इसी समय दूसरी बीमारियों ने एक साड़ी भीतर फँको, जिसका किनारा पकड़कर दोनों निकल आई, किन्तु बुरा हाल था। नाक और मुँह से न मालूम कितना पानी पेट में आ चुका था और आश्चर्य नहीं, कि यदि थोड़ी देर और बीत जाती तो दोनों डूब जातीं।

हम घर पर प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह मुसुकुराती हुई पहुँची। हमने कहा कि आज क्या मामला है कि जल्दी आ गई तो, उसने किस्सा सुना दिया। हमने समझा कि मामूलो-सी बात है, अतः हमने बीबी की खूब दिस्तगी उड़ाई। उसको प्यास लंग रही थी और उसने दो बार दो गिलास पानी पिया, और फिर भी प्यास न बुझी। थोड़ी देर बाद उसको कै हुई और तबीयत खराब हो गई। खाँसी अलग थी। तकलीफ इतनी हुई कि डाक्टर को बुलाना पड़ा। डाक्टर ने कहा, मालूम होता है, फेफड़ों पर भी पानी का कुछ असर पहुँच गया है, क्योंकि खाँसी बहुत आ रही थी। उन्होंने कहा, दवा सबेरे दी जायगी। पहले पेट में से पानी निकालना चाहिये। उन्होंने एक बारपाई मँगाई और उसका पैताना खूब ऊँचा कर दिया। फिर चाँदनी से कहा, कि उस पर लेटो। उसको इस प्रकार खदकाया, कि मुँह सिरहाने की ओर लटक रहे, और बीबी

पड़ी रहे। पेट के नीचे एक तकिया रखकर हम उस पर तैनात किये गये कि समय-समय पर उसको ऊपर से दबा कर कै करायें। डाक्टर साहब के आते ही हमने कहा, कहो हम कहते थे न कि उल्टी लटकाई जावोगी। खुलासा यह कि दो-तीन घंटे तक थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसको दबाते और फिर कै होती रही और इतना पानी निकला कि हमें बड़ी परेशानी हुई। कै करते-करते बेचारी परेशान हो गई और हैरान हो जाने से हारारत-सी हो गई। उसको बड़ी बेचैनी थी और नौद न आती थी और घबड़ाहट और व्यास थी। हमने बड़ी कठिनाई से उसको थपक-थपक कर और सिर सहला-सहलाकर सुलाया। सबेरे उठी तो तबियत रात की तर्फीलीफ के कारण बहुत ही सुस्त और कमजोर थी।

हम कचहरी से लौटे तो देखा, कि चारपाई पर चादर ओढ़े लेटी हुई है। हम जानते थे कि कि अवश्य जाग रही होगी और बन कर पड़ी है। अतः हमने आते ही गुदगुदाया। उसने हँसते हुये चादर को जब मुँह से हटाया तब हम क्या देखते हैं कि चेहरा तमतमाया हुआ है और लाल हो रहा है। हमने मस्तक पर हाथ रख कर देखा तो बुखार था।

जब चाँदनी को बारी से बुखार आने लगा। बुखार बन्द हुआ तो फिर और तबियत खराब रहने लगी। हमने हकीम के इलाज की सलाह दी। वह न आने कयों हकीमों के इलाज के खिलाफ थी। कठिनाई से राजी हुई। दूसरे दिन हमने हकीम साहब को बुलवाया। ये हकीम वास्तव में कुछ यों ही से थे ! चाँदनी ने जब उनको देखा, तब और भी बुरी राय कायम की। हकीम जी ने हाल पूछा और ब्योरेवार हाल सुना। हाजमें का जब हाल पूछा, तब उसको शरारत सूझी। उसने उनसे कहा,

कि हाजमा तो मेरा आब-कल ऐसा है कि चाहे जो खाऊँ, वह सब हजम होकर पूरा-पूरा खून बन जाता है। इस तरह कि पाखाना तक नहीं बनता। इकीम साहब की समझ में न आया कि वे उसको खान-बूझकर अनजान बनी हुई समझें, या वास्तव में यह समझें कि रोगी भ्रान्ति में है। बहरहाल उन्होंने पहले तो दवा के सम्बन्ध में दुहराया, फिर नुसखा लिखा। चाँदनी ठठ कर दो छोटे रुपये निकाल कर लाई, जिसे हमने उनके भेंट किये। हमें उसका पता बाद में लगा, और हमने छोटे रुपये लौटा लिये। इकीम जी का नुसखा उसने फौरन फाड़ डाला और फिर डाक्टरों इलाज शुरू कर दिया, जिसमें कुनैन का इस्तेमाल अधिक था, किन्तु शीघ्र ही आराम हो गया। डाक्टर साहब ने हमसे कहा था, कि यदि नैनीताल इनको ले जाओ, तो बहुत शीघ्र तबियत ठीक हो जायगी। अतः हमने उससे वादा कर लिया कि तुमको अवश्य नैनीताल की सैर करायेंगे।

२

इन दिनों कुनैन के प्रयोग से न जाने चाँदनी को क्या हो गया ? पहले ही अपनी शरारतों में क्या कम कुनैन का इस्तेमाल करती थी; और अब तो मानों वह पागल हो गई। एक बड़े बोलल में, उसने सैकड़ों प्रेन कुनैन घोल-घोल कर बहुत तेज मिक्सचर तैयार कराया और पुड़ियाँ अलग थीं। शक्कर में मिली हुई कुनैन अलग रक्खी गई, और यह सब केवल शरारत की नियत से। समय-समय पर हमारे दोस्त ही अभ्यास की पट्टी नहीं बनते थे, बल्कि हम और बहुधा दूसरे लोग भी शरारत का शिकार बनते थे, और फिर उनमें कुछ ऐसे भी होते थे, जिनसे सजाक करना अभिष्ट ही न होता था। हमारी बाहर की आल-मारी में खाने-पीने की चीजें रक्खी रहती थीं। हम तो केवल

समय पर बीबी के साथ ही खाते थे, और वह स्वयं निकालती थी। किन्तु हमारे यार-दोस्त प्रायः बेवक्त उस पर डाकेजनी करते थे। एक दिन की बात है कि एक साहब इस आलमारी पर हमला कर बैठे। उन्होंने एक बिस्कुट लेकर, कुछ रसभरी का जाम चढ़ाकर, उसे जब खाया, तब बस बल खा गये, और थूकते फिरे। दौड़कर बरामदे से सुराही लेकर जब कुल्ली की, तब और भी आनन्द आया। वहाँ एक की जगह पर आज दो सुराहियाँ रखी थीं; और उनमें से एक में कुनैन घुती हुई थी। हमने देखा कि इस सुराही पर एक लेबिल लगा है, कि यह पानी पीने का नहीं है। हम भीतर पहुँचे कि बीबी से इस नालायकी का कारण पूछें, तो यहाँ दूसरा ही रंग था। वह खड़ी हुई मुर्गियों को घेर कर धीरे-धीरे पानी के कुण्डे की ओर जा रही है। हम जब आये, तब मुर्गियाँ कूद-कूद कर भाग गईं। प्रथम इसके कि हम कुछ कहें, वह हम पर बिगड़ने लगी कि मुर्गियाँ क्यों भगाईं? हमने कहा, आखिर क्या हुआ, तो वह कहने लगी, 'हम इन्हें पानी पिलाने लाई थीं।' हमने कारण पूछा तो हँसने लगी। मालूम हुआ कि मुर्गियों के कुण्डे में कुनैन मिलाकर रक्खी गई है। हमने उससे कहा कि आखिर यह क्यों तू इस प्रकार आलम बन गई है कि जानवरों तक को परीशान करती है, और फिर शिकायत की कि आखिर यह कैसी बेवकूफी है कि खाने-पीने की चीजों, और पीने के पानी में भी कुनैन मिला दी। उसने कहा, इसलिये कि हर आदमी न खायें और सुराही में इसलिये मिलाई, कि देखूँ दिन में कितने अकलमन्द आते हैं और कितने बेवकूफ। क्योंकि सुराही पर लिखा हुआ है कि यह पानी पीने का नहीं है। फिर भी लोग न मानें तो किया क्या जाये? हम खदे बातें ही कर रहे थे कि

नौकर लड़का कुत्ते को बुलाकर लाया। उसका खाना उसके बरतन में रक्खा हुआ था। हमने कहा, यह क्या मामिला है, कि कुत्ते को इस समय खाना दिया जा रहा है तो कहने लगे तुम रहने दो। हम हँसी से समझ गये। बेचारे कुत्ते ने जो बेजी से रोटी और दूध खाया, तो वह थूकता फिरा और चाँदनी तमाशा देखकर पागलों की भाँति हँसी के मारे लोटता फिरा। हम भी, हँसने लगे कि कैसी अजीब बीबी हमें मिली है। इतने में दौड़ी गई, और एक रकबी लाई। उसका खोलकर जब दिखाया, तब हम क्या देखते हैं कि अण्डों का लाजबाब हलुआ है। केसर और केवड़े की महक से दिमाम तर हो गया। चाँदी के बर्तन लगे हुये हैं, बादाम और पिस्ता के छोटे-छोटे टुकड़े छिड़के हुये हैं। हमने कहा, यह ताँ बड़े जोर की चीज तुमने तैयार की है। हमें बिलकुल खयाल न आया कि इस नालायक ने इतने पैसे बरबाद करके उसको भी कड़ुआ कर डाला है। फौरन एक कौर डाल ही तो लिया। वह प्लेट रखकर हँसी के मारे बेदम होकर लोट पोट होकर कमरे में पलंग पर जा पड़ी। हमने गला कड़ुवा होने से पहले ही मूट थूक दिया, और उसको इस शरारत की सजा के लिए गुदगुदा के बेदम कर दिया। तात्पर्य कि दिन रात उसको अब कुनैन के मजाक सूझते थे। वह कहती थी, कि मेरा काबू नहीं, जो बाजार की सभी मिठाइयों में कुनैन मिला दूँ। तात्पर्य कि कुनैन खिलाने का अभ्यास आज-कल जोरों पर थी, किन्तु हम नहीं जानते थे कि कुनैन का यह खूबत अभी क्या-क्या रङ्ग लाने वाला है ?

चलना है, तो कुनैन खिजाने की आदत को कम करो; नहीं तो तेरा वहाँ जाना बिलकुल स्थगित हो जायगा। इस पर उसने कहा, यदि कहीं ऐसा हो गया, तो फिर समझ लो कि सारे घर में कुनैन ही कुनैन दिखाई पड़ेगी। नैनोताल जाने की तैयारी उसने बड़े जोर से की। सामान यद्यपि थोड़ा था, किन्तु कुछ गरम कपड़े भी थे। चलते समय हमने देखा, कि एक ढिन्वा पान बनाने की जगह पर पान के दो ढिन्वे तैयार हो रहे हैं। हमें मालूम न था कि एक में कड़ुवे पान हैं। नहीं तो हम उस शरारत को रोक देते। केवल पानी के कारण वास्तव में गाड़ी में ऐसी देर हुई, कि हम टिकट तक न खरीद सके और कठिनार्थ से चलती गाड़ी में सामान इत्यादि जिस तरह हो सका रखकर एक मरदाने ज्योदे ढिन्वे में बैठ गये, जो संयोग से सामने ही था। इसमें काफी गुञ्जाइश थी, और चाँदनी ने मूट खोलने के लिए कहा। हमने कहा कि यह इन्टर क्लास है। इस समय खाली है; किन्तु आगे चलकर कदाचित् भर जाये। किन्तु उसने कहा, कि नहीं। जब जगह काफी है, तब बेकार क्यों ज्यादा रुपये खर्च किये जायँ। बात यह थी कि यह ढिन्वा बहुत बड़ा था और आदमी केवल तीन ही थे। इसमें अधिक क्या जगह मिलती! किन्तु हम जानते थे कि आगे चलकर अवश्य मुसाफिर आयेंगे और आरक्ष्य नहीं कि सोने को भी न मिले। उसने कहा, कि बिश्नूने ऊपर की जटकी हुई बेंच पर लगा लो, जिससे कि फिर सब ऋगड़ा ही जाता रहे। अतः हमने यही किया। एक पर उसका विस्तर लगाया और उसके नीचे जो सीट थी, उस पर हम बैठ गये। क्योंकि हमें अभी अगले स्टेशन पर टिकट खरीदने थे। बीबी को तो हमने ऊपर बढ़ा दिया और वह आराम से तकिया लगाकर लेट गई।

अगले स्टेशन पर मौका न मिला। किन्तु हमने गार्ड से कह दिया। दूसरे स्टेशन पर हम टिकट लेकर जब लौटे तब क्या देखते हैं कि एक भारी-भरकम लाला साहब हमारी सीट पर कब्जा किये विराजमान हैं। उनका ढेर का ढेर सामान ऊपर नीचे सब रक्खा हुआ था। हमने कहा कि हजरत दूसरी जगह खाली होते भी आपने हमारी जगह क्यों ले ली? वे कहने लगे, कि मैं कोने की जगह चाहता था। हमने दूसरी कोने वाली जगह बताई, तो उन्होंने कहा कि वहाँ पाखाना है। जब हमने कुछ और बहस की तब वे बोले कि हजरत आपका नाम तो इस जगह पर लिखा न था और न आपने अपनी जगह रजिस्टर कराई थी। जितना हक आपका है, उससे अधिक मुझको है। हम चुप हो गये।

यद्यपि डिब्बा काफी बड़ा था, किन्तु धीरे-धीरे मुसाफिरों की भीड़ होनी शुरू हो गई। हमने देखा कि हमें नींद आ रही है। और हमने सोचा, कि यदि मुसाफिरों के आने का यही क्रम जारी रहा तो हम नीचे आराम से न सोयेंगे। अतः हमने उस ऊपर वाली लटकी हुई बेंच पर बिछौना लगाया, जो चाँदनी की जगह से बिलकुल मिली हुई थी। वास्तव में बीच में एक खिड़की का अन्तर था। हमें नींद आने हो वाली थी कि नीचे कुछ राजनैतिक मामलों पर बात-चीत होने लगी। चूँकि हमारा भी राजनीति में काफी अधिकार है इसलिए हम बहस करने के लिए नीचे आ गये। हम तो राजनैतिक बातों पर बहस कर रहे थे, किन्तु हमारी शरारत भरी बीबी अपने नियमानुसार कुछ और ही कर रही थी। वास्तव में उसको अपने नीचे की मंजिल में रहने वाले मुसाफिर पर बहुत क्रोध आ रहा था। और वह बदला लेने की चिन्ता में थी। उन हजरत ने एक

स्टेशन पर कुछ खाने का प्रबन्ध किया। सबसे पहले अपने लोटे में पानी भर कर रक्खा। बाँदनी ने जेब से छोटी शीशी निकाल कर उसमें कुनैन का तरल सत्त इस सफाई से ऊपर ही से टपका दिया, कि उन्हें कानों कान खबर तक न हुई। क्यों कि वे खराद-फरोख्त में लगे हुये थे। वे उठ कर बाहर गये, और खिड़की में से अपनी जगह पूरियाँ और तरकारी खराद कर रक्खी और मिठाई वाले से बात-चीत करने लगे। इतने में उस चुलबुली ने पूरियाँ के साग को भी कड़वा कर दिया। लोग इस तरह बातों में लगे थे, कि उसने ऊपर से चुपके से शीशी में स बूँदें टपका दी, और किसी को पता तक न चला।

हम बड़े आनन्द से राजनीति पर बहस कर रहे थे, कि जोर से थूकने और 'खा खा' की आवाज आई। मुड़कर देखा तो लाला साहब चलती गाड़ी से सिर बाहर निकाले थूक रहे हैं। लोटा लेकर जब कुल्ली की तब और भी मजा आया। बुरी तरह खँखार कर थूक रहे थे। हमने पूछा कि हजरत यह क्या बला है, तो वे बहुत व्यादा परेशान हो कर थूकते हुये बोले, कि साहब, मालूम होता है, पूरी वाले ने मुझे जहर दे दिया। किन्तु पानी कैसे कड़वा हो गया, यह बात किसी की समझ में न आई।

हमने मन में कहा, अरे गजब हो गया। क्यों कि हम समझ गये कि यह किसकी कारगुजारी है। वह अपनी चादर के एक किनारे से भाँक कर तमाशा देख रही थी। जैसे ही हमने उसकी आंर देखा कि उसने मुँह ढक लिया। लाला साहब ने पूरियाँ आंर साग फेंक दिया और पानी भी फेंक दिया। किसी की समझ में न आता था कि यह क्या बात है। लाला साहब मिठाई पर सन्तोष करके रुमाज से मुँह पोंछ करके लेट गये।

लाला साहब के सिरहाने एक बक्स रक्खा था, उस पर एक बण्डल था, और उसके ऊपर एक टोकरी रक्खी थी। वे उठे और उन्होंने उसमें से एक बड़ा-सा खुशबूदार अमरुद निकाल कर खाया और फिर उसी प्रकार लेट गये। हम फिर बातें करने में लग गये। जब थक गये और नीचे काफी मुसाफिर भर गये, तब हम अपनी जगह से सोने के विचार से उठे। नीचे की बेंच पर लाला साहब बेखबर सो रहे थे। हम चाँदनी के पास आये, और हमने उसके कान में उँगली डालकर कहा—“यदि तू शरारतों से बाज न आई, तो अवश्य इस सफर में कहीं मारी-पाटी जायगी।”

हम अपनी जगह पर चढ़ गए। हम लेटे ही थे, कि हमारी पीठ में कोई गोल-गोल चीज गड़ी। हमने जब उठकर देखा, तब तीन बड़े-बड़े इलाहाबादी अमरुद पाये। हम भट समझ गये कि इसने उस टोकरी में से अमरुद चुराये हैं। हमने जब उधर देखा, तब वह धीरे-धीरे हँस रहा थी और उँगली के इशारे से चाकू माँग रही थी। वह वास्तव में चादर में मुँह लपेटे हुए अमरुद कतर कर खा रही थी। हमने चाकू निकाला और अमरुद काट करके बीबी को दिया। अमरुद की टोकरी उसके पैताने के पास थी, और उसने अब अपना सिर उस ओर करके धीरे-धीरे टोकरी से अमरुद निकालना शुरू किये, क्योंकि टोकरी का मुँह ऊपर के तख्ते के बिनकुल मिला हुआ था। लाला साहब को पता ही न था कि क्या हो रहा है। उसने एक-एक करके हमारे ऊपर अमरुद फेंकना शुरू किये। हम इशारे से कह रहे थे कि तू अवश्य मारा जायगी, और वास्तव में हम बहुत घबड़ा रहे थे कि कहीं यह चोरी करने में पकड़ी न जाय! एक-एक करके उसने सभी अमरुद निकाल

लिए और हमसे इशारे से कहा, कि नीचे लोगों को बांट दो। हमने फिर देखा, और अमरुदों के मालिक साहब को बेखबर सोता हुआ पाया अतः हमने झट उतर कर स्वाभाविकता के साथ सभी लोगों के हाथ में दो-दो अमरुद दे दिये, और शेष सबके बीच में एक बेंच पर रख दिये कि खाइये। उनमें से एक साहब चाँदनी का यह सभी शराबते कदाचित् देख रहे थे। क्योंकि वे काने में बैठे हुए धीरे-धीरे मुसकुरा रहे थे। चाँदनी ने उनको देखा और वह समझ गई। अतः उसने उँगली से चुप रहने के लिए कहा, और वे हँसकर सिर हिलाने लगे कि मैं न बताऊँगा। हम पहले की भाँति अपनी जगह पर आकर लेट गये। नीचे लोग बड़े आनन्द के साथ अमरुदों की दावत खा रहे थे, कि स्टेशन आया, और रेल के झटके से लाला साहब जाग उठे। वे हजरत, जो उस कोने में बैठे थे और इस शराब से परिचित थे, एक सहब से बोले, कि जनाब लाला साहब को भी अमरुद खिलाइये। लोगों ने जब उनसे कहा, तब कहने लगे कि मेरे पास स्वयं इलाहाबाद के अमरुद मौजूद हैं। एक साहब बोले कि अच्छा होता यदि आप कम से कम अपने अमरुदों का नमूना ही चलाते। उन्होंने मुसकुरा कर कहा— 'बड़े शौक डेटोकारी से निकाल लीजिये।' एक साहब उठे और उन्होंने टोकारी में हाथ डालकर उसको खाली पाकर कहा, 'वाह जनाब! आप अच्छा मजाक करते हैं। यहाँ तो पता तक नहीं है।' यह सुनकर वे तड़पकर उठे, और टोकारी को खाली पाकर चाँदनी की ओर देखा जो इस समय अमरुदों की टोकारी की ओर पैर किये हुये और चादर ओढ़े हुए मानों बेखबर सो रही थी। उनकी इस परीशानी पर कदाचित् लोग इस मामले को समझ गये और एक अच्छा कहकहा लगा। बेचारे यह कह

कर अपनी जगह पर बैठ गये कि यह मजाक ठीक नहीं।

सबेरे हम बरेली के स्टेशन पर उतरे। सामान बेटीङ्ग रुम में रखवाया। नाश्ता किया और बरेली शहर की खूब सैर की। दोपहर को लौटकर खाना स्टेशन पर खाया। जब चाँदनी को मालूम हुआ कि खाने के दाम पूरे साढ़े सात रुपये चार्ज होंगे, चाहे हम सब खायें या थोड़ा, तब उसको बड़ा क्रोध आया। वस्तव में सबेरे नाश्ता अधिक करलिया था, और इस समय कुछ खाया न गया। हमने देखा भी नहीं और, जब हम हाथ धो रहे थे तब उसने बचा हुआ सब खाना कुनैन से खराब कर दिया। केवल इतना ही नहीं किया, बल्कि हम तो खाने की कीमत चुकाने में लगे, और उसने अवसर पाकर बाहर के बरामदे में अँगीठी पर चाय की जो बड़ी केतीली रखी थी, उसको भी खराब कर दिया। हम दोनों शीघ्र फिर शहर चल दिये। दो चार मेजें और कुर्सियाँ खरीद कर घर भिजवाई और फिर विभिन्न स्थानों की सैर करने चले गये। चिराग जलने के बाद बड़ी देर में स्टेशन पर लौट कर आये और हमें यहाँ आकर मालूम हुआ कि होटल के नौकरों ने खाना खाकर खूब थूका, और इसके अतिरिक्त कई मुसाफिरों को कड़वी चाय पिलाने के कारण यह किस्सा तूल पकड़ गया। यहाँ तक कि एक अँगरेज ने होटल के बेहरे को मारते-मारते छोड़ा। हम चुप थे और हमने बिगड़ कर चाँदनी से कहा, कि मालूम होता है कि तेरी बिलकुल शामत आगई है, और तू स्वयं मार खायेगी और कदाचित् हमें भी पकड़ावेगी। वह भी केवल अपने जुल्म के बदौलत कि न स्वयं खाये और न किसी को खाने दे। आखिर इससे क्या लाभ ?” हमारे इस लेक्चर का प्रभाव रफ़्टा पड़ा और वह कहने लगी कि तुम्हारी बला से। हम

मारे जायँ, तुम हमको न बचाना ।' हम तो एक जगह बैठ गये, और वह मल्लाकर प्लेटफार्म पर सीधी टहलने चली गई। सबसे पहले उसने यह जुल्म किया कि मुसलमानों के पानी वाले घड़ों का मुआइना करके सारा पानी कड़वा कर दिया। इसके बाद तो और भी ग़ज़ब किया, और वह यह कि रेलवे अफसरों के कमरे के आगे एक सुराही रक्खी थी। इसको भी कड़वा कर दिया। वहाँ से वह सीधी हिन्दुओं के पीने के पानी के पास गई, किन्तु वहाँ कड़ा पहरा था। वह वहाँ घूम ही रही थी कि हम भी पहुँचे और चूँकि शरारत उसके चेहरे से प्रकट हो रही थी, अतः हम समझ गये और उसको पकड़ लाये, और कहा कि कम्बख्त तुम्हको आज यह क्या हो गया है। क्यों मार खाने की बातें कर रही है, किन्तु यह सब व्यर्थ था। क्योंकि वह फिर हमारे पास से सरक गई और अब उसने एक दूसरी ही शरारत की। जरा कुछ अलग जगह में खड़ी होकर पान वाले को बुलाया। उससे दो आने के पान लिये और हमारे लिये खाम खाह सिगरेट की डिबिया खरीदी। और उसको दस रुपये का नोट दिया। उससे यह पूछ लिया था कि उसके पास पाँच के नोट के रुपये हैं। पाँछे कहा कि पाँच का नोट नहीं, दस का है। खोचा रखकर नोट के रुपये लेने गया। और यहाँ उसने कत्था और चूना बिलकुल कड़वा कर दिया हमें इसका बिलकुल ज्ञान न हुआ। शरारत करके वह लौट आई, और मुसकरा रही थी हमने कहा; क्या कहीं नया शिगूफा छोड़ा है? क्योंकि उस समय उसके चेहरे और आँखों से शरारत टपक रही थी। हमने जब आग्रह किया, तब उसने कहा, कि "मैंने कुछ नहीं किया है। केवल पान वाले से दो आने के पान और तुम्हारे लिये सिगरेट ले आई हूँ।" हमने चौंकर कहा, कि

क्या तूने पान वाले के साथ भी कुछ किया ? इस पर उसका हँसी के मारे बुरा हाल हो गया, और उसने धीरे-धीरे सब हाल सुनाया । हमने कहा कि अब तू बिलकुल पुलिस के द्वारा पकड़ ली जावोगी । यह बहुत बड़ा अपराध है । हमने बड़ी ही मनुष्यता के साथ इन सभी शरारतों की कठिनाइयों को बताया; और कहा कि अब यदि तूने ऐसा किया तो तेरा कुशल नहीं है । वह कुछ राजी होकर बोली कि यदि बहुत ज्यादा आवश्यकता पड़ी तो मैं करूँगी, नहीं तो न करूँगी । फिर ठठकर जाने लगी, तो हमने पकड़ लिया कि अब हम तुम्हें न जाने देंगे । हमारे पास बैठी रह । क्योंकि तू फिर शरारत करेगी । उसने हमसे बहुत कुछ वादा किया, किन्तु हमने न छोड़ा, तो उसने कहा कि मैं अपना वादा वापस लेती हूँ । हमने एक न सुनी । रात का समय था । अतः हमने कुछ मामूली नाश्ता और चाय बेटिङ्ग रूम में मँगवाई । चाय आई और हमने दो प्यालियाँ ली । हम चम्मच से चाय में शक्कर मिला रहे थे । और कुल्ली के लिये पानी मँगवाया था । क्योंकि पान खा रहे थे, हम बाहर से कुल्ली करके आये, तब हमने अपनी शरारत से भरी हुई बीबी के चेहरे पर वह खामोशी देखी, जो बहुत ही गहरी शरारत से सम्बन्ध रखती थी । हमने जब प्याली की ओर देखा, तब हम समझ गये, कि यह चुलबुली कदाचित्त अब हमारे ऊपर हाथ साफ कर रही है । हमने ध्यान से जो चेहरा देखा, तो हमारा सन्देह और भी दृढ़ हो गया, और वह हँसने लगी । हमने कहा, “क्या पागल बन गई है ? क्यों हँसती है ?” इस पर वह और हँसी और पान वाले का किस्सा कहने लगी । हम उसी प्रकार चाय चला रहे थे और हमारा सन्देह कुछ मिट

गया था, और हमने चाय की प्याली पीने के लिये उठाई, कि उसको फिर हँसी आई, जिसको उसने थूकने के बहाने से टालना चाहा। वह अँगोठी में थूकने के लिये उठी। और उधर हमने अबसर पाकर, बचाव की दृष्टि से, इस सफाई से चाय की प्याली बदल ली, कि उसको सन्देह तक न हुआ। हम इस चाय से इस तरह खेल रहे थे कि जैसे उसके ठंडे होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि उसने अपने आगे की चाय की प्याली उठाई जो हमारे लिये कुनैन के द्वारा जहर के समान बना कर रक्खी गई थी। और पहले ही घूँट में बस उसको मजा मिल गया चाय गरम न थी, और चूँकि उसको सन्देह भी न था, अतः एक बड़ा घूँट उसने ऐसा पी लिया कि गले के पार हो गया। क्या बताये कि हमने कैसे झुक-झुककर सलाम किये और कैसे मजा आया। उसका भी हँसी के मारे वह बुरा हाल था कि थूकना मुश्किल हो गया।

४

इसके बाद हम प्लेट-फार्म पर आये, और थोड़ी देर में काठ गोदाम वाली गाड़ी आ गई। हमने अपना सामान एक दूसरे दर्जे के एक डिब्बे में लगवाया, जो-बिलकुल खाली था। हम उस पान वाले का तमाशा देखने के लिये गये, जिसके कस्थे और चूने को चाँदनी ने कड़वा कर दिया था हमें अधिक खोजने की परीशानी न उठनी पड़ी, क्योंकि बहुत शीघ्र हमने देखा कि एक पान वाले से कुछ लाग लड़ रहे हैं। दूधरे लोग झगड़ा सुनकर और आ गये और इनमें से कुछ और ऐसे थे जो कहते थे, कि हमारा पैसा वापस कर। क्योंकि तूने हमारा पान कड़वा कर दिया। हम तो इस मनोरंजक झगड़े को देखकर अपनी बीबी की शरारत से आनन्द-पूर्ण हो रहे थे, और उधर हमारी

जन्म-जात नेक बीबी कुछ और ही कर रही थी। एक सालन रोटीवाला मुसलमान हमसे तकाबा कर चुका था, कि हम उसके गन्दे सौदे में से कुछ खरीदें। हालाँ कि चाँदनी ने कई बार उसको टाल दिया, किन्तु वह न माना और विवश होकर उसने उससे कहा, कि अच्छा एक प्याले में थोड़ा सा निकाल कर हमारे सामने नमूने के तौर पर रखो। हमारी सीधी-सादी बेगम साहिबा ने नमूना खिड़की से भीतर लेकर बिजली की रोशनी में देखा, और ना-पसन्द करके लौटा दिया। उस बेचारे को क्या मालूम थी कि कारगुजारी की गई है। उसने झट अपने बड़े बरतन में फिर डाल लिया। हम पानवाले का तमाशा देख कर लौट रहे थे कि एक बड़ोढ़े दर्जे के मुसाफिर से और उस बाबरची से झगड़ा होते हुये देखा। हमने देखा कि गजब हो गया। हम जब अपने डिब्बे में लौट कर आये, तब देखा कि किसी दूसरे साहब का सामान रक्खा है और बेंच पर चाय के लम्बे बरतन में कुछ मक्खन टोस्ट और चाय रक्खी है। हमने धीरे से बीबी से कहा, “अरे तू यह क्या जुलम डा रही है।” वह इस समय पूरी परदा-नशान बीबा बनी हुई थी और बुरका अंड़े बैठे हुई थी। उसने यह इस गरजसे किया था, कि यदि कोई भला मानुस हो तो उसको देखकर कदाचित न आये। किन्तु एक साहब फिर भी आ गये। वे डिब्बे के बाहर खड़े हो कर कुछ मिम्कें। पहले ता कहाँ कि यह जनाना डिब्बा नहीं है इस पर चाँदनी बोली, कि ‘जनाब। जनाना डिब्बा है।’ उन्होंने कहा कि “आप मेहरबानी करके जनाने डिब्बे में चली जायँ।” चूँकि उसने इतकार किया, अतः उनके नौकर ने उनका सामान इत्यादि रख दिया। वह चाय मँगवाकर किसी दूसरी जगह बतेंकरने में लगे थे। उनकी गैरमौजूदगी में, यह कहना व्यर्थ

है कि उनकी चाय के साथ चाँदनी ने क्या कार्रवाई की। इसी पर सन्तोष न किया, बल्कि उनके लौटे में, जो खाली था, का भी मात्रा डाल दी और फिर जुल्म यह ढाया कि उनकी बर्फ रखने की बोतल में भी कुनैन डाल चुकी था, जो कि हमें बाद में मालूम हुआ। इतने में वे हजरत आये। बहुत ही सज्जन थे। हमसे दो-एक बातें हुई, और हमें चाय पर बुलाने लगे। केतीली में से चाय उँडेलते हुये उन्होंने हमसे कहा, कि साहब। यहाँ स्टेशन पर आज विचित्र ही मामिला है हमने पूछा, “वह क्या ?” तो उन्होंने कहा, कि एक पानवाले से बहुत से आदमी झगड़ा कर रहे हैं। हमने कहा, “क्यों ?” तो वे हँस कर बोले कि साहब बड़ा मजा आया !

“क्या मजा आया ?” हमने पूछा।

“अजी जनाब, तमाम लोगों के मुँह उस पानवाले ने कड़ुवे कर दिये।” उन्होंने अधिक हँसते हुये कहा और अब उससे सब लोग लड़ रहे हैं। फिर इसके आतिरिक्त सालन रोटी वाले को भी दो-तीन आदमी घसीट रहे हैं, कि सब सामान कड़ुवा है। यही नहीं, बल्कि सारा बरेली कड़ुवा हो रहा है, कहकहा लगाकर चाय में शक्कर मिलाते हुये उन्होंने कहा।

“क्या और भी कोई किस्सा हुआ ?” हमने बनकर पूछा। अजी तमाम मुसलमानों के पीने का पानी कड़ुवा हो रहा है। और वह मजा आ रहा है कि हँसते-हँसते लोट..... खड़प, खा थू !

चाय की प्याली का घूंट उन्होंने क्या लिया, कि गले में वह कठोर फन्दा पड़ा कि थूक रहे थे। हमने कहा, “हजरत यह क्या हुआ ?” ये वे बड़ी अच्छी तबियत के, बेतरह हँसे और दोहरे हो-हो गये और कहते गये, कि साहब ! मालूम होता है

किसी कातिल ने चाय वाले पर भी हमला कर दिया। यह देखिये सारी चाय कडुवी है। यह कहकर नौकर को बुलाया कि चाय वाले को बुलाओ। उसने आश्चर्य में आकर कहा, साहब क्या बतायें कि आज दोपहर में न जाने क्या हो रहा है कि कई मुसाफिरों ने मारते-मारते छोड़ा। यह बेचारा चाय लौटाए ले गया। इतने में नौकर उनका खाली लोटा भरकर लाया और उन्होंने कुल्ली जब की तब और भी थूकने लगे। कइने लगे कि यह क्या मुसीबत आई ! मालूम हुआ कि नौकर नल से पानी लाया था। सारांश, कि विचित्र परेशानी में थे। बाहर निकले तो मालूम हुआ, कि रेलवे पुलिस इन्स्पेक्टर इसी जाँच कर रहा है। हम सजाटे में आ गये और हमने घबड़ाकर बीबी के कान में कहा, कि लो आज तू गिरफ्तार की जायगी। चाँदनी इत्यादि से कभी न डरती थी, किन्तु इस समय सचमुच वह चुप हो गई। हम दोनों फिर आकर बैठ गये और ये हजरत, जो वास्तव में कौंसिल के मेम्बर थे, इस कडुवे मजा पर खूब हँस रहे थे। इतने में उनके एक दोस्त आये और वे भी बैठ गये। उनके साथ पानी की बहुत-सी बोतलें थीं। उनके दोस्त ने एक बोतल उठाई और उसको गिलास में खोलकर बर्फ की बोतल में डालकर फिर गिलास में लेकर के जब पिया, तब क्या बतायें, वह किस प्रकार कूदे ? गिलास छोड़कर कूद रहे थे। उनके दोस्त का और हमारा हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। अब ये हजरत विचित्र चक्कर में थे। कहने लगे कि ये बोतलें और बर्फ तो शहर की हैं। इनमें कहाँ से कड़वापन समा गई ? हमारी बीबी गरीब और बेचारी बनी हुई बुरका ओढ़े अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी जैसे उसको इससे कुछ

मतलब ही नहीं है। हमने उससे पान की डिब्बिया माँगी, उसने हैड-बेग में बताई। हमने उसमें से डिब्बिया निकाली और इन दोनों के सामने पान किये। वे हजरत हँसकर कहने लगे, कि “जनाब कहीं इन पानों में भी तो मुमीबत नहीं है।” हमने कहा कि साहब यह तो हमारे घर के है। उन्होंने एक पान लिया और एक उनके दोस्त ने लिया। वास्तव में हमें मालूम भी न था, कि एक डिब्बिया कड़ुवे पानों की है। और हमने भी एक पान मुँह में रख लिया। शीघ्र ही सबको थूकने पड़े और उत हजरत का तो हँसी के मारे बुरा हाल था और कहते थे कि यह आखिर मुमीबत क्या है कि चाँदनी ने बाज बना दी और कहा कि मालूम होता है, कि अपने रेशन वाले पान खाये। दूसरी डिब्बिया से लांजिये। हमने कुल्ली को और दूसरे पान खाये, कड़ुवे फेंक दिये।

५

हम खुदा खुदा करके नैनीताल पहुँचे और बीच में कोई बर्गन करने योग्य बात सामने न आई। हमारे साथ सफर करने वाले हजरत रह-रहकर रात में मामिलों पर विचार कर रहे थे और आश्चर्य के साथ हँस भी रहे थे। क्योंकि उनके दूसरे दोस्त, जो कौन्सिल की बैठक में सम्मिलित होने के लिये आये थे, कुनैन का स्वाद या तो स्वयं बरेली में ले चुके थे और या उनका तमाशा देख चुके थे। हर आदमी आश्चर्य प्रगट करता था कि आखिर यह किस तरह सम्भव है कि शहर से बोटल में बर्फ आये और वह कड़ुबी हो जाये ! हद हो गई, कि नल की टोंटी से कड़ुवा पानी निकले। तात्पर्य हम उससे विदा हुये।

हमने एक पूरा मोटर किराये पर लिया और उसमें बीबी

कुनैन का इस्तेमाल

को बैठाया और नैनीताल की चढ़ाई शुरू हुई। हमने बीबी को सचेत कर दिया कि यदि भविष्य में तू शरारत करेगी, तो निश्चय पुलिस में दी जायगी; किन्तु वह तो रात की घटनाओं के ऊपर हंसी के मारे बेकाबू थी। इस तरह उस चढ़ाई को हमने बड़े आनन्द के साथ समाप्त किया।

नैनीताल पहुँच कर हमने हिमालय होटल में डेरा डाला। दूसरे ही दिन से साधारण ढंग पर चाँदनी ने फिर कुनैन का प्रयोग जारी कर दिया। असम्भव था, कि चाय आये और शक्कर को छोड़कर वह दूध इत्यादि का कड़ुआ न कर दे।

प्रति दिन का नियम था; मोलों हम पैदल चلتे थे, और दिन भर सैर सपाटे में कटता। न जाने कब के और कहाँ के दोस्तों से भेंट हुई। और हम और हमारी बीबी जगह-जगह दावते खाते थे। कौन्सिल की बैठक देखने गये। यहाँ हमारे साथ सफर करने वाले दोस्त से भेंट हुई। हमने उनसे अपनी बाबी का कायदे के साथ परिचय कराया। ये भी विचित्र दिल्लगीबाज और मनोरञ्जक आदमी थे। आनरेबुल नवाब मुहम्मद युसुफ से, कौन ऐसा भला आदमी होगा, जो नैनीताल जाये, और किसी न किसी प्रकार परिचय न प्राप्त करे, या उनके चौड़े और बनावट पूर्ण दस्तरखान पर बिना बुलाये हुये तरह-तरह के अँगरेजी और हिन्दुस्तानी खाने न खा आये। ये हजरत भी उन्हीं के यहाँ ठहरे हुये थे। इनको बरेली की घटना इस प्रकार याद थी कि फिर चर्चा करके हँसने लगे, और कहने लगे, कि भई, वहाँ बहुत ही आनन्द रहा। किन्तु यह न मालूम हुआ कि आखिर किसकी शरारत थी। दो-तीन ही दिन में इन हजरत से काफी जान-पहचान हो गई। क्योंकि हम अवश्य कौन्सिल की बैठक देखने आते थे। चाँदनी को शरारत

किये हुये काफी दिन हो गये थे। अतः उसने फिर एक ऐसी शरारत कर डाली कि हम बहुत घबड़ा गये। कौन्सिल के रिफ्रेशमेन्ट रूम में वैसे तो कई बार गये, बल्कि प्रतिदिन जाने का मौका मिलता था, किन्तु एक दिन हमारी फरिश्ते की आदत वाली बेगम साहिबा को वहाँ भी अवसर मिल गया, और न मालूम किस प्रकार चाय, शक्कर और दूध को इस तरह कड़वा किया कि हमको भी पता न चला। पता तो हमें तब चला, जब कौंसिल के इन्टरवेल में वही हजरत हँसते हुये हमारे पास दौड़े आये, और कहने लगे, कि भाई होशियार हो जाओ! बरेली वाला आ गया! हमने कहा, क्या मामिला है, तो वे हमें और चाँदनी को कौन्सिल के रिफ्रेशमेन्ट रूम में ले गये, जहाँ कुछ थोड़े से आतरेबुल सदस्यगण मुँह की कड़वाहट दूर करने के लिए कुल्लियाँ कर रहे थे। हमने चाँदनी से धीरे से कान में कहा कि अब निश्चय तेरी शामत आ गई। अच्छा है कि यहाँ से भाग चल, अतः हम शीघ्र लौट आये।

जिस दिन हम जाने वाले थे, उसके एक दिन पहले कौंसिल के ये मेम्बर साहब हमें मील के किनारे मिले और हमने उनकी बार-बार चर्चा की, और उनकी तबीयत से खुश होकर यह उचित समझा कि उनसे इस कड़ुवाहट का भेद बता दें। अतः हमने उनसे चाँदनी की शरारत क लिये क्षमा माँगी, तो हक्का बक्का होकर खड़े रह गये और पूरी कहानी सुनकर कहने लगे, कि अब हम तुम्हें दो-तीन दिन न जाने देंगे। उन्होंने दो-तीन दिन अपने दोस्तों को जो या तो स्वयं बरेली के स्टेशन पर कुनैन के शिकार हुये थे, या दूसरों को देख चुके थे चाँदनी से मिलाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारी बीबी इस आनन्द करने की जगह से लोगों की आँखों से

बचने के लिए हमें लेकर ऐसे अदृश्य हुई कि लोग खोजते ही रह गये ।

६

वापसी में अभाग्य से कहिये या सौभाग्य से, हमारे एक दोस्त का साथ हो गया । उसकी बीबी पर्दे की बहुत ज्यादा पाबन्द थी और ये उनको तीसरे दर्जे में सफर कराते थे, और स्वयं सेकण्ड क्लास में सफर करते थे । और मजा यह कि बीबी के पास तक न भाँकते थे । नौकर या नौकरानी के द्वारा खबर मँगाया करते थे ।

हमने भी चाँदनी को तीसरे दर्जे में ठूँसा और कहा—
“ले, अब अपनी हैमियन के मुनाबिक सफर कर और दुर्घा आँकर भली औरतों की तरह मुँह लपेट कर बैठ ।” उसे मजबूरन बैठना पड़ा । हमारे दोस्त की बीबी बहुत शर्माती, खामोश और सीधी-मासी थी । हालाँकि वे उम्र में चाँदनी के बराबर ही थीं, मगर बेचारी को दुनिया का तजकबा बिल्कुल न था । हमारा उनका बरेली तक साथ हुआ । काठगोदाम से सुबह की गाड़ी में खाना हुए । हम कभी बीबी से मुलाकात कर आते थे, मगर हमारे साथी साहब दूर ही से खड़े होकर सिर्फ इतना देख लेते थे कि उनकी बीबी खिड़की का पट बन्द किये हैं या खोले ।

एक स्टेशन पर जानने छिन्ने के पास से कोई गुंडा निकला और उसने हमारे दोस्त की बीबी को, जो उस वक्त खिड़की खोले बैठो थीं, देखा, तो पास से गुजरने हुए कहा, “कहाँ जा रही हो ?” वह बेचारी धक से रह गई । मारे डर के उनका कलेजा काँपने लगा । बबराकर चाँदनी से कहने लगी—“बहन खुदा के लिए खिड़कियाँ चढ़ा लो, कोई बदमाश मुझसे ऐसा

कहकर चला गया।” हमारी तेज-तर्रार बीबी ने हँसकर कहा—“आपने बता क्यों न दिया कि बरेली जा रही हूँ।” वह बेचारी हँसने लगी, और कड़ने लगी—“मेरे मुँह से तो आवाज ही नहीं निकल सकती, मैं बहुत घबरा रही हूँ।” ये बातें हो ही रही थीं कि वह फिर खिड़की के सामने से गुजरा और उसने फिर वही कहा। दोस्त की बीबी घबराकर एकदम से खिड़की चढ़ाने लगी। इतने में वह चलते-चलते बोला—“यह गजब तो न करो।” इस पर बेचारी के हाथ पैर फूट गये। खिड़की हाथ से छुट पड़ी और वेदम होकर कोने में मुँह छिपा कर बैठ गई चाँदनी हँस रही थी, और वह चाँदनी से कह रही थीं कि इसी मारे तो खिड़की के पास औरतों का बैठना ठीक नहीं होता। दरअसल उसकी हालत काबिले रहम थी। चाँदनी दौड़ कर खिड़की के पास आई, मगर वह गुँढा जा चुका था।

हम जो अगले स्टेशन पर आये, तो उसने यह घटना सुनाई और दूर से उस शख्स को दिखाकर कहा “मालूम होता है कि आज उसकी शामत आई है।” हमने देखा, एक भामूली लफंगा-सा आदमी था। मैला पायजामा, टर्की टोपी और काली अचकन पहने था। वहाँ गाड़ी देर तक ठहरती थी। हम थोड़ी देर बाद ही चले आये। हमने अपने दोस्त से कहा, तो वे बेचारे कहने लगे—“क्या बतायें, बस, इसी मारे तो औरतों का सफर करना ठीक नहीं होता।” हमने कहा—“जनाब, आपने पर्दे की हद करके ही यह हाल कर दिया है, अगर आप अपने साथ बिठावें, तो क्या हर्ज हो?” मगर यह सब बेकार था क्योंकि हमारे उनके खयालात में जमीन-आसमान का फर्क था।

चाँदनी पर नटखटपन का भूत सवार हो गया। उसने पहले तो हमारे दोस्त की बीवी की बुझदिली पर खफा होकर सजा के तौर पर उसे एक कड़ुआ पान खिलाया। इसके बाद उसने देखा कि वही हजरत आ रहे हैं। वह खिड़की की तरफ मुँह खोले बैठी थी, पान की डिबिया उसके हाथ में थी। जैसे ही वह पास आया, वैसे ही हमने डिबिया खोली। गुण्डा मुसकुराकर बोला “अकेले-ही-अकेले ?” चाँदनी ने फौरन एक पान उसे दे दिया, जिसे उसने फौरन ले लिया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वह हजरत नल पर खड़े थूक थूककर अपनी चोंच साफ कर रहे हैं, क्योंकि सारा मुँह कड़ुआ हो रहा था।

वह हजरत जले मुने फिर लौटकर आये और पान की कड़ुवाहट के बारे में चाँदनी से कोई बेहूदा शब्द कहा। उसने डाँटकर कहा—“शराफों की-सी बातें करो। उसे बेइद गुस्सा आ रहा था। हमारे दोस्त की बीवी का यह बात देखकर जो हाल हुआ, यह बयान से बाहर है। आज चाँदनी ने उसे पान दिया, तो वह कहने लगी—“भगर तुम्हारे मियाँ देख लेते, तो क्या हाता ?”

चाँदनी ने कहा—“कुछ नहीं। इसमें क्या दर्ज है ?” वे कहने लगी—“बुरा के लिए रहने दीजिय, बरना बदमाश और भी पीछे पड़ जायगा।”

इतने में वह फिर आया और उसने पहले से भी ज्यादा कोई बेहूदा बात कही। चाँदनी मारे गुस्से के काँपने लगी। उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। नैनीताल में हमने उसे सीप के हैंडिल का एक बढ़िया-सा छाता साढ़े सात रुपये में ले दिया था। उसने आव देखा न ताव, छाता लेकर गद्दी से

उतरी और पीछे से उस गुन्डे के सिर पर एक हाथ जोर से मारा। उस ने जो मुड़कर देखा, तो एक डाँट बताकर जो छूँते मारने शुरू किये, तो एक गुल मच गया। लोगों ने समझा, इस शरूब ने न जाने क्या बदमाशी की होगी। चारों तरफ हुल्लड़-सा मच गया। पास में एक अँगरेज मुस्माफिर खड़ा था उसने उसे पकड़ लिया। चाँदनी अपनी गाड़ी में चला गई और वह गुन्डा पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। हम चाँदनी के पास आये, जो इस जंग के बाद गुस्से से काँप रही थी। उसके ओठ सूख रहे थे। हमारे दोस्त की बीबी कोने में सहमी बैठी थी। हमने चाँदनी की पीठ ठोंकी और कहा—“शाबाश, खूब किया।”

७

बरेली स्टेशन पर हमारे दोस्त हमारी बहादुर बीबी की तारीफ मगर ऐतराज के साथ—करते हुए विदा हुए। इतने में एक पुलिस सब-इन्स्पेक्टर साहब आये और उन्होंने हमारा पता वगैरह लिखा। वे कहने लगे—अगर आप को ऐतराज न हो, आप की बीबी का नाम भी गवाही में लिख लूँ, क्योंकि उस बदमाश के पास कोकेन भी बरामद हुई है ?”

थोड़े ही दिन बाद चाँदनी के नाम बरेली के रेलवे मजिस्ट्रेट की अदालत से समन आया कि फलौतारीख को आकर मुलजिम को शिनाख्त करो और गवाही दो। चाँदनी इस अदालत की पेशी से चकराई। वह कहने लगी—“मैं तो न जाऊँगी।”

हमने कहा—“क्या तेरी शामत आई है ? अगर समन से न जायगी, तो वायंट कट जायगा और पुलिस पकड़कर तुझे

ले जायगी। फिर मुलजिम के वकील तुझसे जिरह करके तेरी सारी शरारतों की इकठी कसर निकाल लेंगे।”

समन तो लेना पड़ा, मगर चाँदनी सख्त परेशान थी। अगर हम चाहते, तो उस इस भगड़े से निकाल सकते थे; मगर हमने सोचा कि कुछ तजरुबा होना अच्छा ही है, इसलिए हमने उससे कहा—“घबराओ नहीं, हम तुम्हारे साथ चलेंगे।”

रेलवे-मजिस्ट्रेट एक डिप्टी-मैजिस्ट्रेट थे। जब हम खुद अपनो बीबी को लेकर हाजिर हुए, तो उन्होंने अपने करीब कुर्सी दी। मुलजिम की शिनाख्त हुई। जब मजिस्ट्रेट चाँदनी के बयान लेने लगे, तो हमने चुपके से उसके कान में कहा—“वकील तुझसे जिरह करेगा। अगर कहीं तूने जरा भी झूठ कहा; तो समझ ले कि तुम्हारे झूठी गवाही (दरोगदहली) का मुकदमा चल जायगा और तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी।” यह सुनकर वह और भी बौखला गई।

जब उससे मुलजिम के वकील ने जिरह का, तो वह और भी घबराई। उसे मजबूरन कबूल करना पड़ा कि उसने सजा के तौर पर मुलजिम को कुनैन डालकर कड़वा पान दिया था। इत्तिफाक से बरेली की घटना अभी ताज़ा ही थी। मैजिस्ट्रेट ने दिन और तारीख जो पूछी, तो मालूम हुआ कि जिस रोज बरेली स्टेशन पर तमाम चीजें कड़वी हुई थीं; वही दिन बरेली स्टेशन पर चाँदनी की उपस्थिति का था। उस मामले की तहकीकात पुलिस पहले ही कर चुकी थी। तमाम कड़वी चीजों की डाकटरी परीक्षा भी हो चुकी थी। परीक्षक ने बताया था कि सारी चीजें कुनैन से कड़वी की गई थीं। हर जगह तहकीकात से साबित हो चुका था कि कोई औरत थी। पान-वाले ने कहा था कि मैंने एक औरत के हाथ पान बेचे थे। यही

बात गेटीवाले ने कही थी। होटल वाले का बयान भी मौजूद था। मैजिस्ट्रेट ने इन सब बातों को मिलाकर देख, तो मामला और ही नजर आया। इसके अलावा तहकीकात में लोगों ने जो बयान दिये थे, उनमें भी चाँदनी की हुलिया दर्ज थी। मैजिस्ट्रेट बेचारे बड़े नेक आदमी थे। उन्होंने कुछ हमारा लिहाज किया और कुछ हमारी बीबी का जो इस वक्त बेतरह घबरा रही थी। उन्होंने एक तरफ तो बकील को बहुत से ऐसे सवाल करने से रोका, जिनका जवाब देने से पहले ही शायद चाँदनी रो पड़ती और दूसरी तरफ इस कंडुवाइट की बात को अप्रासंगिक कहकर बन्द कर दिया।

अदालत से छुट्टी मिली, तो उसकी जान में-जान आई, लेकिन डबल फर्स्ट क्लास के किराये का परवाना जो उसके हाथ आया, तो फिर वही हालत हो गई। हमने कहा—‘क्यों, इस परवाने को आधे दाम पर हमारे हाथ बेचोगी?’

“जी, मुँह धो आइये,”—चाँदनी बोली—“उन्हीं आधे दामों से कुनैन खरीदी जायगी।”

अदालत में जो परेशानियाँ नजर आई थीं, वह सब दूर हो गईं। हमने कहा—“तू न मालूम किस भूल में है। ताज्जुब नहीं कि अभी तेरी पेशी मुल्जिम के तौर पर कुनैन वाले मुकदमें में हो।”

यह वह भी जानती थी कि मैजिस्ट्रेट और सब इन्स्पेक्टर रेलवे पुलिस कुनैनवाले मामले की खुद तहकीकात कर चुके थे, और दोनों यह जान गये थे कि तमाम चीजें उसी ने कंडुवा की थीं। इसलिये वह मेरी बात सुनकर कुछ घबरा गई। शाम को हम मैजिस्ट्रेट के बँगले पर अपनी मुल्जिम बीबी को लेकर गये और उनके सामने उसकी तरफ से हमने उसका जुर्म कबूल किया।

उन्होंने आश्चर्य और दिलचस्पी से सारा किस्सा सुना और अन्त में इतमीनान दिलाया कि कुनैन वाला मुकदमा दायिल दफ्तर कर दिया जायगा । चाँदनी का कुनैन का इस्तेमाल इतना बढ़ गया था कि अगर कुछ दिन बाद इस शरारत से कुछ उसका जी न भर गया होता, तो वह जरूर ही पुलिस में पकड़ी जाती ।

छठकां परिच्छेद

हिन्दुस्तानी परदा

मैं द्वार पर पहुँचा और दयोदी में प्रवेश किया, पर भीतर जैसे ही पैर रखा कि चौक पड़ा । एक जेन्टिलमैन आगम-कुर्मी पर लेटे हुये हुका गुड़गुड़ा रहे थे । उनकी रूपवती श्रीमतीजी भी समीप ही बैठी थीं । मैं शीघ्र ही 'अरे' कहकर लौटा, और वे महाशय गरज कर और हुक्के की नै सँभाल 'लेना-लेना बदमाश को पकड़ना' कहकर फाँद पड़े । मेरी शामत जो आई, तो मैं बौखलाकर सीधा भागा और वे महाशय नंगे पैर हुक्के की नै हाथ में थामे मेरे पीछे 'लेना' 'लेना' कहते दौड़े । गली की मोड़ पर मैं शीघ्र ही रुका कि कहीं लोग बदमाश समझकर मुझे पकड़ न लें । आते ही उन महाशय ने मेरे ऊपर दो-तीन हुक्के की नै लगाई । 'सुनिये तो' 'सुनिये तो' मेरे मुँह से निकल रहा था और वे मेरे ऊपर बरस रहे थे कि इतने में कई व्यक्ति बोच में पड़ गये ।

“बदमाश ! पाजी ! लुच्चा ! दिन दहाड़े ।”—काँपते हुये बोले ।

“जरा सुनिये तो, सुनिये तो”—मैंने कहा ।

“ठहर जाइये । तनिक शान्ति से काम लीजिये । क्या मामला है ?”—एक बड़े मियाँ ने कहा ।

विनयपूर्वक मैंने कहा—“दुर्भाग्य से मैं बजाय बराबर वाजे मकान के इनके मकान में चला गया और इसके लिए मैं बड़ा ही लज्जित हूँ ।”

इस पर वे महाशय बोले—“अचे वेईमान ! बदमाश भूठा है । जान-बूझ कर.....”

“नहीं साहब, ऐसा हो ही जाता है । जाने दीजिये ”—बड़े मियाँ बोले ।

“जाने दीजिये ! मैं तो पुलिस में दे देता ।”—महाशय ने कहा ।

अस्तु, लोगों ने मामला रफ़ै दफ़ै किया । पिटा-पिटाया लज्जित खड़ा था और फिर असली जगह जाने का विचार स्थगित करके, गरदन नीचे किये, लौट आया । दिया जल चुके थे कि घर पहुँचा ।

[१]

“आज प्रातःकाल न मालूम किस मनहूस का मुँह देखा था । कहीं तू तो सम्मुख नहीं आ गई थी ?”—मैंने चाँदनी (अपनी पत्नी) से कहा ।

चाँदनी ने कहा—“क्या हुआ था ? मैंने कहा था न कि रात को तकिये के पास बैठकर दण्ड न देखो । अशुभ होता है । तुम भूल गये और वह वहीं रखा रह गया, और प्रातःकाल कदाचिन् तुमने देख लिया ।”

चाँदनी की बात सुनकर मुझे हँसी आ गई, क्योंकि वास्तव में मैंने रात को दुर्भाग्य से दर्पण देखकर वही रखा रहन दिया था।

चाँदनी ने विस्तृत समाचार पूछा, तो मैंने बताया कि किस प्रकार मैं आज एक स्थान में धाँके से परदा-नशीन स्त्री के घर में घुस गया और फिर किस प्रकार पंटा गया।

बात आई-गई हो गई। यह घटना लखनऊ की थी और उसके चार दिन उपरान्त हम वहाँ से लड़ गये।

बेटिंग-रूम में आराम कुर्सी पर लेटा हुआ मैं समचार पढ़ रहा था कि तनिक बाहर निकला। देखा तो एक बन्द गद्दी आकर रुकी। लोगों ने परदे के लिए चादरें तानी और कोई बेगम साहिबा जनाना बेटिंग-रूम में उतरीं। मैं लौट आया और नियमानुसार समाचार पढ़ने लगा। खटपट की जो आवाज आई, तो मैंने अस्वचार हटाकर देखा। एक साहब—प्रत्येक प्रकार से पूर्ण जेंटिलमैन—‘अफ ओह’ करके कुर्सी पर बैठ गये और मेरी ओर देखने लगे। यह वही महाशय थे, जिन्होंने हुकूम की नै से मेरी मरम्मत की थी। अपनी श्रीमती जी को जनाना रूम में उतरवाकर आ रहे थे।

“खुदा की पनाह!”—कहकर अपनी टोपी उतारी और मेरी ओर देखकर बोले—“जनाब, कहाँ तशरीफ ले जायेंगे।”

मैंने ध्यान से देखा और बहुत प्रसन्न हुआ कि चलो अच्छा है कि उन्होंने मुझे पहचाना नहीं और तब उनको बताया कि मैं आगरे जाऊँगा।

“अच्छा, आप भी आगरे तशरीफ ले जा रहे हैं।”—कह कर जो उन्होंने वार्तालाप का ताँता पूरा, तो दुनिया भर की बातें पूछकर फिर वही पुरानी बातें प्रारम्भ कीं, यात्रा की

कठिनाई और स्त्रियों के साथ इत्यादि विषयों पर कहते-कहते बोले—‘क्या बताऊँ साहब, मैं तो परेशान हो जाता हूँ। यात्रा में स्त्रियों का साथ वास्तव में एक विपत्ति है। चार घण्टे तो स्त्रियों को सवार कराने में गये।’

मैं—‘वह कैसे?’

उन्होंने कहा—“अजो साहब स्त्रियों के विषय में और फिर ससुराल का मामला और तिस पर मेहमान! भीतर न जा सकता था; क्योंकि अन्य रिश्तेदार स्त्रियाँ थीं। बाहर से कहल जाता था कुछ और भीतर से उत्तर आता था कुछ। खुदा-खुदा करके सामान बँधा। फिर भी कुछ चीजें जो बाहर रहनी थी, अन्दर बँध गईं और कुछ चीजें जो अन्दर बँधनी थीं, वे बाहर रह गईं। ड्यूटी पर जब घंटों शोर गुल मचाया गया, तब जाकर सवार होने की नौबत आई। यात्रा में स्त्रियों का साथ होना वास्तव में एक विपत्ति है—बवाल जान है। सामान को देखे या इन्हें?”

अतिन्म वाक्य असगर साहब ने कुछ परेशान होकर कहा, क्योंकि वे वास्तव में कुछ बोखलाये हुये से थे।

मतभेद प्रकट करते हुए मैंने कहा—“शायद, पर इसका कारण क्या है कि यात्रा में स्त्रियाँ बवाल जान होती हैं। आखिर वे आराम और चैन का कारण क्यों न हों, जिससे मार्ग का परेशानी दूर हो?”

असगर साहब—“तोबा कीजिए। लाहौल बिलाकूत। परेशानी दूर हो! यह कहिये, दुगुनी होती है।”

मैं (मुसकराकर)—“मालूम होता है, आपके साथ बहुत-सी स्त्रियाँ हैं?”

असगर—“बहुत सी तो नहीं, केवल मेरे घर में मेरे साथ हैं।”

मैंने अत्यन्त सादगी से पूछा—“घर में से कौन साथ है ?”

असगर—“स्वयं मेरे ही घर में हैं।”

“कौन ?”—मैंने फिर हँसकर नटखटपन से पूछा।

“खुद घर ही में से हैं।”—असगर साहब ने फिर वही उत्तर दिया।

मैं—“क्या खूब ! आपने तो कमाल ही कर दिया। आखिर घर में से कौन हैं ? माँ, बीबी, बहन, नौकरानी। आखिर कौन हैं ? कदाचित् आप की श्रीमती जी होंगी।”

कुछ भौंकर असगर साहब ने कहा—“जी हाँ, और आप की सवारियाँ ?”

मैं—“मैंने तो उन्हें कल ही बुक करा दिया।”

असगर साहब आश्चर्य-मुद्रा से मुझे देखने लगे। अभी की मुलाकात और गम्भीर वार्तालाप ! वे इस प्रकार देख रहे थे, मानों उन्हें कुछ बुरा मालूम हुआ और फिर बोले—“आप तो मजाक करते हैं।”

मैंने गम्भीरता से कहा—“मेरी समझ में मुझको आप से हँसी करने का अधिकार इतनी जल्दी प्राप्त नहीं हो सकता। मैं मजाक नहीं करता, वरन् ठीक बात कहता हूँ और मुझे आश्चर्य है कि आपको मेरे कथन की सत्यता में क्यों सन्देह हो रहा है। यह देखिये, रसीद भी मौजूद है। मैंने अपनी दोनों सवारियों को बुक करा दिया है।

यह कहकर मैंने रसीद असगर को दी, क्योंकि वास्तव में मैं मोटर-साइकिल और साइकिल दोनों को सवारी-गाड़ी से बुक करा चुका था।

असगर कुछ भेंप-से गये और रसीदें लौटाकर कहने लगे—“शायद आप अकेले ही यात्रा कर रहे हैं ?”

मैं—“जी नहीं, मैं अरेले यात्रा करने का अभ्यस्त नहीं ।”

असगर—“पर जनाना वेटिंग-रूम तो खाली है । अच्छा, शायद वह डोली जो नज़ के सामने रखी है, उसमें वही हैं ।” (यह बात उन्होंने पूर्ण विश्वास से कही) ।

मैं—(हँसकर)—“जी नहीं ।”

असगर—“फिर कहाँ बिठाया है ?”

मैं—“कहीं नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे बिठाया है ।”

सेरी बात को मजाक समझ असगर ने अरुचि से कहा—
“हूमा कीजिए, मैं आपकी बात नहीं समझ सता ।”

मैंने हँसकर कहा—“वे मुझे यहाँ बैठाकर टिकट लेने गई हैं ।”

“अरे, यह क्या ! असगर बोले ।

मैं—“साहब, कारण यह है कि सामान मेरे पास आवश्यकता से अधिक है । उसमें से कुछ तो मालगाड़ी से जायगा और कुछ सवारी गाड़ी से । फिर उसमें से कुछ ऐसा है, जो साथ रहेगा और कुछ ऐसा है, जो ब्रेक में दिया जायगा । मेरी तबीयत कुछ खराब थी, इस कारण बाध्य होकर वे बेचारी यहाँ मुझे आराम से बैठाकर टिकट लेने और सब सामान बुक कराने गई हैं । आध घंटे से अधिक हो गया है और अभी तक नहीं आई ।”

असगर साहब (आश्चर्य से)—“अरे, क्या अकेली गई है ?”

मैंने अत्यन्त रुखे भाव से कहा—“जी नहीं, वरन् उनके साथ बुकिंग-क्लर्क और कुली भी गया है ।”

असगर साहब आँखें फाड़कर बोले—“अच्छा ! तो क्या वे परदा बिलकुल नहीं करती ?”

मैं—“क्यों नहीं, करती क्यों नहीं हैं ? बहुत करती हैं !”

असगर—“तो फिर यह कैसे ?”

मैं—“यह कोई आवश्यक नहीं कि परदा किया जाय, तो दुनिया का कोई काम ही उसके कारण न किया जाय। मजबूरी है।”

असगर—“इदीस शरीफ में आया है कि स्त्रियाँ अन्धों तक से कड़ा परदा करें—यहाँ तक कि उनकी ओर को देखें नहीं।”

मैं—“आया हागा। मुझे तो पता नहीं, पर भविष्य में मैं भी अवश्य खयाल रखूँगा, और यथासम्भव पाबन्दी कराऊँगा। परन्तु मेरा तो विश्वास है कि मेरी स्त्री खामखा बिना जरूरत अन्धों तक का भी नहीं देखती। हाँ, जरूरत पड़ने पर सबको देखती हैं। अब ताकीद कर दूँगा, पर यह बताइये.....” इतना ही कह पाया था कि द्वार के सामने मेरी प्रबन्धक स्त्री तेजी से जाती दिखाई पड़ी।

मैंने आवाज दी, और वह आई।

मैंने पूछा—“कहां, क्या देर है ?”

उसने कहा—“बस रसीद बनवानी रह गई है। अभी आती हूँ।”—यह कहकर चली गई।

“आप तो कहते थे कि परदा करता हूँ। ये तो मुँह खोले घूम रही हैं !”—असगर ने कहा।

मैं—“सिर से पैर तक तो दुस्त्रिया ने इस गर्मी में अपने को चादर से लपेट रखा है और फिर भी आप आपत्ति करते हैं। तो आपका तात्पर्य यह है कि वह मुँह को भी बन्द कर लें और तेजी से इधर-उधर जाने, सामान बताने और उठवाने

में बुर्का से उतलकर गिरें, या कोई बन्दल उड़वा दें। ज़मा कीज़िए, मैं ऐसे परदे से बाज़ आया।”

असगर साहब ने दूसरी आपत्ति की—“फिर मजा यह कि आप इनका नाम लेकर बुलाते हैं।”

मैं—“आखिर फिर कैसे बुलाऊँ? आप ही कोई उपाय बतावें। मुफ्त तो यह अच्छा नहीं मालूम होता कि ‘अरे देखना,’ ‘अजी सुनो तो’ इत्यादि कड़कर बुलाऊँ और स्टेशन पर बिना बात के बीसियों आदमियों को अपनी ओर आकर्षित करूँ।”

परन्तु वहाँ तो तोमरी आपत्ति भी थी—“आप तो पुरुषों का काम स्त्रियों से लेते हैं। यह सब काम जो आरकी वेगम साहिबा दौड़-दौड़कर करती फिरती हैं, वह वास्तव में आपके करने का था।”

मैं—“निसन्देह; पर मैंने निवेदन किया न कि मेरी तबीयत कुछ खराब है। गर्मी की श्रुत है, नहीं तो मैं अपनी श्रीमताजी को कष्ट न देता। मैं तो अपनी इस अवस्था में भी उनको मना करता रहा, पर वे न मानीं कि कहीं मेरी तबीयत अधिक खराब न हो जाय। असगर साहब, क्या कहूँ कि गृहिणी भी एक देन है, और विशेषकर यात्रा में।

इतने में रेलगाड़ी की घन्टी बजी और असगर साहब बुरी तरह चूठकर भागे। मैं उसी प्रकार बैठा रहा, क्योंकि गाड़ी बहुत देर तक ठहरती थी। थोड़ी देर में चाँदनी आई, और उसने चलने को कहा। गाड़ी में गया, तो सब सामना ढङ्ग से रखा हुआ था और बिस्तर बिछा हुआ।

मैंने चाँदनी से कहा—“दास्त खुदा तुम्हारा सुहाग बनाये रखे। बस, एक गिज़ास शर्बत और पिला दो।”—यह कहकर

मैं आनन्द से लेट गया। चाँदनी ने कुली इत्यादि सबको निपटा दिये और थोड़ी ही देर में मैं ठण्डा पानी से और अपनी गृहिणी से बातें करके अपना दिल ठण्डा कर रहा था।

उधर असगर साहब का हाल सुनिये। रेल क्या आई कि प्रियत्तियों का दफ्तर खुल गया। कहारों ने पालकी में उनकी बेगम साहबा को, या यों कहिये कि मूर्खता के बोझ को उठाया और आगे बढ़े। असगर ने सामान और कुलियों को देखा, तो एक कुली गायब था। उधर पालकी निकली जाती थी। एक दम से उधर दौड़े कि फिर उधर आये, और दूसरे कुली से पूछा। उसने कहा—“साहब अभी तो यहीं था। शायद आगे बढ़ गया होगा। उनका साथ लिया और तेजी से आगे बढ़े। देखा, तो उनका सामान लिये कुली भीड़ के साथ फाटक से बाहर होने ही वाला था, गजब ही तो हो गया। अन्धाधुन्ध उस ओर को लपके और उस हड़बोंग में न मालूम किस-किस से टकराये। अन्ततोगत्वा इस जल्दबाजी का नतीजा यह हुआ कि एक साहब से जो शायद इनसे भी आवश्यक काम पर जा रहे थे, ऐसी टक्कर हुई कि वे गिरते-गिरते बचे; पर संभलने जो लगे, तो एक दही-बड़ेवाले का खोमचा सामने आया। फाँदे तो दही-बड़ेवाले ने हाथ से रोका। फलस्वरूप दहीबड़ेवाले के खोमचे में पैर पड़ा और बुरी तरह गिरे। तड़पकर उठे कि दही-बड़ेवाले ने पकड़ा। वहाँ सामान बाहर निकला जाता था। हाथ को एक झटका दिया और छुड़ाकर सीधे फाटक की ओर दौड़े। कुली बाहर निकल चुका था; पर नजर अब भी आ रहा था। फाटकपर जो धक्का-मुक्की होती है उसे सब जानते हैं? वहाँ दब पिचकर कोशिश की कि बाहर निकलें कि दही-बड़े वाले ने पकड़ा।

उससे हाथ छुड़ाने और उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया, पर तोबा कीजिये ? वह काहे को छोड़ता ? देखता था कि हजरत बाहर निकले जा रहे हैं । फिर काहे को हाथ आयेंगे । उसे क्या मालूम था कि वे कहाँ जा रहे हैं । तात्पर्य यह कि दही-बड़े वाले से छीना-भपटी करते हुए टिकट कलक्टर की छाती पर जा पहुँचे । उसने कहा—“टिकट ?” पर वहाँ तो कुली निकला जा रहा था । बुरी तरह फाँड़कर और जोर देकर निकल गये और तड़पकर कुली का हाथ जा पकड़ा । उबर टिकट-कलक्टर और एक सिपाही उस दही-बड़ेवाले के साथ उन पर दूट पड़े । जिस आदमी का वह कुली और सामान था, उसने कहा—“यह क्या जंगलीपन ? हजरत खैर तो है ?” बड़े लाज्जत हुए, क्योंकि न तो कुली उनका था और न वह सामान । टिकट कलक्टर को सूक्ष्म रूप से अपनी मुसीबत बताकर और टिकट दिखाकर बेतरह लौटे और दही-बड़े वाले से तनिक रुकने को कहा । वहाँ से लौट कर आये तो दूसरा कुली भी गायब था । हैरान होकर पुलिस के दफ्तर की ओर जा रहे थे । किसी ने कहा—“साहब, ऐसा नहां हो सकता । दोनों कुली पालकी के पास होंगे ।” दौड़कर पालकी के पास पहुँचे । वहाँ एक ही कुली मौजूद था । इतने में खयाल आया कि दूसरे कुली ने पूछा था कि कौन दर्जे में सामान रखा जायगा । शीघ्र ही दौड़े हुए हमारी ओर आये और कुली को हमारे डब्बे के पास खड़ा पाया । कुली को यहाँ पाकर और बिना हमारी बात सुने सीधे पालकी की ओर भागे ।

उतरने वाले उतर चुके थे, और बैठने वाले बैठ चुके थे । असगर साहब ने पालकी को जनाने दर्जे से लगाकर दो

चादरों से परदे तनवाये और अपनी श्रीमती से उतरने को कहा ।

दुर्भाग्य से एक गोरा टहलता हुआ उधर आ निकला । शायद ताजा ताजा ही विलायत से आया था । लखनऊ के लिये तो वह नवीन आगन्तुक था । उसने भला ये घन्घे काहे को देखे थे । न मालूम उसने क्या समझा कि निकट आया, और उत्सुकता अथवा आश्चर्य से प्रेरित होकर उसने यह देखना चाहा कि तने हुए कपड़ों में क्या हो रहा है । एक ओर जो चादर को हाथ में नीचा करके और ऊपर से सिर ढालकर जो देखा, तो असगर की श्रीमती तो बैठ ही गई । चादर समेट कर असगर साहब गोरे पर फट पड़े । भयंकर गर्जना करके उस पर आये कि हुल्लड़-सा हो गया । उनके साथ के दो-तीन और आशमियों ने मिलकर गोरे को वह आड़े हाथों लिया कि अगर एक दूसरा गोगा आकर बीच-बचाव न करता, तो शायद पूरा भगड़ा छड़ा हो गया होता । असगर साहब बाद में कहते कि वह गोरा बिलकुल बदमाश और भूठा था, और उसने जान बूझकर भारतीय मुसलमानों की तौहान करने की नीयत से वह हरकत की थी ।

जनाने दर्जे की सब खिड़कियाँ चढ़ाकर और पानी इत्यादि का प्रबन्ध करके असगर साहब एक कुला और दही-बड़े वाले के साथ हमारे यहाँ आये । मैं शर्बत पी रहा था । पहले तो कुली से बाद-विवाद हुआ, और फिर दही-बड़े वाले का नम्बर आया । पहले तो दही-बड़े का खोमचा फाँदने की असफलता के कारणों पर उन्होंने विस्तार रूप से प्रकाश डाला, और सब दोष दही-बड़े वाले पर रखा कि यदि वह अपना हाथ अकारण ही उनके पाँव में डालता, तो वे उसे अवश्य लाँघ जाते ।

अस्तु बड़ी भाँय-भाँय के उपरान्त दहो-बड़े वाला पाँच रुपया लेकर टला। रेल चली और तनिक सन्तोष हुआ। तब विपत्तियों का पूरा विस्तार सुनने में आया। ध्यान से असगर साहब ने अपने कपड़ों की ओर देखा, तो पतलून और मोझों पर जगड़-जगड़ दही और सोंठ की चटनी के धब्बे दृष्टिगोचर हुए, इसलिये रूमाल भिगोकर छुड़ाने की कोशिश करके उनको खूब ही फैलाया।

तनिक विचार तो कीजिए। जितना सामान उनके पास था, उससे चौगुना हमारे पास था। यात्रा करनेवाले दो मियाँ बीबी हम थे। पर वे एक विपत्ति के ग्रसित थे, और हम आराम से थे। यदि उनका श्रीमती जी विपत्ति का कारण थीं तो हमारी श्रीमती जो सुख और चैन का कारण। यदि वास्तव में वे मजहब में पाबन्द थे और हम उससे मुक्त, तो क्या यह ठीक है कि यह मजहब इस युग में रहन-सहन के लिए उपयुक्त नहीं अथवा हमारा दावा कि हमारा मजहब प्राकृतिक मजहब है, ठीक है। तनिक इस विषय पर फिर सोचिये।

३

तान-घार स्टेशन बाद असगर ने उतर कर अपनी श्रीमती जी की खबर ली कि उनका क्या हाल है। वहाँ जाकर देखा, तो सब खिड़कियाँ जिनको वे बन्द कर आये थे, खुली पाईं। शीघ्र ही उन्होंने उन्हें चढ़ाया। उनकी श्रीमती जी ने उनको वह दुखद समाचार सुनाया कि उनके चले जाने के उपरान्त काला अचकन पहने कोई व्यक्ति जनाने दर्जे में आया और एक कुली पर उनका एक ट्रंक दिन दहाड़े रखवाकर चलता बना। उनकी श्रीमती जी बेचारी परदानशील तथा अनुभवहीन स्त्री थीं। ट्रंक को जाते देख, स्वयं कहने या रोकने के बजाय,

उन्होंने पास बैठी एक स्त्री के कान में कुछ कहा; पर वह तीसरा दर्जा न था। सब परदानशील स्त्रियाँ थीं। उसने कहा—“फिर रोकती क्यों नहीं हो?” वह भला रोकती! वह ट्रंक लेकर चलता बना और गाड़ी भी चल दी। उस ट्रंक में बहुमूल्य कपड़ों के अतिरिक्त दो हजार के मूल्य की और भी सम्पत्ति थी।

दौड़-धूप करके शीघ्र ही पुलिस को सूचना दी और तार दिलवाये। चाँदनी ने उनसे कहा—“जमा कीजिये, इसमें आपकी बेगम साहिबा की गलती है। पहले तो उन्हें उस आदमी को तुरन्त ही वहीं रोक देना चाहिए था, और यदि उनसे यह न हो सका, तो उनको जंजीर खींचकर गाड़ी रोकनी थी। और न सही, तो कम-से-कम पहले स्टेशन पर खबर ही करती।”

असगर ने व्यग से कहा—“जमा कीजिए, उस आदमी का हाथ पकड़ लेतीं?”

चाँदनी—“आखिर क्यों न पकड़ लेतीं? मैं होती, तो अपना ट्रंक कदापि इस प्रकार न ले जाने देती।”

असगर—“अजी, एक ट्रंक के पोंछे हमारे यहाँ की स्त्रियाँ न तो परदा तोड़ती हैं, और न मरदों से चलभूती हैं।”—ये शब्द असगर ने कुछ गौरवपूर्ण ध्वनि में कहे।

चाँदनी—“केवल इसी कारण उन्होंने उसके विषय में सूचना भी नहीं दी?”

असगर—“निस्सन्देह, यह तो एक ट्रंक है। यदि लाखों की भी चीज होती, तो भी वह किसी मर्द से उसके विषय में बात न करती।”

मैंने कहा कि आश्चर्य है कि अपने अपने घर की स्त्रियों

को इतना लाचार कर रखा है। मेरी समझ में तो आप जैसे उदार-विचार के व्यक्ति को ऐसे निकम्मे विचार शीघ्राति-शीघ्र छोड़ देना चाहिये। इस पर बोले—जनाब, मैं ऐसी रोशनी का कायल नहीं, जो मजहब के विरुद्ध हो। यह रोशनी मुस्तफा कमाल के शासन को मुबारक हो। ऐसी ही बातें होती रहें कि एक स्टेशन पर असगर ने देखा कि कोई साहब खड़े जनाने दर्जे की खिड़कियाँ खोल रहे हैं। बस, फिर क्या था। तुरन्त ही लपक कर घटनास्थल पर पहुँचे।

“मैं खिड़कियाँ बन्द करता हूँ और आप हैं, जो खोल-खोल देते हैं।”

“अच्छा, यह आप हैं ! मैं स्वयं परेशान हूँ, और बार-बार खोलता हूँ, और आप बन्द कर देते हैं ! मारे गर्मी के स्त्रियों का बुग हाल है, और आगों परदे की सूझी है। यदि ऐसा ही है, तो आप अपनी स्त्री को किसी और जगह बिठाइये, या फिर साथ लेकर ही क्यों चले थे ?”

“मगर मैं आपको खिड़कियाँ न खोलने दूँगा। जितना अधिकार आपको है, उपना ही मुझे भी।” असगर ने एक खिड़की बन्द करते हुए कहा।

“मैं अधिकार-वधिकार कुछ नहीं जानता और खोलूँगा। स्त्रियाँ न हुईं जानवर हो गईं।”

“ता आप कम-से-कम मेरी ओर वाली खिड़की रहने दीजिए।”

“मैं आपकी और अपनी कुछ नहीं जानता। मैं इस खिड़की को तो अवश्य खोलूँगा, क्योंकि यही तो मुख्य है।”—उस टरे और जिद्दी आदमी ने कहा।

“आप नहीं मानते, तो मैं स्टेशन मास्टर से कहता हूँ—”
असगर ने कहा ।

“आप लाट साहब से कह दीजिये, जाइये ।”—आवेश से वह अपरिचित व्यक्ति बोला ।

स्टेशन मास्टर और गार्ड आये और उस टर्रे और जिंदी आदमी की जीत हुई । गर्मी भी इतनी विकट पड़ रही थी कि खिड़की का बन्द रखना असह्य था । लाचार होकर असगर पेचताब खाकर रह गये, क्रोध अपनी श्रीमती जी पर यह कह कर उतारा कि बुर्के के ऊपर एक और चादर ओढ़कर कोने में नाक लगाकर बैठ जाया ।

४

असगर साहब की विपत्ति की अभी वास्तव में समानि नहीं हुई थी, वरन् श्रंगणेश ही हुआ था । पग-पग पर उनके मजहब और वर्तमान रहन-सहन का प्रदर्शन होता था ।

गाड़ी चलते-चलते धीमी हुई और रुक गई । जनाने ड्योढ़े दर्जे के पहियों के धुरे तेल की कमी और गर्मी की भयंकरता के कारण तप उठे थे और आग लग जाने की आशंका थी । गाड़ी जङ्गल में रुकी हुई थी और उसके धुरे पर पानी छिड़का जा रहा था । स्त्रियों को जल्दी-जल्दी उतारा जा रहा था । असगर साहब की घबराहट उपदेशप्रद थी । परदे के सम्पूर्ण टंगों के साथ श्रीमती जी को उतारना और सामान उतरवाना एक विपत्ति थी । वहाँ कौन था, जो चादरें तानता और डोली लाता । उधर गार्ड ‘उतरो, उतरो जल्दी करो’ कहकर और भी रहे-सहे होश उड़ाये देता था । बाध्य होकर असगर ने अपनी श्रीमती जी से उतरने को कहा । प्लेटफार्म तो था नहीं, मानों छत पर से उतरने का मजमून पेश था । हमारी समझ में तो

न आता था कि किस प्रकार कोई आँखें बन्द करके उतर सकता है और वहाँ असगर साहब की श्रीमती जी के इस कार्य के करने की आशा की जा रही थी। वह बी, जो डोली से एक पग रखकर गाड़ी के डब्बे में बैठने की अभ्यस्त हो, वह भला बुर्का और बुर्के के ऊपर चादर ओढ़कर उस हैरानी और परेशानी में किस प्रकार उतर सकती है? काँपते हुए हाथों से टटोल कर गरीब ने खिड़की को पकड़ा। पैर नीचे करके टटोल रही थी कि किस चीज पर और कहाँ पैर रखूँ कि बे-परदगी होने लगी, यानी हवा में चादर उड़कर कुछ भाग पोषक का खुल गया, असगर जोर से चिल्लाये। गरीब ने घबराकर संभलना चाहा कि पैर कहीं-का-कहीं पड़ा। हाथ से खिड़की छूटी और धम से नीचे गिरा। नीचे टूट रहा था, जिस पर असगर खड़े थे। टूट का काना कोल्हू में इस जोर से लगा कि बेदम ही तो हो गई, पर जबान से उफ तक न निकली। एक तो गर्मी की तेजी, फिर उस पर कपड़ों का बोझ और तिस पर वह चोट—बेचारी बेहोश हो गई। जैसे-तैसे करके घबराहट और जल्द में चाँदनी ने सहारा देकर उठवाया। किसी दूसरे मर्द की सहायता के असगर इच्छुक न थे और चाँदनी ठहरी कमजोर, फनस्वरूप बेचारी को कंकड़ों पर मुर्दे की तरह घसाँट कर ले चले।

जिस प्रकार बन पड़ा, हज़ार कठिनाइयों से एक जनाने तीसरे दर्जे में गरीब को रखा। अपने साथ बिठाने को हमने बहुत कुछ कहा, पर जनाना और कोई दर्जा खाली ही न था, चाँदनी सहानुभूति के खयाल से उनकी श्रीमती की सेवा-शुश्रूषा के लिए साथ हो गई। जैसे-तैसे करके सामान अपने साथ किया और गाड़ी चली।

चाँदनी ने वहीं गाड़ी के बेंच के पास श्रीमती असगर को लेटा रहने दिया, क्योंकि और कहीं स्थान न था। तकिया लगा दिया और मुँह खोलकर हवा दी।

अगले स्टेशन पर असगर साहब उतर कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि जनाने दर्जे का द्वार खुला है और सामने उनकी श्रीमती जी लेटी हैं और चाँदनी उनके पास बैठी हवा दे रही है और उन्होंने बरफ का पानी माँगा। देखकर असगर साहब आपे से बाहर हो गये और जोर से चिल्लाकर बाले—“अरे यह क्या गजब कर रही हैं ? मुँह तो ढकिये। अरे, मुँह क्यों नहीं ढकतीं ?”—यह कहकर एकदम लपक कर दर्जे में घुस आये। “यह क्या सितम है ? गजब है खुश का !”—कहकर अपनी श्रीमती जी का मुँह ढँक दिया और बक्र दृष्टि से क्रोध में चाँदनी से कहा—“यह आपसे किसने कहा था कि अपनी तरह मेरी बीबी का भी मुँह खोल दें ? यह आपको ही मुबारक हो। आप रहने दीजिए और जाइये।”

गई थी भले को और वहाँ हुआ बुरा। चाँदनी बेचारी चुपचाप चली आई। मेरी तबीयत खराब थी, इस कारण उज यात्रा में उसकी हाजिर-जवाबी काम न करती थी। फिर भी कहने लगी—“कहिये तो फिर इसकी खबर ली जाय।” मैंने कहा—“नहीं, रहने दो।” इतने में असगर साहब आये और उसी जले-भुने लहजे में कहने लगे—“आप से आखिर किसने कहा था कि आप मेरी बीबी का मुँह हर एक के देखने के लिये खोल दें।”

चाँदनी—“मैं लज्जित हूँ, मगर यह तो.....”

असगर—“बी हाँ, मगर-बगर को जाने दीजिए। आखिर

शर्म-हया भी तो कोई चीज है। आपकी भांति स्त्रियों की शर्म-हया को ताक.....”

जली तो चाँदनी पहले से ही बैठी थी। इतना सुनना था कि छतरी लेकर, जब तक मैंने रोका, तब तक दो-तीन असगर साहब के ऊपर तड़ातड़ ठीक उसी भांति लगाई; जिस प्रकार चन्दा ने हुक्क के हाथ मेरे जड़े थे। असगर साहब ने बहुत-कुछ वार रोके; पर तीन-चार बुरी तरह पड़े। ‘है है’ वह के मैंने डाँट कर राका।

“बदतमीज ! बदजबान ! निकल जा यहाँ से।” कहकर वह क्रोध में जंजीर की ओर लपकी और कहती गई—मैं अभी निकलवाती हूँ।”

“यह क्या बाहियात बात है ?”—कहकर मैंने हाथ पकड़कर घसीटा और पकड़ कर बिठाया। वह क्रोध से काँप रही थी और कह रही थी—“मुझे छोड़ दीजिए।”

मैंने छोटकर बिठाया। असगर साहब की विचित्र दशा थी। मैं उनसे क्षमा माँगी और थोड़ी देर में चाँदनी से भी कहा कि तुम भी माँगो। बड़ी कठिनाई से समझाने-बुझाने पर चाँदनी ने कहा—“यदि असगर साहब अपने शब्द लौटा लें, तो मैं अपनी मूर्खता और उद्वेगता पर लज्जित हूँ और माफी माँगती हूँ।”

“मुझको दुःख है कि क्रोध में मैं आपको न-मालूम क्या कह गया।”—ये शब्द मैंने असगर साहब से कहलवाये और दोनों ने हाथ भिजाया; पर न तो चाँदनी का दिल साफ था और न असगर साहब का और शेष यात्रा में एक ओर असगर मुँह फुल्लये बैठे रहे और उधर वह चुप बैठी रही।

मैंने चुपके से चाँदनी के कान में कहा “दोस्त, तुमने

हमारा बदला खूब लिया। इसी व्यक्ति ने उस रोज़ हुक्के की नै से मेरी मरम्मत की थी।”

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा—“अरे !”

तो मैंने कहा—“चुर। खबरदार जो बात निकाली। ये हजरत मुझे पहचान ही न सके। अकारण लज्जित करने का कोई नतीजा नहीं।”

चाँदनी चुप हो गई। आगरे में हम दोनों उत्तर; तो शोक-निवारण था फिर हाथ मिलाये।

दुर्भाग्य से असगर साहब की विपत्तियों का अभी अन्त न हुआ था। आठ सात रोज़ बाद जब मैं असगर साहब के घर दुबारा अपनी श्रीमती जी को अशिष्टता पर क्षमा माँगने गया, तब मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। असगर का घर तो समवेदनागार बना हुआ था। मैं सन्नाटे में आ गया, जब मैंने सुना कि असगर की श्रीमती खो गईं।

आगरे के स्टेशन पर से वे उसी प्रकार उन्हें चादरें तानकर डोली में बिठाकर लाये। स्वयं तो ताँगे पर थे और डोली के साथ नौकर था। घर पर बजाय उनकी श्रीमता जी के एक वृद्धा परदानशील स्त्री उतरी। उधर वह हैरान कि मैं कहाँ आ गई, और उधर असगर के घर वाले परेशान। वृद्धा कहती थी कि मेरा बेटा कहाँ है, जो डोली लेकर आया था, और असगर कहते थे कि मेरी बीबी लाओ। दौड़कर स्टेशन पहुँचे। वहाँ से गाड़ी राजामण्डी के स्टेशन को जा चुकी थी। वहाँ पहुँचे, तो इतना ज़रूर पता चला कि गाड़ी चूँकि वहाँ समाप्त होती है इसलिए एक बुर्कापोश स्त्री के अतिरिक्त उसमें कोई नहीं पाया गया, और वह भी उतरकर एक आदमी के साथ चली गई। दोनों के पास ठिकट आगरा सिटी से राजामण्डी के थे।

दूसरा आदमी नौकर मालूम होता था, जो उनको किसी बन्द गाड़ी में बिठा ले गया।

असगर का बुरा हाल था। पागलों की भाँति टकरा-टकरा कर उन्होंने सिर फोड़ लिया था। यदि घर वाले न होते, तो कोई आश्चर्य नहीं कि अपनी जान गँवा देते, क्योंकि उनका अपनी श्रीमती जो के प्रति प्रेम ही नहीं वरन आत्ति भी थी। उनकी शोचनीय दशा दयनीय थी, और उनको देखने से उपदेश मिलता था। वे बिलकुल पागल - से हो रहे थे।

उनका ट्रंक मिल गया था। कोई भले आदमी धोखे में ले गये थे। भूल मालूम होने पर लौटा गये। ट्रंक आ गया, पर वहाँ तो ट्रंकवाली का रोना था। उनके घर वालों और उनसे सहानुभूति प्रकट कर शक-मग्न मैं घर आया, और चाँदनी को सब समाचार सुनाया। उसे भी बेहद दुख हुआ।

हम सान भर तक आगरे में रहे। उस समय तक तो उनकी बीबी मितो नहीं थी, और उनका किस्सा भी पुराना हो चुका था, कि हम दूसरी जगह चले गये।

सातकॉ परिच्छेद

गुमनाम पत्र

हमारी बीबी इस नौकरी से प्रसन्न थी कि बदली होती है, और नये-नये स्थानों में रहने का अवसर मिलता है। हम कई जगह की हवा खा चुके थे और फिर नई जगह की आशा थी। संयोग की बात वा खुशकिस्मती कि हमारी प्रसन्नता का

ठिकाना न रहा, जब हमें मालूम हुआ कि अब हमें हामिद के शहर में रहने का अवसर मिलेगा। हामिद अपने पुराने और पक्के दोस्त थे। हमने उन्हें फौरन तार दिया और हमारी बीबी ने तो सामान इत्यादि फौरन ही बाँधना शुरू कर दिया। हामिद का पत्र आया। वह पत्र क्या था, मानों किसी स्वागत-समिति के अध्यक्ष की ओर से मानपत्र था।

हम नये शहर में सीधे बीबी सहित हामिद के मेहमान हुए। उन्होंने हमारी इस प्रकार खातिर की, मानों वर्षों की दोस्ती का हक पेशगी ही में अदा कर दिया। हामिद ने एक नया मोटर लिया था। नया-नया शौक। हमें और हमारी बीबी को खूब सैर कराते और शहर के सभी प्रसिद्ध स्थानों को बारी-बारी से दिखाते। हामिद की माँ और बहन से मिलकर चाँदनी बहुत प्रसन्न हुई।

हम आठ-दस दिन हामिद के मेहमान रहे। फिर उसके बाद हमें शहर के कुछ बाहर एक छोटा सा बँगला उचित किगये पर मिल गया और हम उसमें चले गये।

हमारे और चाँदनी के जीवन में इन थोड़े ही दिनों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था, और धीरे-धीरे प्रत्येक मंजिल पर हम और हमारा जीवन दोनों बढ़ते जाते थे। पहले मकानों में रहते थे, और शहर अच्छा लगता था। फिर बँगलों में रहने लगे, और बँगलों का ही ढङ्ग अस्तित्वार किया। पहले चाँदनी को हमारी सुसाइटियों और मनोरञ्जनों से कोई संबंध न था, और वह सीधी सादी एक गरीब और लज्जालु लड़की थी। किन्तु अब यह कैसे सम्भव हो कि हम कहीं सैर, आराम या मनोरञ्जन के लिये जायँ, और चाँदनी हमारा साथ न दे। उसने इस परिवर्तन को प्रसन्नता-सहित स्वीकार किया था।

पहले तो वह नाम मात्र के पर्दे में रहती थी और हम यार-दोस्तों के साथ सैर करते थे और अधिकतर उनमें ऐसे भी होते थे, जैसे हमारे पुराने दोस्त मास्टर गुलाबचन्द। किन्तु अब हमारे लिये यह असम्भव था, कि हम किसी असभ्य सोसाइटी, या बातूनी दोस्त से मिल सकें या उसके साथ बैठ सकें। क्योंकि चाँदनी हमारे साथ ही रहना पसन्द करती थी। केवल इसीलिये कज़ब से भी हमारी दिलचस्पी जाता रही थी। क्योंकि घर पर अकेली बीबी घबड़ाया करती थी। हम कभी कभी चले जाते, किन्तु हमको दिलचस्पी अधिक इसी में थी, कि शाम को अपने घर पर रहें या अकेली बीबी के साथ हवा खाएँ। चाँदनी इस वर्तमान जीवन को यदि पसन्द करती थी, तो केवल इसी कारण से कि वह प्रसन्न थी, कि हमारी पुरानी सोसाइटी छूट गई और हमारे दोस्तों और मिलने वालों की संख्या घट कर इस तरह सीमित हो गई कि उसमें पतराज करने की कोई गुञ्जाइश ही न रह गई। हमारे दोस्तों में वहाँ वैसे तो बहुत थे, और सभी थे, किन्तु वास्तव में अब हमारे दोस्त भी दो प्रकार थे। एक तो वे, जो केवल हमारे थे, और जिनसे हमारी मुलाकात बैठक तक ही सीमित थी, और दूसरे वे जो हमारे और हमारी बीबी, दोनों के मिलने वाले थे। साफ बात है कि इस तरह के मिलने वालों की संख्या कम होगी और हमिद के अलावा दूसरा कोई भी न था। या फिर हमिद के एक और गहरे दोस्त थे, जिनका नाम रफीक था, किन्तु चूँकि वे देश में रहते थे, इसलिये वे केवल कभी-कभी आते थे।

हामिद को शिकार की भी बड़ी बुरी लत थी, किन्तु जब से हम आये थे, इतवार को उनको पकड़ लेते थे और उनको

अवसर न मिलता था। हामिद ने प्रतिदिन कह-कहकर अन्त में एक दिन राजी कर ही लिया। चाँदनी ने चूँकि शिकार खेलते हुए कभी न देखा था, अतएव हमने भी लान्छर होकर स्वीकार कर लिया। शिकार की पार्टी भी बहुत ही संक्षिप्त थी। हम, हमारी बीबी और हामिद, और एक बैरिस्टर साहब। बैरिस्टर साहब का नाम हम यहाँ बताना नहीं चाहते। बहुत ही मुनासिब सूरत, शकल और स्वभाव के जवान आदमी थे, पैंतीस वर्ष की उम्र होगी। बिलायत से बीबी लाये थे, जो साल भर के भीतर ही मर गई। फिर दूसरी बार शादी न की। किसी दूसरी जगह के रहने वाले थे, किन्तु शुरू से यहाँ रहते थे, और सदा से बिलकुल अकेले रहने के अभ्यासी थे।

२

सवेरे चार बजे हा हामिद ने आकर गदगदया। बैरिस्टर साहब से हमारी मुलाकात कई बार हो चुकी थी, किन्तु चाँदनी की और उनकी यह पहली ही मुलाकात थी। बड़ी जल्दी से हमने चाय तैयार करवाई और छुट्टी पाकर हामिद की मोटर में चल दिये। हामिद मोटर स्वयं चला रहे थे और आगे उनके पास हमारा बीबी बैठी थी, और हम और बैरिस्टर साहब पीछे बैठे थे।

चौदह-पन्द्रह मील पक्की सड़क का रास्ता तै करने के बाद कच्ची सड़क आई और फिर दो चार मील चलकर गड्ढे और ऊँची-नीची जमीन से बारता पड़ा, यह कठिनाई भी आसानी से खतम होगई और भील आगई। हम लोग उतर पड़े और भील की ओर चले।

भील में मुर्गियाँ और बड़ी बत्तखें भरी पड़ी थीं। हमने चाँदनी को ऐसी जगह में बिठा दिया, जहाँ से वह तमाशा देख

सके, और हम तीनों भील की ओर चले। हम लोग अलग अलग हो गये, और भील को तीन ओर से घेर लिया। हामिद ने पहले बन्दूक चलाई और फिर उड़ने पर बैरिस्टर साहब और हामिद ने बहुत से फैंर किये। हमने भी कोशिश की। हमने तो एक पर तक न मारा, किन्तु हामिद और बैरिस्टर साहब ने मिलकर खूब शिकार किया।

यहाँ से छुट्टी पाकर अब हिरन के शिकार का विचार किया। थोड़ी ही देर बाद बैरिस्टर साहब हमसे और चाँदनी से भी बहुत हिलमिल गये और शिकार में बड़ा आनन्द आया। हामिद से और बैरिस्टर साहब से शिकार की पुरानी दोस्ती थी और दोनों पुराने शिकारी थे।

खुलासा यह कि हम लोग बारह बजे के लगभग लौटे। खूब शिकार हुआ और चाँदनी ने भी शिकार का खूब आनन्द उठाया। चूँकि खाना तैयार ही था, हामिद और बैरिस्टर साहब ने भी हमारे ही यहाँ खाना खाया। खुलासा यह कि दिन आराम से काटा। बैरिस्टर साहब हमसे और चाँदनी से मिल कर बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे, और चाँदनी ने भी इनके सम्बन्ध में यह निश्चित फैसला दिया था कि ये बहुत मुनासिब और अच्छे आदमी हैं और सचमुच वे थे भी ऐसे ही।

×

×

×

बैरिस्टर साहब हमारी बीवी से पहली बार मिले थे। किसी ने सच कहा है कि किसी से मिलो तो उसके सम्बन्ध में कोई राय स्थिर करने में शीघ्रता न करना चाहिये। वे यूरोप की एक भल्लक देखे हुए थे। आमतौर से हमारे जो नौजवान विलायत जाते हैं, और जो मामूली हैसियत के होते हैं, वे वहाँ नीचे दर्जे की सोसाइटी में रहते हैं और वहाँ की औरतों की तबीयत

और उनके आगे बड़े हुए विचारों को देवकर स्त्री-संसार के बारे में एक आम राय कायम कर लेते हैं और अपने आपको स्त्रियों की आदतों का विशेष जानकर समझने लगते हैं। हमारे बैरिस्टर साहब का भी यही हाल था। हामिद ने जब उनसे हमारी बीबी के सम्बन्ध में घर लौटते समय चर्चा की, तब उन्होंने एक हँसी और ताने के ढङ्ग पर कहा—“आपको उनसे इस भांति क्यों दिलचस्पी है?”

“इसलिये कि वे मेरे दोस्त की बीबी हैं।”

“या इसलिये कि वे एक दोस्त की खूबसूरत बीबी हैं।”

“लाहौल बिलाकूद, तुम भी कैसे आदमी हो।” हामिद ने कहा।

“मुझसे अधिक आपको नये ढङ्ग की प्रेम करने वाली औरतों का अनुभव नहीं है।” बैरिस्टर साहब ने कहा।

“मच्छा हो, यदि आप कोई दूसरी चर्चा करें।” हामिद ने गम्भीर होकर कहा।

“अजी जनाब, आप मुझसे……।”

“मेइरबानी करके चुप हो जाओ। कसम खुदा की, मैं एक शब्द नहीं सुन सकता।”—हामिद ने आवश्यकता से अधिक गम्भीर होकर कहा। बात हुई, खतम हो गई और हामिद ने हमसे कभी उसकी चर्चा भी न की।

×

×

×

इतवार का दिन था और हमने चाँदनी से कहा, कि आज तो दोस्त इलुभा खिलाओ। हमारी बीबी को हमारे ऐसे दोस्तों की आवभगत करने की चिन्ता रहती थी, जिनके घर औरतें न हों। वह ऐसे दोस्त को अक्सर तरह-तरह के खाने बनाकर भिजवाती रहती थी। हमारी राय से हमारी बीबी

बिलकुल सड़मन हुई और कहा, कि हम आज दो-तीन तरह के हलुये और भुना गोश्त बनायेंगी और बैरिस्टर साहब के यहाँ जरूर भेजेंगी ।

हमने अपने मन में सोचा कि हम भी क्यों न अपनी बीबी का हाथ बटायें ? जब चाँदनी ने यह सुना तो यह निश्चय हुआ कि एक हम बनायें और एक वह बनाये । हमने कहा कि मूँग का दाल का हलुया तू बना और हम चन का बनायेंगे । विचार दो तरह के हलुये का था; किन्तु तीन तरह का निश्चय हुआ—अर्थात् सूजी का भी ।

हमने अपने बँगले के बरामदे में बहुत जल्द ईंटों के चूहे बनाये और बहुत जल्द हलुये तैयार किये जाने लगे । गोश्त दूसरे चूहे पर रख दिया गया । हमारी बीबी, चूँकि समझदार अधिक थी, इसलिए वह विभिन्न डिब्बों पर, हर चीज जैसे नमक और शकर, इत्यादि के लेबिल लगाकर रखती थी । इस सावधानी से बन्द करके रक्खा जाता था कि हुकम था, कि चम्मच हाँ से डिब्बे से निकाल कर डाला जाय । बद-किस्मती कहिये, या खुशकिस्मती, कि जब घी में दोनों हलुये खूब भुने गये और खुशबू निकलने लगी, तब शक्कर न डाल कर, जा पिमी हुई थी, उसने खूब अच्छी तरह नमक डाला । जल्दी से तैयार करके हलुये उतारे गये और बहुत ही बन्स चुनाकर उनको केसर और केवड़े की खुशबू से तर कर प्लेटों में रखकर सोने के बर्तन लगाये गये और उनपर बारीक-बारीक मेवे बिखरे गये । खुशकिस्मती से सूजी के हलुये में नमक नहीं डाला गया । इसको हम बना रहे थे । जब शक्कर इत्यादि डाल दी गई, तब वह भी उतारा गया । हम असल में उसका बहुत ही मुलायम बनाना चाहते थे, किन्तु मालूम हुआ कि वह बहुत

कड़ा बन गया। खैर, कुछ भी हो उसको परात में जमा दिया गया। अब गोश्त का हाल सुनिये, उसमें नमक न डालकर बहुत ही बेफिक्री के साथ शक्कर डाली गई। हमने नमक भा चखकर देखा, किन्तु गरम-गरम होने के कारण कुछ मालूम न हुआ, और हमने यह समझकर कि ठीक है, उसको भी पास कर दिया। किन्तु हमारी बीबी ने केवल होशियारावश नमक न डाला कि कहीं तेज न हो जाय। सबसे पहिले इन सभी चीजों में से थोड़ा-थोड़ा हमारी बीबी ने बैरिस्टर साहब के लिए निकाला, और आदमी को भेजा, कि जल्द जाओ, जिससे खाने के वक्त चीजें पहुँच जायँ। अब हमारे सूरी के हलुवे का हाल सुनिये कि वह अदनसीब इस तरह कड़ा हो गया, कि हमारी अकल काम न करता थी। किसी प्रकार खाया ही न जाता था। अगर उसको ताड़ने के लिए पत्थर की आवश्यकता थी। दूसरे हलुवे जब खाये गये, तब वे नमक के मार जहर निकले, और भुन हुए गोश्त को जब खाया, तब वह बेइद मीठा। तात्पर्य यह कि सभी चार्जे बर्बाद हो गईं। हम चाँदनी को दोष देते थे और, वह हमें। अब सलाह यह हुई, कि उसको क्या किया जाय ? नमकीन हलुवे तो बिलकुल बेकार थे। विवश होकर मनोरञ्जन के लिए सब के यहाँ भेज दिये गये, गोश्त को हमने नमक से ठीक बना करके खा लिया।

यह कोई अनाधारण बात न थी, कि मञ्चाक में ऐसा हो जाय ! किन्तु बैरिस्टर साहब न जाने किस अर जा रहे थे, और न जाने उन्होंने क्या समझा। शाम को आये और हलुवे के लिए कृतज्ञता प्रकट की, और हमारी मनोरञ्जक बीबी में बहुत सी बातें करते रहे। हमिद भी आये। मतलब शाम को काफी आनन्द रहा, और उसका खातमा मोटर की सैर के बाद हुआ।

दो-तीन महीने में हमारे बैरिस्टर साहब से ऐसे सम्बन्ध हो गये कि वैसे हामिद से भी थे। बैरिस्टर साहब चाँदनी की प्रशंसा करते करते मरे जाते थे, और अब हमारा उनसे हृदय से ज्यादा बिना बनावट के मेल जोल होता था ! हम पर और चाँदनी पर वे इस तरह कृपालु थे कि वे सैकड़ों नई चीजें हमारी बीबी का भेंट दे चुके थे। और चाँदनी का यह हाल था कि वह दिन रात बैरिस्टर साहब की तारीफ़ किया करती थी। खुतासा यह कि बैरिस्टर साहब हमारे अच्छे दोस्तों में से थे।

+

+

+

हम एक दिन जब कचहरी से आये, तब चाँदनी असाधारणरूप से प्रसन्न मालूम हुई। हमने कहा, क्या मामिला है, हमें भी बताओ, तो उसने एक पत्र हमारे सामने रख दिया, उसमें कुछ थोड़े प्रेम सम्बन्धी शेर लिखे हुए थे, और लिखा था, कि इसका जवाब यदि देना तो फलों जगह पर रख देना। हम आश्चर्य में थे कि इलाही, यह कौन है। लिफाफे पर पते और मुहर को देखा तो मालूम हुआ कि इसी जगह का है। हमारी बीबी का पता लिखा हुआ था। हमने बहुत कुछ साचा, किन्तु कुछ समझ में न आया। चाँदनी भी पत्र के जवाब के रूप में बड़ी कठिनाई से सोच विचार करके नीचे लिखा हुआ शेर लिख लाई और हम को दिखाया।

एक लड़के ने अपने बुढ़े बाप से यह कहा —

तू सरापा नाज है, मैं नाज बरदारों में हूँ।

एक लड़के ने अपने बुढ़े बाप से यह कहा:—

आँखों ही आँखों में जालिम मुसकुराना छोड़ दे।

एक लड़के ने अपने बुढ़े बाप से कहा:—

यार की गलियों में क्या कर यार जाना छोड़ दे ।

साफ है कि हँसों के मारे हमारा क्या हाल हुआ होगा !
किन्तु हमने अपनी चुल्लुचुली बीबी की तबियत का तेजो को
खूब तारीफ की ।

खुलासा यह कि पत्र रख दिया गया । उसका जो जवाब
आया तो उसमें और भी बड़े-चढ़े शेर थे । चार पाँच ही पत्र
इस तरह आये गये थे, कि पत्र भेजने वाले अपने असली
मतलब के बहुत करीब आ गये, और इबारतों में प्रेम की कथा
सुनाने लगे ।

हमने बीबी से कहा कि मारो गोली, जाने दो, किन्तु वह
कठिनाई से मानी । मगर वे दूसरे हजरत भला क्या मानते ?
उनके इस तरह लम्बे चौड़े पत्र आने लगे, कि चाँदनी ने कहा,
कि अब असंभव है, कि इनके पत्रों का जवाब न दिया जाता ।
अतः उचित जवाब लिख दिया गया, जैसा कि एक औरत को
लिखना चाहिये था ।

हमने अब हामिद को इस रहस्य से सचेत किया । उसने
जब पत्र देखे, तब सिर पकड़कर रह गया । उसने कहा कि ये
हजरत बैरिस्टर साहब हैं और शिकार बाजे दिन उनसे जो
बातचीत हुई थी, उसकी फिर चर्चा की । हम सत्राटे में आगये,
और हमें शीघ्र मालूम हुआ कि कदाचित् इस सबब से बैरिस्टर
साहब ने हमारे यहाँ आना बन्द कर दिया है । चाँदनी को
एक दुःख सा हुआ कि जैसे उसका कुछ नुकसान हो गया हो ।
किन्तु वह थोड़ी देर में बोली, कि यदि आप दोनों आदमी
चुप रहें, तो मैं वह तमाशा दिखाऊँ, कि आप लोग जिन्दगी

भर याद करें। हमने कहा, यह क्या, तो उसने किसी बहुत बड़ी शरारत का उदाहरण देते हुए कहा; कि हम तुमको न बतायेंगी। उसके चेहरे पर शरारत नाच रही थी और वह हँस रही थी।

X

X

X

उसने एक पत्र, इन गुमनाम पत्रों के लिखने वाले को उनके पत्र के जवाब में लिखा कि चूँकि आप मुझसे अकेले में मिलने के अधिक इच्छुक हैं, अतः आप मुझसे पालो के मैदान में मिलियेगा। किन्तु याद रखिये कि आप वहाँ इस प्रकार छिपे हुये हों, कि सड़क पर से दिखाई न पड़े। अच्छा यह है कि सड़क से कुछ दूर पर जा पेड़ है, उस पर चढ़कर पत्तों में छिप जाइयेगा। मैं अगर खुदा की मेहरबानी हुई, तो मगरिब के नमाज के वक्त पहुँचूँगा। दिन आर तारीख़ तां नियत ही थी। हम भट नियत समय से पहले हामिद को लेकर बैरिस्टर साहब के यहाँ पहुँचे, और उनसे कहा, कि चलो मोटर पर हवा खा आयेँ बैरिस्टर साहब तैयार न हुए। जब हमने कारण पूछा, तब कहने लगे कि आज मैं कहीं न लाऊँगा.....। इस पर हम दोनों ने कहा, कि फिर हम भी आप ही के यहाँ बैठते हैं। बैरिस्टर साहब चकराये और कहने लगे, कि भाई वास्तव में बात यह है कि मुझे एक जगह एक मुकदमे के सम्बन्ध में जाना है। हमने कहा, हम भी आपके साथ चलेंगे। किन्तु बैरिस्टर साहब ने विवश होकर कहा, “अफसोस है, मैं कुछ ऐसे काम में शहर में ही एक साहब से मिलने जा रहा हूँ, कि आप लोगों को बता नहीं सकता। मुझे माफ़ कीजियेगा।” जब हमने खूब छका लिया तब चले आये।

४

मोटर को तो हमने पोलो के मैदान से कुछ दूर छोड़ दिया, । हम और हमिद और दा साहब और जिनसे हम क्लब से पकड़ लाये थे, टहलते-टहलते पोलो के मैदान के उस पेड़ के पास पहुँचे । लापरवाही के साथ हम पेड़ के नीचे आये, ऊपर जब दृष्टि उठाकर देखते हैं तब बैरिस्टर साहब लटकते हुए हैं । आश्चर्य से हमने बनावट के साथ चिल्लाकर बैरिस्टर साहब को पुकारा और साथी भी दौड़ कर आये । हमने और हमिद ने बैरिस्टर साहब से कहा कि क्यों जनाब, आप तो शहर में न त्री साहब से मिलने जानबाले थे । आखिर उसके खिलाफ र्ज क्या, कि पेड़ पर लटके हुए हैं । खुदा के लिए जल्द इसी लो को हल कर दीजिये । बैरिस्टर साहब शर्म की मुसकुहाट चिकाम ले रहे थे । कहने लगे कि भई ! असल में बान यह है कि मैं आकल तारों के परिवर्तन और उनकी गति पर विचार कर रहा हूँ । अतः एक विशेष तारे, शनि का उदय होना देखने के लिए चढ़ा था । हम लोगों ने एक जोर की हँसी हँसी और अलग-अलग रायें कायम की । बैरिस्टरी साहब न जाने किस कठिनाई से चढ़े होंगे । क्योंकि जूता पहने हुए थे । हम लोगों ने मदद देकर उतारा । अब गम्भारता और शान्ति से जब उनसे कारण पूछा, तब फिर वही कहने लगे, कि शनि का उदय होना देख रहा था । चादनों ने बैरिस्टर साहब को ऐसा शनि का तारा दिखाया, कि उनकी लोगों ने बोलती ही बन्द कर दी । यार-दोस्त, मिलने वाले, जिनको असली कारण का ज्ञान न था, सब यही कहते थे कि न जाने क्या मामिला होगा ? क्लब में और कचहरी में, मतलब यह कि किसी भी जगह अगर कोई किसी से बहाना कर तो आपस में यह

मुहाविरा चालू हो गया, कि कहीं शनि देखने तो नहीं जा रहे हो। यहाँ तक कि वैरिस्टर साहब की नाकों में दम आ गया। इसी प्रकार हमारी चाँदनी ने वैरिस्टर साहब को कई जगह दौड़ाया। एक बार लिख दिया कि “पुराने किले के दरवाजे के सामने ठीक साढ़े पाँच बजे मोटर पर मिलिएगा, मैं टहलने आऊँगी। किन्तु मेहरबानी करके अकेले होइयेगा।” हम लोग चहलकदमी के लिए निकल गये और ठीक सवा पाँच बजे वहाँ पहुँचे, वैरिस्टर साहब मौजूद थे। हम हमिद और एक साहब और थे, झूट दौड़कर मोटर में बैठ गये और कहने लगे, भाई खूब मिले। वैरिस्टर साहब ने घड़ी की ओर देखा और कहा, “भई तुम लोगों की क्या मंशा है?” हमने कहा, यही कि हवाखोरी करें और घर वापस चलें। वैरिस्टर साहब ने कहा कि मैं इतना कर सकता हूँ कि तुम लोगों को से तुम्हारे घर पहुँचा दूँ, और बस। क्योंकि मुझको किसी दुष्ट जगह जाना है। हमने कहा—तहाँ साहब, माफ कीजिये, तुम लोग उतरे जाते हैं। यह कहकर हम लोग उतर कर एक पुर्त पर बैठ गये। अब वैरिस्टर साहब बड़े चकराये कि हम लोग यहाँ से टलते ही न थे। वे यह चाहते थे, कि हम लोगों को मोटर पर लाद-मार कर कहीं फेंककर फिर लौट आयें। दूसरी बार आये, और हमें इस बात पर राजी करने लगे, कि चलो घर पहुँचा दें। किन्तु हम भला क्यों मानने वाले थे, वहाँ बैठे-बैठे छः बजा दिये। वैरिस्टर साहब लाचार होकर चले गये। हम किस प्रकार बतायें कि वैरिस्टर साहब ने, इस आकस्मिक भेंट की पत्र द्वारा चाँदनी से किस तरह चर्चा की।

मतलब यह कि चाँदनी ने वैरिस्टर साहब से बहुत कवायद कराई। कभी रात को स्टेशन पर दौड़ाया, तो कभी मीलों

पैदल चलाया। कभी शिकार के लिये तैयार किया, तो कभी ऐसी गड़बड़ी कर दी कि स्वयं न जा सकी, और बैरिस्टर साहब ने नाशते का प्रबन्ध किया जिसे यार दोस्तों ने उड़ाया।

X X X

बहुत जल्द इस झूठे पत्र-व्यवहार से मन भर गया, और हमारी समझ में ही न आता था, कि आखिर बेकार इस प्रकार बैरिस्टर साहब को दौड़ाने से क्या फायदा? कोई विशेष मनोरञ्जन न होता था। किन्तु चाँदनी का इन मामिलों में हम सभी लोगों से अधिक दिमाग काम करता था। हामिद के एक दास्त सब इन्सपेक्टर पुलिस थे, जो सिविल लाइन के थाने में दूसरे दर्जे के अफसर थे। इनसे हमसे केवल मामूली जान-पहचान थी। मेरी बीबी ने हामिद साहब से कहकर इनसे मिलने की इच्छा प्रकट की, और इनको एक दिन चाय पाने के लिये बुलाया। इनको इस भेद की बात को बताकर हमारी चुलबुली बीबी ने जा तजर्जीब सामने रखी, वह सबको बहुत पसन्द आई। बैरिस्टर साहब के सभी पत्र चाँदनी ने उनको दे दिये।

X X X

इतवार का दिन था, बैरिस्टर साहब अपने बँगले में नाश्ता इत्यादि से छुट्टी पाकर बैठे हुए थे। एक इक्का आकर रुका, और उस पर से एक पुलिस सब इन्सपेक्टर दो सिपाहियों के साथ उतरा। बैरिस्टर साहब को सूचना दी गई और वे बाहर आये। सब-इन्सपेक्टर साहब से बैरिस्टर साहब की बिलकुल जान-पहचान न थी। बैरिस्टर साहब से सब-इन्सपेक्टर साहब ने कहा कि मैं अकेले में कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। बैरिस्टर साहब अपने मिलने के कमरे में सब इन्सपेक्टर साहब को ले गये और कहा, “फरमाइये, क्या हुक्म है?” इन्सपेक्टर

साहब ने ढङ्ग से अपनी जेब से पुलिस की तलाशी का वारन्ट निकालकर सामने रखवा, और कहा कि मैं आपके घर की तलाशी लेने आया हूँ, जिसकी इजाजत दी जाये। बैरिस्टर साहब सामूली आदमी नहीं थे। तुनक कर बोले, यह क्या ? सब इन्स्पेक्टर साहब ने हमारा नाम लेकर कहा, कि उन्होंने आपके और अपनी बीबी के सम्बन्ध में कुछ जवाहिरातों की चोरी के बारे में पुलिस में रिपोर्ट लिखाई है और ये पत्र दाखिल किये हैं। जनको वे बताते हैं कि आपक हैं, और मुझको अब मुकदमे की जाँच-पड़ताल के लिये तलाशी लनी है। क्योंकि उनका बयान है कि आपके यहाँ उनकी बीबी के पत्र निकलेगे।

‘किन्तु ये मेरे पत्र नहीं हैं।’ बैरिस्टर साहब ने झूठ बोलते हुए कहा—“यह झूठा इलजाम लगाना है।”

“मैं लाचार हूँ। तलाशी के बाद स्वयं मालूम हो जायगा। क्या आप अपनी कोई लिखावट पेश कर सकते हैं ?” थानेदार साहब ने कहा।

बैरिस्टर साहब, हालाँकि कानूनवाँ थे, किन्तु कहने लगे, “यह मेरा अपमान है। मैं हरगिज इस तरह अपनी लिखावट दिखाने को तैयार नहीं हूँ।”

“माफ़ कीजियेगा, मैं लाचार हूँ। और घर की तलाशी में जनाब की लिखावट भी मुझको कहीं न कहीं मिल जायगी, जिसे मैं स्वयं अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए ले लूँगा।”

“मैं शायद तलाशी भी इस तरह न दे सकूँ।” बैरिस्टर साहब ने कहा।

‘माफ़ कीजियेगा। आप कानूनवाँ हैं, और मुझे आशा नहीं कि आप झगड़े को अधिक तूल देंगे। आपको मालूम है

कि पुलिस अफसर को उसकी अफसरी के कर्तव्यों को अदा करने से रोकना जुम है। मैं आशा करता हूँ, कि आप मुझको तलाशा लेने में मदद देंगे और अपने बयान लिखा देंगे।

“मैं सुपरिन्टेंडेंट पुलिस को लिखता हूँ।” बैरिस्टर साहब ने कहा।

“मैं इस बीच में अपने कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश करता हूँ।” यह कह कर सिपाही को पुकारा।

“आप अच्छी तरह समझ लीजिये, कि मेरी तौहीन हो रही है, और आप को जब तक पुलिस सुपरिन्टेंडेंट का जवाब न आ जाय, कानूनन रुकना पड़ेगा।” बैरिस्टर साहब ने कहा।

“मैं माफी चाहता हूँ कि मैं रुक नहीं सकता और अच्छा होता कि आप इस मामिले को तूल न दें।”

इतने में मांटर की आवाज आई, और हामिद साहब आये। सीधे कमरे में घुसे चले आये और इन्स्पेक्टर साहब और बैरिस्टर साहब को बात-चीत करते हुए पाया। सब इन्स्पेक्टर साहब ने हामिद से कहा, “यह बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गये। मेहरबानी करके साहब को समझा दीजिये।”

“आखिर क्या मामिला है?” हामिद ने पूछा।

“आप स्वयं बैरिस्टर साहब से पूछ लीजिए। मैं अलग बैठ जाता हूँ।” यह कहकर वे बाहर आ गये, और बरामदे में बैठ गये।

हामिद ने बनावट के साथ आश्चर्य से बैरिस्टर साहब को देखा, जिनका विचित्र ही हाल था। और कुछ पूछने ही वाले थे, कि थानेदार साहब फिर कमरे में घुस आये और हामिद से कहा, कि जरा मेरी बात सुन लीजिये। पहले मैं आपको सारा हाल बता दूँ।” बैरिस्टर साहब का बस न था कि वे सब

इन्सपेक्टर साहब को इससे रोकते। सब-इन्सपेक्टर साहब ने हामिद को दूर पर कुछ अलग ले जाकर सब हाल बताया और पत्र दिखाये। बैरिस्टर साहब यह सारी बनावटी कार्रवाई देख रहे थे। इसके बाद इन्सपेक्टर साहब फिर कमरे से बाहर चले आये।

हामिद का दिल तो चाहता था कि इस समय बैरिस्टर साहब से उनको शिकार वाने दिन की बेवकूफी का बदला लेकर उनसे भुक्त कर सलाम करें, किन्तु इस प्रकार खेल बिगड़ जाता। उधन बैरिस्टर साहब के चेहरे और मौके को देखते हुए कहा कि अब क्या करना चाहिये।

“कोई तद्दीर तुम निकालो और इसको खतम करो।” कुछ देर तक चुप रहने के बाद बैरिस्टर साहब ने कहा।

हामिद इन्सपेक्टर साहब के पास आये और फिर बैरिस्टर साहब के पास जाकर कहा, कि वे कहने हैं कि मैं बिना उन पत्रों के लिए हुए किसी प्रकार नहीं जा सकता। हामिद ने बहुत कुछ मानवी सहानुभूति और भुगैवत का परिचय दिया था और सब इन्सपेक्टर को स्वयं भी सहानुभूति थी, किन्तु वे लाचार थे। क्योंकि यह मामिला स्वयं अफसर अव्वल अर्थात् खाने के बड़े इन्सपेक्टर के हाथ में था। बैरिस्टर साहब ने दूसरी राय यह दी थी कि भाई! नजराना देकर उनको टाल दो। अब इन्सपेक्टर साहब भा आ गये, और हामिद ने बैरिस्टर साहब के सामने उनसे सिफारिश की और कहा कि शहर के एक बड़े प्रतिष्ठित आदमी की इज्जत का मामिला है। आप इसमें नरमी और रिआयत से काम लीजिये और कह दीजिये कि तलाशों में कोई चीज नहीं पायी गयी।

“वाह अनाब, आप मुझे फँसाना चाहते हैं। यद मे पत्र बैरिस्टर साहब के लिखे हुए हैं तो वे पत्र यहाँ न निकलें यह असम्भव है और हर आदमी मेरे ऊपर शक करेगा और मैं कहीं का न रहूँगा।”

“माफ कीजियेगा। मैं आपकी जो कुछ भी रुपये-पैसे से सेवा सम्भव हो, करने को तैयार हूँ।”

“हामिद साहब, मुझे बड़ा दुःख है कि आप मुझको इस तरह अपमानित करते हैं। मेरे कायूँस होता तो मैं बिना कुछ लिए दिये आपकी और बैरिस्टर साहब की खिदमत करता। किन्तु यह मामिला तो थाने के बड़े अफसर से सम्बन्ध रखता है।”

“अच्छा, यह बताइये कि वे कुछ ले-देकर मामिले को खतम कर देंगे ?” हामिद ने पूछा।

“मैं कह नहीं सकता। यह आप स्वयं उनसे पूछें, तो अच्छा है।”

“अच्छा आप केवल इतना बता दें कि वे मुकदमों में लेते हैं ?” हामिद ने कहा।

“हाँ, वे अवश्य लेते हैं, किन्तु मैं कह नहीं सकता कि इस मामिले में उनकी क्या राय है ?” अब इन्स्पेक्टर साहब ने कहा।

“बस तो यदि मानवी सहानुभूति आप में कुछ भी है, तो इस मामिले को तै कर दीजिये।” हामिद ने कहा।

“मैं वादा नहीं करता। किन्तु हाँ, उनसे पूरी कोशिश करूँगा। मानें या मानें, इसका मैं जिम्मेदार नहीं। किन्तु आपको वे तमाम पत्र और खिलौने का नमूना अवश्य देना पड़ेगा।”

“हम अभी दे देंगे। किन्तु आप मरुद करने का वादा करें। जो रकम भी आप इस मामिले में तै करा देंगे, वह हम उनकी भेंट करा देंगे।”

अतः मामिला तै हो गया। बैरिस्टर साहब पत्र लाने के लिये उठे, तो इन्सपेक्टर साहब भी उनके साथ उठे और कहा, कि जनाव, कोई पत्र नष्ट न हो, मेरे सामने निकालिये। विवश होकर बैरिस्टर साहब को सभी पत्र और अपनी लिखावट का नमूना देना पड़ा।

सब इन्सपेक्टर साहब ने इन चीजों को कब्जे में करके संक्षेप में बैरिस्टर साहब के तहकीकात बयान लिए; जिसमें बैरिस्टर साहब ने हर बात में इन्कार किया।

चलते समय तक सब इन्सपेक्टर साहब से पक्का वादा ही नहीं कराया गया, बल्कि उनके साथ थाने पर गये और मामिला इस तरह तय हुआ कि पाँच सौ रुपये बैरिस्टर साहब नजर दें। हामिद लौटकर आये, और सब इन्सपेक्टर साहब की सिफारिश और कोशिशों का हाल बताकर के कहा कि बड़ा दारोगा तो दो हजार से किसी तरह कम नहीं करता था।

“सचमुच सब इन्सपेक्टर साहब बड़े अच्छे आदमी मालूम होते हैं। किन्तु भई, आज उन्होंने यह काम किया कि जिन्द्गी भर तक एहसानमन्द रहूँगा। मैं बस शीघ्र ही उनको एक दाबत दूँगा”—हामिद ने कहा।

“अवश्य देना चाहिये। सचमुच इन्होंने मेरी इज्जत बचा ली।” बैरिस्टर साहब ने कहा—“भई हामिद माफ करना! तुमने देख लिया न कि तुम्हारे दोस्त की बीबी कैसी हैं।”

“मैं उनको अच्छी तरह जानता हूँ। किन्तु सच बताना कि क्या पत्रों ही तक दोस्ती सीमित रही, या……।”

“यह मुझने आप न कइलवाइये।” बैरिस्टर साहब ने कहा, “यह तो केवल संयोग था, कि शायद मेरा कोई पत्र पकड़ लिया गया। किन्तु मैं तुमसे आज कहे देता हूँ, कि वह औरत अब उनके पास न रहेगी।”

“क्यों ?”

“इसलिये कि वह अब मेरी हो चुकी।”

बैरिस्टर साहब ने बहुत जल्द पाँच सौ रुपये इन्स्पेक्टर साहब की सेवा में भेज दिये।

X

X

X

इस घटना को पन्द्रह-बीस दिन हो चुके थे, और बैरिस्टर साहब से हमारा वित्तकुल मिलना जुलना बन्द था। हमिद के यहाँ आज बड़े ठाट-बाट का डिनर था, और मना यह कि चाँदनी और हम दोनों बुनाये गये थे। वास्तव में यह डिनर हमिद के दोस्त सब इन्स्पेक्टर साहब की आवभगत में था। हम और चाँदनी, शाम होते ही हमिद के यहाँ जा पहुँचे। वह तो जनानखाने में हमिद की माँ और पहरों की दावत के इन्तजाम में हाथ बँटाने चली गई, और हम और हमिद बाहर गप्पें लड़ा रहे थे।

X

X

X

बैरिस्टर साहब भी आये, और हमको देखकर अधिक आश्चर्य में पड़े। हम उनसे बड़ी अच्छी तरह मिले, और मजा तो तब आया जब कि चाँदनी भी आ गई। कमरे में केवल हम और चाँदनी और हमिद थे। चाँदनी ने बैरिस्टर साहब से हाथ मिलाया और उनकी तबीयत का हाल पूछा और उनसे कई दिनों से भेंट न होने की शिकायत की। बैरिस्टर साहब का

विचित्र हाल था, और उनकी बुद्धि काम न करती थी, कि इलाही यह क्या माजरा है। खैर कुछ भी हा, किन्तु वे भी मुनासिब बातें करते रहे। हमारी बीबी इस समय प्रसन्नता और बातों का खजाना बन रही थी, और उसका सारा ध्यान बैरिस्टर साहब की आर था। किन्तु बैरिस्टर साहब का कुछ विचित्र ही हाल था। थोड़ी ही देर में चाँदनी घर में चली गई। हम दो एक मेहमानों से बातें करत हुए बाहर चले गये। बैरिस्टर साहब ने आश्चर्य से हमिद से हमारी और चाँदनी की मौजूदगी, और फिर इस प्रकार के अच्छे बरताव का कारण पूछा। हमिद ने कहा कि तुमको दावत के बाद स्वयं ही मालूम हो जायगा। बैरिस्टर साहब बहुत ही प्रसन्न थे और हमिद से उन्होंने इस विचित्र मामिले को सुलभाने की बहुत कोशिश की, किन्तु हमिद ने न बताया, न बताया ?

५

दावत वह ठाट-बाट की था, कि बहुत दिनों से ऐसी दावत खाने को कौन कहे, देखने का भी न मिली होगी। लगभग चालिस मेहमान थे, और मिलने जुलने वालों, यार-दोस्तों और प्रेमियों में से ऐसा कोई न था, जो मौजूद न हो। तरह-तरह के आंगरेजी और हिन्दुस्तानी खाने थे। और वे भी इस तरह ब्यादा कि समझ में न आता, कि क्या खाऊँ और क्या न खाऊँ ! दावत बड़े आनन्द के साथ खतम हुई। और दावत खतम हो जाने पर हमिद ने सबसे पहले चाँदनी के स्वास्थ्य ने नाम पर एक-एक प्याला पीने की सलाह दी। इस पर कह-कहा लगा और लाग उसकी असलियत समझने से लाचार रहे। हमिद ने कहा कि अच्छा, आप लोग इस पर इतना आश्चर्य करते हैं तो जाने दीजिये, और मेरे निवेदन पर इस

दावत के लिए कृतज्ञता प्रगट कीजिये। इस पर कई साहब हँसने लगे और हामिद को धन्यवाद देने लगे कि सचमुच हम कृतज्ञ हैं कि आपने ऐसे ठाट-बाट की दावत दी। हामिद ने फौरन कहा कि हजरत, आप लोग मुझ गरीब के लिए कृतज्ञता क्यों प्रकट करते हैं ? आप लांग व स्तव में बैरिस्टर की साहब को धन्यवाद दें। लांग हँसन लगे और बैरिस्टर साहब की आर आरुर्पित हुए। दस पाँच को पहले ही से हामिद ने सिखा रक्खा था। उन्होंने बैरिस्टर साहब को इतना धन्यवाद दिया, कि बैरिस्टर साहब भी आश्चर्य में पड़ गये। इतने में एक मुंसिफ साहब जार से चिल्लाकर बोले, कि भई आखिर यह कौन सा पहेली है, जिससे आधे लोग तो परिचित मालूम होते हैं और पूरा आनन्द उठा रहे हैं, और बाकी बेवकूफ बने हुए हैं।

इस पर हामिद ने सबको शान्ति करके असली किस्सा सुनाया ! शनि सितारे को देखने के लिए बैरिस्टर साहब जब पेड़ पर थे, तब किसी के समझ में न आता था कि क्या मामिला है। अतः हामिद ने हमारी बीबी का वह पत्र पढ़कर सुनाया, और सुनने वालों से कहा, कि बताइये, कि बैरिस्टर साहब क्यों न शनि का उदय होना देखें ? बैरिस्टर साहब का विचित्र हाल था, कि काटो तो बदन में खून नहीं। इस पूरे किस्से को खतम करने के बाद सब इन्स्पेक्टर साहब को कोशिश का हाल सुनाया और पाँच सौ रुपये वसूल होने की चर्चा करके कहा, कि जनाब, पाँच सौ रुपये में से अस्सी रुपये ग्यारह आने दावत में खर्च हुए। चार सौ बीस रुपये पाँच आने यह हाजिर हैं, जो बैरिस्टर साहब को लौटाये जाते

हैं और आप सब लोग हृदय से बैरिस्टर साहब को धन्यवाद दीजिये।”

इस पर तो वह मजा आया, कि शायद ऐसा कभी न आया था। जिनको पहले ही से बता दिया गया था, उन लोगों ने बैरिस्टर साहब को धन्यवाद देते-देते नाक में दम कर दिया। बैरिस्टर साहब शीघ्र ही भाग गये और किसी तरह न रुके। बड़ी देर तक इसी घटना पर आपस में बातें होती रहीं, और सभी दूसरे किसी भी कहे गये। इस दावत में बहुत से लोगों को हमारी बीबी की ओर से विचार बदलने पड़े। खुलासा यह कि दावत बड़े जोर की रही।

X

X

X

अफसोस, कि बैरिस्टर साहब इस स्थान से इस तरह नाराज हुए, कि अपनी जमी-जमाई प्रेक्चियर का छोड़कर इस घटना के बाद ही अपने देश चले गये और फिर डेढ़ साल तक तो हम बहाँ रहे, किन्तु तब तक तो वे आये नहीं।

आठवाँ परिच्छेद

दोस्त की बेवकूफी

हमारे पुराने और लँगोटिया दोस्त दा-तीन ही थे, जिनमें से एक हमिद थे, जिनके शहर में हम रह चुके थे, और एक कामिल थे। किस्मत की खूबी कि अब उनका साथ हुआ। हम नहीं कह सकते कि हमें उनसे कितनी मुहब्बत थी, और जब हम उनके शहर में आये, तब उन्होंने हमिद से भी अधिक

हमारी और चाँदनी की आवभगत की। हामिद की तरह ये भी रईस के लड़के थे। किन्तु उनके पिता जीवित थे। हामिद में आर इनमें यदि कोई अन्तर था, तो केवल यह कि हामिद को सैर और शिकार से प्रेम था और वह अपनी जायदाद का स्वयं प्रबन्ध करता था और यदि एन० एल० बी० में फेल न हो जाता तो शायद वकालत करता। किन्तु बिचार अवश्य था कि फिर इम्तहान दें। लेकिन कामिल ने एन्ट्रेन्स पास कर के ही पढ़ना छोड़ दिया था और उनका अपनी जायदाद के काम इत्यादि से कोई दिलचस्पी नहीं थी, किन्तु हमारे सम्बन्ध दोनों से एक समान थे। जिस तरह हामिद हमारे और हमारी बीबी के लिये एक आवश्यक चीज थे, उसी तरह कामिल भा थे।

जब से हम आये थे, हमें और चाँदनी दोनों को इनके बिना आनन्द ही न आता था। हम क्लब में जाया करते थे और कामिल हमारी चाँदनी को अपनी बहनों के साथ मोटर में बैठाकर दवा खिलाने ल जाते थे। कभी अपनी बहनों को बैठाकर हमारे यहाँ आते और चाँदनी साथ ही जाती और कभी चाँदनी को घर ले जाते और वहाँ अपनी बहनों को भा साथ में ले लेते।

१

किसी ने सच कहा है कि आदमी की परख उसके साथ व्यवहार करने से मालूम होती है। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ, कि कामिल के स्वभाव में बुरी बातें और आवारगी है। हमें यह सुनकर दुख अवश्य हुआ, किन्तु हमने कभी उसको प्रकट न किया। वास्तव में हमें कभी कुछ खयाल भी न हुआ।

और हमने कभी चाँदनी से यह भी न पूछा कि तू कहाँ जा रही है।

कामिल के बारे में हमने जो बात सुनी थी, इसमें इस बात से तरक्का हुई कि अधिक दिन नहीं बीते थे, कि एक दिन चाँदनी ने कामिल की चर्चा केवल बातों ही बातों में कहा, कि कामिल साहब कुछ अच्छे आदमी नहीं मालूम होते। मुझे उनके साथ हवाखोरों के लिये जाना ठीक नहीं मालूम होता है।

हमने इस बात को सामने रख कर उनकी चाल-चलन पर विचारा करते हुए चाँदनी का समर्थन किया, किन्तु यह अवश्य पूछा कि “तुमने उनके चाल चलन के बारे में किससे सुना।”

“वे मुझसे आवश्यकता से अधिक मनोरंजन करने लगे हैं और ज्यादा हिलने-मिलने की कोशिश भी करने लगे हैं, जो मुझको पसन्द नहीं।”

हमने कहा—“तुमसे हामिद से भी अधिक मिलना-जुलना था। क्या, वे तुमसे मनोरंजन नहीं करते थे।”

“हामिद भाई-सा आदमी मिलना तो दुनिया में मुश्किल है। सब कुछ था, किन्तु वे अकेले में मेरी आर आँख उठाकर देखना पाप समझते थे। उनके मिलने-जुलने और कामिल साहब के मिलने-जुलने में अधिक अन्तर है।” हमने पूछा कि “आखिर वह क्या अन्तर है?”

चाँदनी ने कहा, “मेरी समझ में नहीं आता। किन्तु ऐसा अन्तर है, कि मेरी तबीयत उनकी ओर से उदास रहती है।”

हमने कहा कि तुमको इस बात का अनुभव आज हुआ होगा। किन्तु मुझको कदाचित् कुछ पहले ही से सन्देह है कि वे मेरे कारण तुमसे नहीं मिलते, बल्कि सच बात तो यह है

कि तुम्हारे करण मुझसे मिलते हैं। मैं स्वयं इस विचार में हूँ कि तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना कम हो जाय तो अच्छा है।” चाँदनी के सन्देह की पुष्टि हुई, और वह आश्चर्य में पड़कर बोली, “खुदा का कसम, मैं उनको कभी ऐसा न समझती थी।”

“वे वास्तव में बदमाज और आबारा हैं, और तुम्हारा उनसे मिलना-जुलना किसी तरह ठीक नहीं।”

यह सुनकर चाँदनी काध से नाच उठी और कहने लगी,— “माफ़ काँजिये, उनकी आवारगो शहर की गन्दी गलियों हाँ तक सीमित रह सकती है। मेरा वे क्या बिगाड़ सकते हैं?”

“तू सच कहती है।” हमने दिल में प्रसन्न होकर कहा— “किन्तु बुरे आदमी से दूर हो रहना चाहिये।”

“वे दिन भूल गये, जब कहते थे, कि बुरी संगीत में उठने बैठने से तुम्हें नुकसान न पहुँचेगा।” चाँदनी ने पुरानी बातों को याद दिलाया। हमने कहा, “तो तुम जानो, हम तुमको रोक्ते थोड़े ही हैं।”

“तुम मना कर दो, तो मैं हरगिज उनसे न मिलूँ।” उसको अखें चमकने लगीं और उसने हाथ उठाकर कहा—“ठीक कर दूँगी।”

“इससे क्या मतलब?” हमने पूछा।

“यदि वे सचमुच कुछ भाँ आबारा हैं तो तुम मुझसे पहले ही की तरह मिलने दो। यदि कभी ज़रा भी गलत रास्ते पर पैर रखेंगे तो वह मुझकी खायेंगे कि जिन्दगी भर न भूलेंगे।”

हम चुप हो गये। हम जानते थे कि यह खैरखाही बिल-

कुल थोड़े सिद्धान्तों पर कायम है। किन्तु हम चाँदनी की मुहब्बत और सच्चाई का श्रेष्ठ मूल्य इसी प्रकार चुकाना अच्छा समझते थे कि साधारण सिद्धान्त से अलग रहन हुए बिलकुल निराश न हों। खुदा जाने, इंगलिस्तान के विख्यात कवि 'मिल्टन' ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक 'कोमिस' में किम-किस जगह की भाषाओं का प्रयोग किया है कि उनको पढ़ने से हमारी तो जान तक सदा के लिये पवित्र बन गई। इसका कारण कदाचित् यह है कि इस सुन्दर कवि का सा चाल-चलन कदाचित् ही किसी को मिला हो। उनकी नेक चलनी की दमक उनकी कविता के शब्द-शब्द से प्रकट है। हमारे कानों में इस समय वे शब्द गूँज रहे थे, जो उस नाटक में एक भाई ने दूसरे भाई से बहन के खो जाने पर कहे थे। "हमारी बहन हर प्रकार की मुसीबतों से सुरक्षित है। क्योंकि सम्पूर्ण अन्धकार की अपव्रतता उसकी आवरू और परहेजगारी के प्रकाश के सामने कोई चीज नहीं। उनके पास परहेजगारी की ढाल है, जो वह चीज है कि यदि उसकी आवरू की निगह शैतान के ऊपर पड़ जाये, तो वह फरिश्ता बन जाय, और याद गुम्मे के साथ वहीं पत्थर पर पड़े ता फट जाये और यदि फौलाद पर पड़े, तो माम हो जाये, इत्यादि, इत्यादि।" दुर्भाग्य या सौभाग्य स, यही हमारा मजहब था और इस समय भी है। हम जानते थे, कि चाँदनी और हम वास्तव में एक जान और दो शरीर हैं। हमारी बुद्धि में ही यह बात आनी गैरमुमकिन थी, कि फिर भी हमें दुनियादारी बरतनी चाहिये और उन सिद्धान्तों से पदरेज करना चाहिये, जो प्रत्येक अवस्था में उचित हैं। हमारा ईमान सदा से यहाँ है। कि हम दोनों के ईमान नष्ट होने से पहले स्वयं हमें उसका आभाव मिल

जायगा, वास्तव में यही विचार था, जिससे हमारे विश्वास में मजबूती पैदा न थी।

जिसका हमें सन्देह था वही सामने आया। हम पहले ही यह समझे हुए थे कि कामिल कोई न कोई बेवकूफी अवश्य करेगा। उन्होंने हँसा ही हँसा में एक दिन अकेले में चाँदनी को गोद में लेकर माटर पर बैठा दिया और जब देखा कि चाँदनी ने धैर्य से काम लिया, तब रास्ते में बेहूदी बातें भी का। वास्तव में वे इस योग्य ही न थे कि उनसे किसी दोस्त की बीबी मिले। वास्तव में हमें इस मामिले को यहीं रोक देना चाहिये था। किन्तु हमने भूल की और प्रचलित सिद्धान्त से अलग हटकर दूसरा रास्ता पकड़ा। इसका कारण हम बता हा चुके हैं। किन्तु एक कारण सामने आया। क्योंकि अब चाँदनी दाँत पीस रही थी, कि मजा चखा दूँगी और हम भी चाहते थे कि कुछ स्वयं उसे और कुछ मियाँ कामिल को अनुभव प्राप्त हो। हमें अब मालूम होता है कि हम खतरनाक जुआ खेल रहे थे।

“कल दोपहर को जब तुम कचहरी में रहोगे, तब उन्होंने आने का कहा है।” सिर हिलाकर वह बोली और फिर मुसकराने लगी। फिर देखता क्या हूँ कि उसकी आँखों ने शरारत प्रकट की और वह कुछ सोच चुकी थी।

“तू क्या करगी ? हमें बता तो सही।” हमने पूछा।

“देखा जायगा। किन्तु तुम यहाँ कचहरी से डेढ़ घंटे अवश्य पहुँच जाना। आधे दिन की छुट्टी ही सही। स्वयं ही उन्होंने आने का कहा है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु इतना जानती हूँ कि वे जरूर आयेंगे।”

हमारे दोस्त कामिल ठीक एक बजे हमारे मकान पर पहुँचे। आकर मिलने के कमरे में बैठे। हमारी चुनबुली बीबी ने जान-बूझकर बीस मिनट आने ही में लगा दिये। वह सिर में एक रुमाल इस तरह बाँधकर आई कि जैसे सिर में दर्द है और मुँह भी वैसा ही बना लिया। कामिल ने सलाम बन्दगी के बाद उठकर हाथ मिलाया और तबीयत का हाल पूछा। मालूम हुआ कि धिर में दर्द है तो कहने लगे कि लाइये मैं सिर दबा दूँ।” कहा ही नहीं बल्कि उठकर सिर दबाने की अधिक उत्सुकता प्रकट की। चाँदनी की जान सुलग उठी और यह हरकत उसको बहुत बुरी मालूम हुई। किन्तु उसने प्रकट न होने दिया और धन्यवाद देकर के कहा कि आप तकलीफ न करें। अन्त में कामिल साहब ने वह काम कर डाला जिसके लिये वे आये थे। बातों ही बातों में चाँदनी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले; क्या कहूँ, बिना आपके साथ के मेरा जी ही नहीं लगता। चाँदनी ने अपना हाथ ता खुशाने के बहाने से छुड़ा लिया और फिर बहुत ही सरलता के साथ कहा, मिलने-जुलने से आपस में लगाव हो ही जाता है! मुझको स्वयं आप की प्रशंसित अच्छी आदतें बड़ी प्रिय लगती हैं।

इतना कहकर था कि हामिद साहब ने अधिक स्पष्ट होकर कहा—“मुझे आपसे बहुत ज्यादा प्रेम है।”

चाँदनी, चूँकि इन खुराफातों की प्रतीक्षा कर रही थी, अतः उसको इस पर कुछ आश्चर्य न हुआ। उसने बहुत ही साधारण ढङ्ग से कहा—“बहुत ही कम दिल हैं, जिनमें इस तरह के भाव होंगे। सचमुच वह दिल ही क्या है, जिसमें खुदा की मुहब्बत न हो, बाप की मुहब्बत न हो या बहनों की मुहब्बत न

हो और या दोस्त की मुहब्बत न हो। वास्तव में मुहब्बत और प्रेम में पद के मुताबिक सभी का हिस्सा है।”

कामिल बेवकूफी के मैदान में इस तरह और आगे बढ़े—
“आप भूली हैं। इस दिल में आपकी मुहब्बत के अलावा और किसी की मुहब्बत नहीं।”

न जाने क्या गलतफहमी हुई कि नौकर की आवाज को सुनकर, “मैं अभी हाज़िर हुई” कहकर बाहर आई, और बहुत ही बनावट के साथ घबराकर कमरे में गई और रहस्य भरे स्वर में कामिल से कहा, “वे आ गये, जल्दी कीजिये। गुसुलखाने में।” उसने यह पार्ट इस तरह घबराकर और जल्दी के साथ किया, कि जैसे ही उसने कामिल का हाथ पकड़कर गुसुलखाने का दरवाज़ा बताया, बिना कुछ सोचे-समझे उसमें घुस गये और उसने दरवाज़ा बाहर से बन्द कर लिया।

वास्तव में देखा जाये तो कामिल को छिपाने की आवश्यकता न थी और न उसका ऐसा विचार ही रहा होगा। लेकिन चूँकि दिल में चोर था, अतः उसी बौखलाहट में बन्द हो गये।

हम कमरे में आये। मोटर बाहर देख ही चुके थे। अपनी चुलबुली बीबी को मुसुकुराती हुई पाया। हमने कोट उतारकर पूछा कि हमारे दोस्त कहाँ हैं ?

चांदनी ने मुसुकुराकर कहा, “टापे में।” और गुसुलखाने की ओर इशारा किया। और हमारा हाथ पकड़कर अपने साथ लिया। हम दोनों दबे पाँव भिजने वाले कमरे से होकर गुसुलखाने के पास पहुँचे। चांदनी ने धीरे से गुसुलखाने के दरवाज़े पर उंगली मारी और दबी आवाज से कामिल को पुकारा। उन्होंने जवाब दिया, तो उनसे कहा कि “मैंने कह दिया है कि आप की माता जी ने शोफर को मोटर लेकर मुझे लेने भेजा

है। किन्तु मोटर बिगड़ जाने के कारण वह चला गया और अभी तक लौटकर नहीं आया।" कामिल ने इस बहाने को पसन्द किया। फिर हमारे समय से पहले चले आने का कारण पूछा। जिसका जवाब चाँदनी ने दिया, कि 'मेरे सिर दर्द के कारण चले आये।' इसके बाद उन्होंने कुछ बेवकूफी से भरी बातें बकनी शुरू कीं तो वह गुसलखाने में कष्ट पाने के लिए माँफो माँगने लगी, जिसका जवाब उन्होंने यह दिया कि 'हमको इसी में आराम है।' हम दोनों हँसते हुए आये, अब हम यह सोच रहे थे कि इनको भला कब तक बन्द करके रक्खा जायगा।

३

चाँदनी ने व्यौरेवार कामिल को बेवकूफियों की चर्चा की। तीसरे पहर तक बातें होती रहीं। चाय तैयार हुई तो चाँदनी ने चाय की एक प्याला कामिल साहब को गुसलखाने में पहुँचाई। उन्होंने धन्यवाद का जब पुल बाँध दिया, और बेवकूफी की बातें शुरू की, तब उसने एक कागज और पेंसिल देकर कहा, कि "अपने लोकर को लिख दीजिये कि आपके दोस्त को हवा, खोरी के लिये ले जाय! मैंने कहा है कि मैं आज कहीं न जाऊँगी।" साफ बात है कि कामिल साहब ने उससे कैसा मतलब लगाया होगा।

आध घण्टे बाद शोफर आ गया, हम और चाँदनी कामिल को गुसलखाने में बन्द छोड़कर उनके मोटर में हवा खाने चल दिये। शाम को जब लौटकर आये, तब सीधे गुसलखाने के पास पहुँचे। कामिल को चाँदनी ने लक्ष्य करके कहा, "माफ कीजियेगा। मैं आपको इस कैदखाने में छोड़कर जाने के लिए विवश हुई। क्योंकि मुझे विवश हो जाना पड़ा।"

कामिल ने कहा, “कुछ मुजायका नहीं। किन्तु अब मेरा जी घबड़ा उठा है। दोपहर से बन्द हूँ। अच्छा, सच बताइयेगा कि आपको आज की हवाखोरी में अधिक आनन्द आया या मेरे साथ अधिक आनन्द आता है।”

चाँदनी ने शरारत गरज से किन्तु बहुत हाँ ईमानदारी के साथ कहा, “खुदा जानता है।” और यह कहकर कहा कि मैं दरवाजा खोले देती हूँ। आर धीरे से निकल आइयेगा। आपकी मोटर इस ओर खड़ी हुई है।”

“अच्छा-अच्छा, मगर यह तो बताइये कि मैं कल दोपहर में आऊँ?” कामिल ने पूछा।

वह बोली—“कल शाम को आइयेगा। मैं आपकी बदन से बादा कर चुकी हूँ।”

हमने कमरे से देखा कि कामिल जल्दी से गुप्तखाने में से निकले। हम कमरे ही कमरे से निकलकर पहले ही मे मोटर के पास जाकर खड़े हो गये। हमें देखकर वे कुछ भिन्नक से उठे, किन्तु फौरन बोले, “वाह तुम इधर हो। मैं तो तुमको उधर से देखकर आ रहा हूँ।”

हमने भी चाँदनी को आवाज देकर बुलाया कि देखो, “कामिल तुम्हारी तबीयत का हाल पूछने हैं।” नये सिर से चाँदनी से और उनसे सलाम बन्दगी हुई और तबीयत का हाल-चाल पूछा गया। कठिनाई से हमने हँसी को रोका। हम गुप्तखाने में हाथ धोने के बहाने से गये, और चाय की प्याली कमरे में लाये और चाँदनी को दिखाकर कहा, “आखिर यह प्याली वहाँ कैसे पहुँची?” इसका जवाब उसने यह दिया, कि यह प्याली तो वहाँ कई दिन से रक्खी हुई है। और गवाही में कामिल साहब को भी पेश किया कि ये तो प्रति दिन आते हैं

और देखते ही होंगे। इन हजरत ने भी शीघ्र ही झूठी गवाही दे दी। हमने चाय की ताजी पत्तियों का चूरा और चाय की दस-बीस बूँद दोनों को दिखाकर कहा, “क्या खूब ? चारों के गवाइ गिरहकट ! यह तो अज का मालूम होती है।” कामिल कुछ सिटपिटा से गये और हमने देखा, कि उनका चेहरा फट सा हो गया।

चाँदना ने किस्से का इस तरह खतम किया कि आपको क्या ? जिसका जो चाहे गुसुलखाने में पीये, और जिसका जो चाहे मेज पर पीये।

थोड़ी देर बाद कामिल चले गये। किन्तु इस याद का प्याली की चर्चा के समाप्त हो जाने से उन्हें जिस तरह इस मीनान हुआ वह देखने के योग्य था।

X

X

X

दूसरे दिन हम शाम को क्लब से आये और कपड़े इत्यादि उतारकर चाँदनी की प्रतीक्षा करने लगे जो कामिल की बहन से मिलने गई थी। हमने बहुत कुछ मना किया था कि अब तू इस तरह न जा। किन्तु वह कहती थी कि अब तुम रहने दो।

इतने में मोटर की आवाज सुनाई पड़ी, जो सीधा कमरे के सामने आकर रुकी। हमने देखा कि चाँदनी हमारे या कामिल के मोटर का दरवाजा खोलने का इन्तजार न करके स्वयं झट दरवाजा खोल करके तेजी से उतर पड़ी। कामिल ने मोटर का इन्जिन चलता हुआ रखा था। उन्होंने उसको मोड़ा, और हमें जोर से पुकार कर ‘गुडनाइट’ कहा। और मोटर यह गई, वह गई।

चाँदनी कमरे में आई और हम पूछने ही वाले थे कि कोई नई बात तो नहीं हुई कि उसका चेहरा गुस्से से लाल

देखा। आँखों में आँसू थे। समझ गये और हमने ध्यान से चेहरे को देखकर एक ओर का कहकहा लगाया और कहा, कि अच्छा, तेरा शरारतों को यही सजा है। यह कहकर हमने छेड़ने के लिये कन्धा हिलाकर पूछा—“क्यों दोस्त, फेर जाओगे?”

“हाँ जाऊँगा”—यह कहकर चाँदनी ने हमारा हाथ मटक दिया—“हमें बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा है।”

हमने फिर हँसकर कहा—“हम कहते थे न कि शरारतें छोड़ दो।”—यह कहकर फिर कन्धा हिलाकर कहा—“कुछ बताओ तो दोस्त आखिर क्या हुआ?”

दाँत पीसकर मुट्ठी बाँधकर उसने जलकर कहा—“जब तक इस कमीने से मैं बदला न लूँगी मुझे चैन न पड़ेगी। मैं हरगिज उससे मिनना न छोड़ूँगी।”

हमने कहा—“बताओ दोस्त, आज कैसी कटी?”

“हट जाओ।” उसने तुनक कर कहा, “हम नहीं बताती।”

“अच्छा हम किसी से न कहेंगे। तुम हमारे कान में चुपके से कह दो।”—यह कहकर हमने अपना कान उसके मुँह के पास कर दिया।

चाँदनी का गुस्सा रफूचककर हो गया। और उसे हँसी आगई। किन्तु उसने कहा, “हम नहीं बताती। जब हम अपने दुश्मन से बदला ले लेंगी, तब बतायेंगी।”

“तुम्हें बताना पड़ेगा।” यह कहकर हमने बहुत कुछ खींचा, और घसीटा, किन्तु वह बराबर यही कहती रही कि हम नहीं बताती।”

हमने कहा—“दोस्त, तुम बताओ या न बताओ हम तो समझ ही गये हैं।”

अच्छा होता, अब भी हम मामिले का यहीं रोक देते । किन्तु बीबी का मुद्बन से हम विवश थे । वह कहती रही कि तुम देखना मैं कैसा बदला लेती हूँ !

दूसरे दिन कामिल नहीं आये । तीसरे दिन जब आये तब हम भी कलब न गये और मोटर को सैर की । अब कुछ ऐसा संयोग होता कि जब शाम को कामिल आते तब किसी-न-किसी कारण से चाँदनी का और इनका मोटर में साथ न होता । कोई न कोई कारण अवश्य ही सामने आ जाता । वे हमसे बिलकुल पहले ही की भाँति मिले रहे थे ।

चाँदनी शान्त थी और उनसे किसी प्रकार की शरारत न करती थी किन्तु वह प्रतीक्षा में थी कि अब कामिल साहब फिर कुछ शरारत करें तो बदला लूँ ।

हाज़ाँकि अब कामिल को चाँदनी के साथ अकेले में मिलने का बिलकुल मौका न मिलता था, किन्तु उन्होंने इतना कहने का मौका सरलता से ढूँढ़ लिया कि “मैं कल दोपहर में आऊँ ”

चाँदनी ने कुछ न कहा । उन्होंने फिर घबड़ाये हुए स्वर में कहा और जब उसने फिर जवाब न दिया तो फिर कहा । विवश होकर चाँदनी ने कहा, कि मोटर पर न आइयेगा । प्रसन्न होकर उन्होंने कहा कि ने एक बजे आऊँगा । यह बातें करके वे शीघ्र ही चले गये । यद्यपि हमने उनको रोका, किन्तु वे न रुके ।

चाँदनी ने हमसे कहा कि तुम कल डेढ़ बजे कचहरी से जरूर घर आ जाना । हमने कहा कि हम तेरी बेवकूफियों में कहाँ तक शामिल हुआ करें ? तू उनको गुप्तलवाने में बन्द करेगा, और हमारा इस प्रकार की बेकार बातों में बिलकुल

मन नहीं लगता।” किन्तु हमें विवश हो करके पक्का वादा करना पड़ा।

दूसर दिन हम कचहरी जरा पहले चले गये। अब चाँदनी को जरा कारस्तानी सुनिये। हमारे चले जाने के बाद न जाने कहाँ से उसने जबर्दस्त गधा पकड़वा मँगाया। उसके कान में कील से एक छेद किया गया और उसमें एक लम्बा-सा तार बाँधकर गधे का गुसुलखाने में ले जाकर इस तरह खड़ा किया कि वह चौकी और दावार के बीच में फँस गया। इस तरह खड़ा करके गुसुलखाने की मारी में से उस तार को निकाला, जो गधे के तार में बाँधा था, और तार के सिरे को एक कील गाड़कर उसमें इस मजबूती के साथ बाँध दिया, कि याद गधा जरा भी हिले डुले तो उसको बेहद कष्ट हो।

कामिल अपने वादे के मुताबिक एक बजे हमारे मकान पर पहुँचे। वे पैदल ही आये थे और मुख्य दरवाजे से न आये बँगले के हात की कच्ची दीवाल को फाँदकर इस तरह आये, कि नौकर इत्यादि कोई उनको आता हुआ न देख सके। ये सीधे मिलने वाले कमरे में घुस गये। उन्होंने कमरा खाली पाया, और वे वहाँ बैठ गये।

किसी ने सच कहा है कि “नींद न आये तो रेशम के गद्दों पर, और आये तो फाँसी के तख्ते पर।” किसी-किसी समय ऐसे बेमौके नींद आती है, कि आश्चर्य होता है। यही हाल चाँदनी का हुआ। उसको मालूम था कि कामिल आते होंगे, और उनकी प्रतीक्षा और उनकी कारस्तानी के विचार में डूबी हुई भीतर वाले सोने के कमरे के पास वाले सोफे पर तकिया लगा कर लेट गई। लेटे ही लेटे उसको नींद आ गई, और सो गई।

सहसा कुछ आहट से उसकी जब आँख खुली, तब उसने अपने मुँह के पास कामिल का मुँह पाया। वे उस पर झुके हुए थे, लाचारी की दशा में उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी, और वह तड़पकर उठी। कामिल कुछ घबड़ा गये। चाँदनी ने बड़ी कठिनाई से अपने को संभालते हुए कहा, “चलिये मिलने वाले कमरे में चलिये। मैं अभी आती हूँ।”

“किन्तु सुनिये तो”—यह कहकर चाँदनी की ओर बढ़े। चाँदनी ने बड़े पौरुष और साहस से काम लिया। वह इस तरह घबड़ा गई थी, कि सभी शरारते भूल गई, और हाथ-पैर फूल उठे थे। अकेले कमरे में जहाँ कभी कोई घर का नौकर तक भी कभी न जा सकता हो, वह एक आचारा और बदचलन आदमी के साथ थी, जिसको उसने अपनी शरारत का शिकार बनाने के लिये आने की स्वयं इजाजत दी थी। उसने कहा, “मैं मुँह धोकर अभी हाज़िर हुई।” यह कहकर वह तेज़ी से पर्दा उठाकर निकल गई! उसका कलेजा ‘धक धक’ हो रहा था कि कामिल रुक गये, और उसके पीछे न गये।

चाँदनी ने मुँह धोया। वह तौलिया से हाथ पोंछ रही थी; किन्तु उसका शरीर काँप रहा था। और अब तक दिल काबू में न आया था और वह हृदय से ज्यादा परेशान थी।

उसमें एक गिलास ठण्डा पानी पिया, जिससे उसका उछलता हुआ दिल रुका। वह मन में अपनी कमजोरी पर हँसी और उसने कहा कि वह नालायक मेरा क्या बिगाड़ सकता है? वह अब बिलकुल ठीक थी और बिना किसी डर या परेशानी के मिलने वाले कमरे में पहुँची। उसने कमरे के चारों ओर देखा, सभी दरवाजे खुले हुए न होकर बन्द थे। क्योंकि कामिल ने सभी दरवाजे मजबूती के साथ बन्द कर दिये थे।

यह देखकर उसका पौरुष और साहस फिर छूटता हुआ मालूम हुआ। न जाने वह क्यों इस तरह धक्का रही थी। उसने घड़ी की ओर देखा तो डेढ़ बजने में आठ मिनट बाकी थे। उसको अब इस कमरे में कामिल के साथ डर लग रहा था। वह कुछ ठिठकी कि कामिल ने मुमुकुराकर कहा—

‘आइये।’ ये शब्द इस समय उनके कानों में हथौड़े की चोट की तरह लगे, जिसकी धमक उसके दिल तक पहुँची और साथ ही उसे कमजोरी भी मालूम हुई। किन्तु उसने अपने दिल को फिर मजबूत बनाया, और एक कुर्सी घसीट कर अलग बैठ गई। कामिल ने सन्नाटे को भंग किया और बातें करते-करते वे धीरे धीरे खिसक-खिसक कर उसकी कुर्सी की ओर बढ़ने लगे। इस समय चाँदनी की विचित्र हालत थी। वह उस जानवर की तरह थी, जो शेर को देखकर ऐसा अधीर हो उठता है कि खाने को भी छोड़ देता है और यह देखता हुआ भी कि शेर आ रहा है, अपनी जगह से हिल डुल नहीं सकता। वह चुपचाप था और उससे कुछ जवाब ही न बन पड़ता था। दिल बुरी तरह धड़क रहा था और ओठ बिलकुल सूखे हुए थे। जब कामिल बिलकुल करीब आ गये, तब न जाने किस कोशिश के साथ उसने कहा,—“पाना देने की मेहरबानी कीजियेगा।” और सुराही की ओर हाथ उठा दिया। कामिल ने पानी दिया। पानी पीकर कामिल को गिलास लौटा दिया। कामिल ने देखा, कि चाँदनी के हाथ काँप रहे हैं जिसका कदाचित् उन्होंने ग़ज़त अर्थ लगाया, और गिलास को मेज़ पर रखकर कुर्सी के सामने आकर खड़े हुए। चाँदनी मूर्ति की तरह चुप थी और उन्होंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। चाँदनी की उस समय जो हालत हुई होगी उसका

अनुमान करना कठिन नहीं। हाथ बर्फ की तरह ठण्डे थे। कामिल ने और आगे पग बढ़ाया और अब वे कुर्सी के सामने घुटनों के बल इस तरह खड़े होगये, कि उठने का रास्ता बन्द हो गया। उसने सोचा कि चिल्लाकर भाग जाऊँ। किन्तु वहाँ तो अब ताकत ही गिरफ्तार थी। कामिल के कामों की प्रगति अब इस प्रकार धीमी होगई थी कि सहसा कोई बात सामने ही न आ रही थी जो विजजी की तरह गिर कर इस खामोशी को तोड़ती, और तबीयत को आवेग में लाकर शक्ति पैदा करती जो कि जगभंग नष्ट हो चुकी थी। ऐसे मौके पर यदि किसी चीज के गिरने का धमाका भी होता है, तो तबीयत में धड़कन पैदा हो जाती है और आदमी ऐसी खामोशी से कि मानो उस पर किसी ने जादू कर दिया है, छुट्टी पा जाता है।

इधर तो यह मामिला उरस्थित था और उबर हम पन्द्रह मिनट से अधिक एक बेकार आदमी से गप्पों में बरबाद कर चुके थे। हमारे पहुँचने का समय बीत चुका था। वास्तव में इसी कारण चाँदनी की रहीं-सही दिम्न का भी खातमा हो गया था।

कामिल ने अब साहस किया और चाँदनी का दूसरा हाथ भी अपने हाथ में ले लिया। वे धीरे-धीरे दबी जवान से काँपते हुए स्वर न बेहूदी बातें बक रहे थे। उनको कदाचित नहीं मालूम था कि उनकी बेहूदी बातें उसके कानों में निरर्थक शब्दों की तरह पड़ रही थीं। क्योंकि वास्तव में वहाँ आँखों की शक्ति को छोड़कर सभी शक्तियाँ नष्ट हो चुकी थीं। उसे ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे कि कोई बहुत बड़ा स्वप्न देख रही हो। कामिल ने दोनों हाथ धीरे-धीरे अपनी ओर किये और उनको अपने ओठों और आँखों से लगाया। चाँदनी के

चेहरे पर इस समय बेहोशी के चिन्ह थे, और उसको यह मालूम हो रहा था कि कामिल उससे बहुत दूर बैठा हुआ यह सब कुछ कर रहा है। उस पर बेहोशी की अवस्था दिखाई दे रही थी। इसके बाद कामिल ने चाहा कि इस मंजिल में एक कदम और बढ़ायें। चाँदनी का हाथ धीरे से छोड़ दिया, जो निर्जीव हाथ की तरह गिर गया। अपना दाहिना हाथ धीरे से चाँदनी के कंधे पर रक्खा ही था कि हमने बराबर वाले कमरे में पहुँच कर आवाज दी “गुल चाँदनी।”

हमारा आवाज क्या थी कि दोनों पर बिजली गिरी। चाँदनी के हृदय में उसने एक नये जीवन का सा काम किया। उसकी लाचारी की अवस्था जाती रही। उसने अपने को अस-लियत के इस तरह नजदीक पाया कि जोर से हाथ भटक दिया, और उठकर खड़ी हो गई। आश्चर्य है कि वह चिल्लाई नहीं। उसने धीनी किन्तु काँपती हुई आवाज में कामिल से कहा—“गुसुलखाने में, गुसुलखाने में” यह कहकर उसने कामिल का हाथ पकड़कर खींचा, कामिल के स्वयं होश उड़ चुके थे। लपक कर उसने दरवाजा खोल दिया। कामिल तीर की तरह गुसुलखान में घुस गये और चाँदनी ने भट जञ्जीर चढ़ा दी।

हम इस खड़बड़ को सुनकर धीरे से मैदान साफ पाकर मिलने वाले कमरे में पहुँचे। चाँदनी कामिल को गुसुलखाने में बन्द करके लौट रही थी। हमने देखा कि चेहरा कागज की तरह सफेद और उजड़ा हुआ है और सूरत परीशानी की तस्वीर बनी है। देखते ही हमारी ओर तीर की तरह आई, और लिपट गई। शरीर काँप रहा था। जोर से उसने हमें दबाया कि हाथ ढाले पड़ गये। गरदन लटक गई। हमने जब

अलग किया, तब शरीर में ताकत ही न थी। आँखें बन्द थीं और साँस बड़ी तेजी से चल रही थी। हालांकि, जाड़े का मौसम था, किन्तु सारा चेहरा पसीने से तर था। हमने उसको इस बेहोशी की हालत में सोफे पर लिटाया। नाड़ी देखी तो बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। हमने जल्दी से पूरा हाल संक्षेप में एक कागज पर लिखकर नौकर को डाक्टर साहब के पास दौड़ाया।

साधारण बेहोशी थी, डाक्टर साहब की एक ही खुराक के बाद चाँदनी बिलकुल अच्छी हो गई। डाक्टर साहब चले गये थे, और थोड़ी ही देर में बातें करते-करते उसका चेहरा शरारत और अपनी सफलता पर चमकने लगा। वह लेटे-लेटे धीरे-धीरे हँस-हँस कर जो कुछ हुआ था, अब सुना रही थी। हमें अपना ब्रेक्फ़ू का अनुभव हुआ और उसको अपनी शरारतों को मोचकर कँपकँपी-सी आ गई। किम्मत थी कि आज वह न जाने किस मुसीबत से बच गई। लोगों को चाहिये कि वे इस घटना से नसीहत लें और माडरेट ढङ्ग से काम लें।

घण्टे भर के बाद चाँदनी की तेजी और फुरनी, शरारत के साथ सब उसी प्रकार लौट आई। वह सीधे हमें गुसुलवाने के पास ले गई। उसने दरवाजे पर उँगली मारी, और भीतर से कामिल साहब बोले, 'कहिये, खैरियत तो है।'

"खुदा को धन्यवाद है, सब खैरियत से बीता।"—चाँदनी ने हँसकर कहा—"माफ़ कीजियेगा। मुझको बड़ी देर लगी।"

"यहाँ एक गधा है।" कामिल ने हँसकर कहा।

"खुदा के लिये इतनी आजिझी से काम न लीजिये?"

चाँदनी ने शरारत की गरज से हँसते हुए कहा । हम स्वयं इस वाक्य पर कठिनाई के साथ अपना हँसी को रोक सके !

कामिल बोले, “आप मजाक कर रही हैं, यहाँ सच-मुच एक गधा भी खड़ा है ।,,

“क्या आप सचमुच सच कह रहे हैं ?” चाँदनी ने बनकर कहा—“खैर माफ कीजियेगा । घुस गया होगा । किन्तु उसको अभी तो रहने दजिये ।”

“बेचारा बहुत सीधा है, और दीवार से सटा हुआ एक ओर खड़ा है ।”

“अभी हाजिर हुई ।” यह कहकर चाँदनी और हम चले आये । हमने कहा—यह गधा कहाँ से आया ? तब उसने यह बताया कि खासतौर पर उसे मँगाया है ।

शाम तक इसी तरह कामिल बन्द रहे, और किसी ने खबर तक न ली । मगरिब के बाद चाँदनी ने गुमुनखाने के पास जाकर कहा—“माफ कीजिएगा । आज मुझको मौका ही नहीं मिला । क्योंकि वे क्लब भी नहीं गये ।”

“किन्तु अब तो किसी न किसी तरह खोल दीजिए ।” कामिल ने घबराकर कहा, क्योंकि घन्टों से गिरफ्तारी के मजे लूट रहे थे । इसका जवाब जब चाँदनी ने दिया, तब कामिल सुनकर प्रसन्न ही तो हो गये । उसने कहा यदि आप आज रात में घर न जायँ, तो क्या कुछ नुकसान है ? अधिक से अधिक रात के दस बजे तक आपको यहाँ तकलीफ उठानी पड़ेगी । फिर मैं खोल दूँगी, और आप चुपके से बराबर वाले कमरे में आलमारी के पोछे पर्दे की आड़ में छिप जाइयेगा ।

काँपती हुई आवाज में कामिल ने कहा, “बहुत अच्छा, आप जाइये । मैं समझ गया ।”

जाड़े का दिन था। रात का खाना खाने के बाद चाँदनी ने बहुत ज्यादा चाय बनाई। हमने उससे कहा कि तूने हमारे दास्त को न तो चाय दी और न रात के खाने ही की चिन्ता की। इसका जबाब उसने मुसकुराते हुए यह दिया, की यह चाय वास्तव में उन्हीं के लिये बन रहा है। मिठाई, टोस्ट, मक्खन, अण्डे, कुछ मेवे, और चाय, यह सब चीजें अपने एक बरतन में सजाई। चायदान भरकर चाय, और दूधदान भी मलाईदार दूध से भरा हुआ था। ये सभी चीजें उसने गुसुलखाने में भेजवा दी। कामिल भूखे तो थे हा, सब साफ कर गये थे। इसके बाद फिर किसी ने कामिल साहब की खबर न ली। क्योंकि हमने जब कहा कि उनको सरदी लग रही होगी, तब उसने कहा कि अपने मेहमान के आराम का मुझे तुमसे अधिक ख्याल है। इसका इन्तजाम पहले ही हो चुका था।

६

रात में ढाई बजे घड़ी के अलार्म ने हमें जगा दिया। चाँदनी से हमने पूछा—“घड़ी में यह अलार्म तुमने लगाया था?”

“हाँ।”

“यह क्यों? बेकार नींद खराब हुई।”

वह मुसकुराती हुई उठ खड़ी हुई और बोली—“असली तमाशा तो ढाई बजे ही शुरू होने वाला था। चलो।” यह कह कर उसने अपना कोट पहना और शाल ओढ़ी, “चलो उठो। देख क्या रहे हो?” उसने हमारा हाथ पकड़ कर घसीटा

“तुम पागल हो। हम बेकार परीशान न होंगे। हम स ते हैं।”—हमने कहा।

फन्तु उसने लिहाफ इत्यादि खींच लिया, और हमें खींच

कर खड़ा कर दिया कि “तुम चलो तो, देखो क्या होता है ?” बाहर निकल कर एक नौकर को जगाया और गुसुलखाने की मोरी के पास उसे बैठाकर कहा कि धीरे-धीरे इस तार को खींचो, जो गधे के कान में बँधा हुआ था।

हम तो यही समझते थे कि कामिल साहब को केवल गधे का रात का साथी बनाकर छोड़ दिया जायगा, किन्तु यहाँ हमने यह किस्सा देखा—

नौकर ने तार को ढील-ढीलकर जब खींचा तब बस, फिर गजब हो हो गया। गधे के ताजे चोट में जब दर्द हुआ, तब पहले तो उसने भीतर उछल-कूद का और फिर जोर से चिल्लाया। तार बराबर रह-रहकर ढील-ढीलकर खींचा जा रहा था और जब गधे को अधिक तकलीफ हुई, तार अधिक ढाला भी हो गया, तब उसने गुसुलखाने में पैतरे बदलने शुरू किये और लातें बलाकर बुरी तरह से चिल्लना शुरू किया। खुलासा यह कि गुसुलखान में वह धमाचौकड़ी मचा कि सभी चीजों के गिरने और उलट पलट होने का आवाज सुनाई दे रही थी और मालूम हो रहा था कि आँधरे में गुसुलखाने में कामिल साहब और गधे में खूब छन रही थी। नौकर को सचेत करके कह दिया कि यह कारवाई सवेरे तक होती रहे। यह कहकर हम दोनों कमरे में लौट आये। हमारी तबीयत इस समय न जाने क्यों इन सभी मामिलों पर विचार करके उदास और दुखी हो गई और हमें यह हरकत बहुत ही बुरी मालूम हुई। क्योंकि कुछ भी सही किन्तु एक औरत के लिये यह हरकत आवश्यकता से भी अधिक बुरी थी और हम चुप थे।

चांदनी ने हमारी हालत का अनुभव कर लिया, और वह लड़ने के लिये तैयार हो गई। उसने जलकर कहा, “क्या

उन्होंने कमीनी हरकत नहीं की ? क्या उन्होंने हमें और तुम्हें अपमानित करने की बेहद कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने मेरे जीवन को समाप्त कर देने की कोशिश नहीं की ? क्या उन्होंने पुरानी दोस्ती, और पुराने सम्बन्ध को स्वयं पहले ठोकर नहीं लगाई ? मेरे दिल में उनके जिये तनिक सी दया नहीं है । मेरा बस चले तो मैं ऐसे लोगों को जीता हुआ जमीन के अन्दर गड़वा दूँ ।

गधे के शोर और हंगामे ने सोने न दिया । वह रह-रहकर ऐसी दोहाई देता था कि खुदा की पनाह । सबेरा हुआ और चाँदनी ने कहा, कि “अब तुम मानों गधे की आवाज सुनकर बैठे हो, और नौकर को साथ लेकर यदि सच्ची बात का पता न लगाया, तो बेजा है । यह तो केवल संयोग की बात है कि रात को उन्हें खोलने का मौका न मिला ।” हमने जाने से इन्कार किया, तो फिर उसने वही जली-कटी बातें सुनानी आरम्भ की कि जो आदमी ऐसी कमीनी हरकतें करे, उसे ऐसी ही परेशानी मिलनी चाहिये । खुलासा यह कि उसने हमें लाचार कर दिया । हम एक नौकर के साथ लालटेन लेकर पहुँचे । क्या बतायें कि हमारी हिम्मत न पड़ती थी कि चाँदनी आई और वनसे फिर क्रोध भरी आँखों से देखा और स्वयं दरवाजे की जंजीर खोलकर तेजी से लौट आई । हमने कुछ पेशो-पेश के बाद दरवाजा खोलकर लालटेन के प्रकाश से भीतर देखा । जो दृश्य आँखों के सामने था, वह सबक सीखने के योग्य था । खुदा हर एक आदमी को इस परेशानी और मुसीबत से बचाये । हमारे और नौकर दोनों के मुँह से “अरे” निकल । नौकर आश्चर्य में था । बहुत ही मक्कारी के साथ हमने कहा, “कामिल यह क्या मामिला, कामिल यह क्या

मामिल्ला ?” कामिल भला इसका क्या जबाब देने ? विचित्र दृश्य सामने था । गधा गुसुलखाने के बीच में खड़ा था । सभी चीजें उलटी-पुलटी पड़ी थीं । जगह जगह लीढ़ पड़ी हुई थी और दुगन्ध के मारे, दिमाग उड़ा जा रहा था । कामिल फर्श को एक बड़ी दूरी में लिपटे हुए एक कोने में सिर झुकाकर बैठे हुए थे ।

हम उल्टे पाँव कमरे में लौट आये । हमारी तबीयत बहुत दुखी हो रही थी और हमने बड़े अफसोस के साथ कामिल की हालत चाँदनी से बताई । किन्तु स्त्री के दिल में कदाचित् उसकी इज्जत और आबरू पर हमला करने वाले के लिए दया नहीं पैदा होती । उसने फिर चिढ़ाचिढ़ा कर कामिल की सजा उनकी ओर से उनका हक बताया । हम सिर पकड़ कर एक कुर्सी पर बैठे हुए इस मुसीबत पर बिचार कर रहे थे हालाँकि कामिल ने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया था और वे सचमुच दया के योग्य न थे, किन्तु फिर भी वास्तव में हमारा हा कुसूर था, जो हमने इतनी ठिठ्ठाई की । हम चाहने तो यह दिन ही न आता । हम उठे और समने जाकर कामिल से कहा, “माफ करना । किन्तु गलती तुम्हारी भी थी, जो तुम इस शरीर के चक्कर में पड़े ।” कामिल कुछ न बोले, और हम लौट आये ।

दूसरे गुसुलखाने में हमने जल्दी से गरम पानी और साफ कपड़े पहुँचाये और कामिल को वहाँ भेजवाया । दूसरे आदमी को उनके घर मोटर लेने के लिए भेजा । कामिल नहा-धोकर गुसुलखाने से सीधे उधर से उधर ही अपने घर चले गये ।

अफसोस, कि वह भेद प्रकट हो गया। नौकरों ने इस बात को न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। विवश होकर खाम खास दोस्तों को पूरा किस्सा ठीक ठीक शुरू से लेकर अन्त तक बताना पड़ा और धीरे-धीरे यह किस्सा सबको मालूम हो हो गया, जिनके कारण कामिल का सोसाइटी में वह काला मुँह हुआ, कि किसी से मिलने लायक न रहे। वे हमारे हमेशा के लिए गैर हो गये और हमसे उनसे फिर कोई सम्बन्ध न रहा। यहाँ हम उन बातों की चर्चा नहीं करना चाहते, जो कि बाद में सामने आई। इतना कह देना हाँ काफ़ा है, कि कामिल ने चादनी से भयानक बदला लेने की कोशिश की और विवश होकर इसको छुट्टी लेकर वह जगह छोड़ देनी पड़ी।

इस अनुभव से हम मालूम हुआ, कि हमारा और हमारी बीबी का सिद्धांत गलत था। शरारत और आजादी का अवश्य कोई सीमा हानो चाहिये।.....और आजाद को इस सीमा का प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार नियत कर सकता है।

चाँदनी ने शरारत को फिर कभी इस प्रकार का सूझ नहीं दिया। एक दोस्त की बीबी और शरारत का यह परिणाम निकला।



नक्क़ाँ फ़रिच्चेद

आबरू की फिलासफी

एक औरत तो वह है, जो अपने शौहर की वफादार बीवी है और कोई आदमी जबर्दस्ती उसको इज्जत लूटता है और वह फिर उस बेइज्जती की जिन्दगी से मौत का अच्छा सम्भती है, किन्तु बच जाती है। पर दूसरी औरत वह है, जो दिल से अपने शौहर की जगह पर किसी दूसरे को चाहती है। किन्तु बन्द और कैद रहने के कारण अपने उद्देश्य में सफल नहीं होती और इस प्रकार यद्यपि उसका दिल पवित्र नहीं, किन्तु शरीर पवित्र है।

सवाल यह है कि इन दोनों का दर्जा इज्जत और बेइज्जती में क्या बराबर है? क्या यह सच बात है, कि एक औरत इस प्रकार लाज और इज्जत को खो बैठन के बाद अपने शौहर के काम की नहीं रहती? इसका जवाब है, कि हाँ। बदकिस्मती से यह सच बात है कि औरत फिर शौहर के काम की नहीं रहती। क्योंकि आबरू ही एक ऐसा जौहर है, जो एक बार चाहे किसी भी प्रकार नष्ट हो जाय, यह असंभव है कि फिर वह किसी प्रकार प्राप्त हो सके।

यह तो दुनिया के अधिकांश विद्वानों का फैसला है; किन्तु इस्लाम की फिलासफी क्या कहती है? पीड़ितों का इस्लाम के अतिरिक्त और कोई मददगार नहीं। इस्लाम का फैसला है कि ऐसी औरत को चमड़े के कोड़े से मारना तो बहुत बड़ी बात है, धुनी हुई रुई से भी नहीं मारा जा सकता। वह पवित्र है। और इज्जत वाली है और अपने शौहर और खुदा के सामने

निडर होकर स्पष्टतया अपनी बेगुनाही का दावा कर सकती है। वह बिना आँख झगकाये हुए अपने शौहर से आँख मिला सकती है। जालिम को कानून सजा देगा और नहीं तो खुदा।

१

आगरे से गये हुए काफी दिन हो गये थे कि हम और चाँदनी इलाहाबाद से आगरे जा रहे थे। किस्मत की खूबी, कि आज फिर लगभग दो साल के बाद असगर साहब का सफर में साथ हुआ। घर से तो चाँदनी शहरों का पूरा प्रोग्राम तैयार करके चली थी, किन्तु यहाँ दूसरा ही मामिला सामने आ गया।

पहला सवाल जो हम दोनों ने असगर साहब से पूछा, वह उनकी बीबी के सम्बन्ध में था। वे अब तक लापता थी। बल्कि असगर साहब अपनी दूसरी शादी के सम्बन्ध में लखनऊ जाकर लौट रहे थे। वास्तव में संसार भी बड़ा विचित्र है। उनकी हालत ऐसी थी कि जा कोई यह नहीं कह सकता था कि असगर कभी दूसरी शादी करेंगे। किन्तु बात यह है कि दुनिया की चहल-पहल और यार-दोस्तों की धूमधाम और खुशमजाकी में दुनिया के सभी दुख अपने आप दूर हो जाते हैं। यही हाल असगर का भी था, किन्तु फिर भी इस चर्चा ने उनके गम को ऐसा ताजा बना दिया कि उनकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे, और मजा यह कि चाँदनी भी सिर्फ उनकी ही हालत देखकर रो रही थी। बात हुई और खतम हो गई और थोड़ी देर बाद हम भी भल गये। वास्तव में हमें और चाँदनी दोनों का असगर साहब से एक स्वाभाविक सहानुभूति हो गई थी, जिसको प्रकट करने का मौका सालभर हुआ हमको आगरे में मिल चुका था।

दू डले के स्टेशन पर चाँदनी गाड़ी में बैठी हुई थी और हम और असगर बाहर खड़े थे।

“जरा इस बच्चे को ता देखिये।” असगर ने एक बच्चे की ओर इशारा करके कहा।

वह कोई डेढ़ या पौने दो साल का बच्चा मालूम होता था। नया नया चलना सीखा था और बेतरह हँसी का गोल-गधरा बना हुआ डगमगाता चला आ रहा था। खूब गोरा, लाल, सफेद और तन्दुरुस्त था। केवल एक कुर्त्ता पहने हुए था। पीछे उसका गरीब देशाती बाप हँसता हुआ आता था। वह भागता हुआ असगर के करीब आकर डगमगाया कि असगर ने उसे दोनों हाथों से उठा कर अपने मुँह के सामने किया। बच्चे ने ध्यान से असगर को देखते-देखते उनके मुँह पर हाथ मार दिया कि देखने वालों का हँसी के मारे बुरा हाल हो गया। असगर ने हँसते हुए छोड़ दिया और वह फिर डगमगाता इधर-उधर दौड़ने लगा। बार-बार गिरता और फिर हँस कर दौड़ता फिरता था।

चाँदनी ने कहा “सचमुच यह बड़ा प्यारा बच्चा है।” फिर असगर साहब से कहा, ‘असगर साहब, इस बच्चे की आँखें और माथा तो बिल्कुल आप ही जैसा है। मैं बड़े ध्यान से देख रही थी।’

असगर साहब हँसने लगे और बच्चे को देख रहे थे, कि इतने में उसने फिर उसी ओर रुख किया और उसका बाप उसके पीछे लपका तो वह आकर असगर साहब की टाँगों से चिपट गया और हँसी के मारे उसका बुरा हाल हो गया। असगर साहब ने फिर उठा लिया और उसी तरह देखने लगे।

हमने ध्यान से देखा और कहा—“सचमुच असगर साहब

इसकी आँखें और माथा तो बिजकुल आप ही से मिलता है। बल्कि नाक और मुँह की बनावट भी कुछ आपसे मिलती है।”

अगर साहब ने हँसकर कहा “आप दोनों भी विचित्र आदमी हैं। यह सब बातें और फिर वह भी उसके बाप के समाने जो अश्चर्य नहीं, कि अक्षर-अक्षर सुन रहा हो। किन्तु यह है कि आजतक ऐसा प्यारा बच्चा मैंने कभी नहीं देखा।”

चाँदनी ने भौंककर उस आदमी की ओर देखा और कहा, “आप भी कैसी बातें करते हैं। यह बच्चा उसका कभी नहीं हो सकता।”

असगर ने उससे पूछा, “क्यों भाई यह तुम्हारा बच्चा है?”

“जी हाँ, मेरा ही समझिये।” उस आदमी ने कहा।

“तुम्हारे किसी रिश्तेदार का होगा।”—असगर ने कहा।

“जी हाँ।”

“तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?”

“मैं सिकन्दरा जा रहा हूँ, और मैं यहाँ कपड़े का काम करता हूँ।”

असगर को यह बच्चा ऐसा अच्छा मालूम हो रहा था कि उनका बस न था कि उसे ले लें और उसे आँखों ही आँखों में जैसे छिपाये जाते थे। उन्होंने अपने रूमाल में मिठाई लेकर उस आदमी को दो, कि यह बच्चे के लिये है। उसने कहा, वाह साहब, यह आपने क्यों तकलीफ की? यह कह वह हाथ में मिठाई लेने लगा कि इतने में रेल ने सीटी दी और चलने को हुई और असगर ने रूमाल दे दिया कि उसकी माँ को दे दो। वह किसी बरतन में रख लेगी।

“मैं आपकी रूमाल अगले स्टेशन पर दे जाऊँगा।” यह

कह कर वह बच्चे को गोद में लेकर जनाने ढिब्वे के पास गया और रुमाल आर मिठाई देकर झट से अपने ढिब्वे में बैठ गया, और गाड़ी चल दी।

२

रुमाल का कुछ खयाल भी न था, कि दूसरे स्टेशन पर वह आया, जिसका नाम हुसेन बख्श था। असगर को उसने एक सफेद अंगूठी देकर कहा, कि “देखिये, यह शायद आपकी है; जो रुमाल में लिपटी हुई चली गई थी। आपकी रुमाल जरा धो लूँ तो अभी लाता हूँ।” असगर आराम से तकिये लगाये बैठे हुए थे। उन्होंने ला-परवाशी से अंगूठी ली। हुसेनबख्श रुमाल लेने चला गया। अंगूठी को देखते ही असगर साहब उलझत में पड़े, और उन्होंने कहा, “अरे”। ये हक्का-बक्का हो गये और उनके हाथ से अंगूठी छूटकर गिर पड़ी। हमने और चाँदनी ने अश्वयं-चकित होकर असगर को देखा; जिनकी हालत ही विचित्र थी। उन्होंने अंगूठी ठाई। “खैरियत तो है” हमने और चाँदनी ने पूछा, और यह कहते हुए चाँदनी ने असगर साहब के हाथ से अंगूठी को लेकर देखा।।

यह एक प्लाटोन की कलई की बहुत ही हलकी और नकश की हुई अंगूठी थी और उस पर ईरानी अक्षरों में बड़ी खूब-सूरती के साथ कुछ इबारत खुदी हुई थी। ध्यान से पढ़ा तो बहुत खूबसूरती के साथ उस पर शब्द “मासूमा” खुदा हुआ था।

“यह कैसी अंगूठी है ?” चाँदनी ने पूछा।

असगर साहब ने कहा, “मेरी खोई हुई बीबी का नाम... ..। वे यही अंगूठी पहने हुई थीं।”

हम दोनों हक्का-बक्का बन गये और एक दूसरे को देखने

लगे। हमारे कान में धीरे से चाँदनी ने कहा, “कहीं यह बच्चा सचमुच इन्हीं का तो नहीं है। जरा पूछो तो। कहीं खून का जोश तो नहीं था जो बच्चे की आर स्वभावतः खींचे जा रहा था।”

हमने असगर साहब से धीरे से पूछा, तो मालूम हुआ कि जब वे गुम हुईं तो डेढ़ दो माह का हमल था। मामिला साफ था और असगर से कहा, मेरा दृढ़ विश्वास है, कि आप की खोई हुई बीबी अपने बच्चे सहित इस गाड़ी में मौजूद हैं।

असगर साहब विचित्र चक्कर में थे, और उनकी बुद्धि काम न करती थी। वे चुप थे कि चाँदनी ने पूछा, “क्या आप के रुमाल पर कोई ऐसा निशान था, जिसे आपकी बीबी पहचान सकती?” असगर ने चौंकर कर कहा, “आप सच कहती हैं; रुमाल मैंने मुद्दतों के बाद निकाला है। उस पर उन्हीं के हाथ का अङ्गूरी का A अक्षर कदा हुआ है।

हमने कहा, ‘निश्चय, अब तो बिलकुल साफ है। उन्होंने आपकी रुमाल पहचान लिया, और पता लगाने के लिये यह अंगूठी भेजी है। वह बच्चा निश्चय आपका है और बीबी भी आपकी मौजूद है। मुबारक हो।’

असगर की इस समय विचित्र हालत थी। वे सिर लटकाने हुए बैठे थे। दूसरा स्टेशन जमुना ब्रिज का आया। असगर को हमने रोका कि कहीं कोई असाधारण घटना न हो जाय।

चाँदनी ने वहाँ जाकर देखा, बोझट पहचान लिया। उसके हाथ में रुमाल था और आँखों में आँसुओं की झड़ी लगी हुई थी। हुसेनबख्श अब सब मामिला समझ गया, और वह चुपचाप यह सब कुछ देख रहा था।

आगरे फोर्ट पर पहुँचकर चाँदनी ने जल्दी से मासूमा को उतार दिया। बुरके को तो कोई बात ही नहीं उसके पास गाढ़े की एक छोटी चादर के अलावा दूसरी कोई बड़ी चादर न थी। उसको तो बन्द गाड़ी में बिठाया। चूँको किसी को कुछ मालूम न था, अतः असगर ने हम दोनों से कहा कि आप मेरे साथ चलें। क्योंकि आप लोगों के अलावा यहाँ दूसरा कोई गवाह हा नहीं है।

३

“मैं इस तरह नहीं उतरूँगी।” मासूमा ने रोते हुए चाँदनी से कहा—“मैं नहीं उतरूँगी, जब तक कि आप यह न मालूम कर लें कि वे मुझ जलील से मित्रता भी चाहते हैं या नहीं।” यह कहकर उसने गाड़ी से उतरने से इन्कार कर दिया।

चाँदनी ने आश्चर्य से कहा, “आखिर यह क्यों ?”

“मैं कह चुकी, मैं हरगिज न उतरूँगी और लौट जाऊँगी। चाहे कुछ भी हो।” उसी तरह रोती हुई उस पीड़िता ने कहा।

चाँदनी ने संदग्ध होकर कहा—“दुष्टेन बरुश.....।”

“वे मेरे सगे भाई के बराबर हैं, बल्कि उससे भी बढ़कर।”

प्रसन्न होकर चाँदनी ने कहा—“आखिर फिर क्या मामिला है ?”

“आप जाकर बस पूछ आयें” मासूमा ने कहा—“मैं आप को कुछ नहीं बता सकती !”

×

×

×

यद्यपि असली किस्सा हमें बाद में मालूम हुआ। किन्तु इस मौके पर हम मासूमा की बाँती हुई सुनाकर पाठकों से निवेदन करते हैं, कि वे इन घटनाओं को ध्यान से पढ़ें और उनसे शिक्षा ग्रहण करें। हम इसको किस्से के रूप में वहाँ से

आरम्भ करते हैं, जहाँ से वह खो गई थी। क्रम के लिए पाठक पिछले परिच्छेद को देखें।

४

हम कह चुके, कि आगरे के सीटी स्टेशन पर जब हम उतरे तो चलते समय असगर से रुखसत हुए थे।

किन्तु उनकी बीवी को देखने चाँदनी न गई। क्योंकि सफर के बाच में एक बार जब उसकी तबियत का हाल पूछने के लिए चाँदनी ने जाने का विचार किया था, तब असगर साहब ने कह दिया था कि आप तकलीफ न करें। मैं स्वयं आपकी ओर से उनकी तबियत का हाल पूँछ लूँगा।

बेचारो मासूमा अपने शौहर का इन्तजार कर रही थी। बुरके में से भाड़-भाड़ में उसने यह भी न देखा कि असगर साहब आये और डोली मँगाकर नौकर को हिदायत भी कर गये कि उतरवालो। मैं सामान देखता हूँ। डोली आकर लगी, और चादरें तानी गईं। वह आगे बढ़ो कि एक बड़ी बीवी ने कहा “बेटो, यह तो मेरी है। मेरा लड़का लाया है।” क्योंकि मासूम ने बुरके से रात के समय न तो असगर को देखा था, और न इस भीड़ में नौकर को पहचान सकती थी। उसने यही समझा कि बड़ी बीवी सच कहती हैं। अतः वे बैठकर चली भी गईं। असगर ने नौकर को जब डोली ले आते हुए देखा तब उन्होंने भी जनाना डिब्बे की ओर देने की फिर आवश्यकता न समझी। क्योंकि सामान सब मरदाने डिब्बे में था।

खुदा लाचार औरतों को बदमाशों के पंजे से बचाये। और खास कर ऐसी बेगुनाहों को जैसी मासूमा थी। एक लोफर न जाने कहाँ से आ रहा था। उसने कदाचित इस बेगुनाह को अपने शिकार के लिये ताड़ लिया था। वह जनाने डिब्बे के

पास आया और उसने मासूमा से कहा, मियाँ ने कहा है; आप अगले स्टेशन पर उतरें। क्योंकि न यहाँ कोई बन्द गाड़ी है, और न डोली। मासूमा सोचने भी न पाई थी कि गाड़ी चल पड़ी। उसने भी समझा कि घर का नौकर है, इससे कहलवा दिया होगा और स्वयं भी अगले स्टेशन पर उतरेंगे। वह बेकिक्री के साथ बैठ गई। राजा की मण्डो स्टेशन पर गाड़ी जाकर रुकी, और वह आदमी मासूमा के पास आया और कहा, “उतारिये। यहाँ कोई डोली इत्यादि नहीं है। मियाँ सामान लेकर वह जा रहे हैं। जल्दी उतरिये।” उसको भला भीड़ में बुरका और चादर में से क्या दिखाई देता? वह उतर आई और उसके पीछे-पीछे चली आई। राजा-मण्डो स्टेशन पर भीड़ तो अधिक होती नहीं है! फाटक के पास पहुँच कर मासूमा ने असगर को न देखा तो फिर भी उसको आश्चर्य न हुआ। क्योंकि वह यह जानती थी, कि बाहर खड़े होंगे। वह बाहर आई तो उस आदमी ने दूर ही से पुकार कर कहा, “मियाँ इधर आइये, यह गाड़ा मौजूद है।” मासूमा ने समझा, असगर को नौकर बुला रहा है। वह उसमें बैठ गई, और खिड़की का दरवाजा बन्द कर लिया। इतने में उस आदमी ने कहा, “भाई! तुम गाड़ी जरा बढ़ाकर पुल के पास ले चलो। वह देखो कुलो तो उधर जा रहे हैं।” मासूमा ने इन बातों पर ध्यान न दिया और गाड़ी चल पड़ी और वह भी बड़ा तेजी के साथ। मासूमा ने समझा कि कुलियों के पास पहुँच कर गाड़ा रोक दी जायगी, किन्तु वहाँ तो गाड़ी बेतहाशा जा रही थी, वह बिलकुल न धरवाई। किन्तु यह सोचती थी, आखिर किससे और कैसे पूछूँ कि सामान क्यों नहीं है। क्योंकि न तो वह नौकर से बात कर सकती थी, और न कोचवान से,

और न खिड़की खोजकर सड़क पर चलने वाले किसी आदमी को पुकार सकती थी। यह सब क्यों? केवल इसलिए कि जिस परिस्थिति में उसका पालन पोषण हुआ था, उसके मन-हृदय में यह सब मना था। वह चाहती भी तो सम्भव न था, क्योंकि वह इस कदर तबीयत की कमजोर और सीधी थी, कि उससे यह सब होना असंभव था।

+

+

+

अब मासूमा को न जाने क्यों सन्देह हो रहा था। क्योंकि गाड़ी बाजार से न जाकर सुनसान रास्ते से जा रही थी और उसके अनुमान के मुताबिक अब तक गाड़ी को घर पहुँच जाना चाहिए था। उसने सब बातों पर एक साथ ही विचार किया और झटक कर जब बाहर देखा, तब उसका कलेजा बैठ गया। उसने परशान होकर खिड़की पर हाथ मारना शुरू किया और जब गाड़ी न रुकी तब वह खिड़की को जोर से हिलाने लगी। गाड़ी सहसा रुगी। खिड़की खुली, और वही आदमी यह कहकर भाँतर गया कि “यदि तनिक भी चिल्लाई तो मार डालूँगा।” उसने खिड़की बन्द कर ली और फिर गाड़ी चल पड़ा। खुदा की पनाह, इस बेचारी मासूमा का उस समय क्या हाल हुआ होगा। किसी कलम में दाकत नहीं, कि उसकी ठीक-ठीक हालत का वर्णन कर सके। वह जीवित थी, किन्तु मुर्दे से भी बदतर। वह डर के कोने में सरक गई।

वह शरीफ और सीधे-सादे स्वभाव की बेगुनाह औरत, जिसने कभी किसी अजनबी से बात तक न की हो, भला क्यों कर किसी जङ्गली उल्लिम की धमकियों और ज्यादतियों को बर्दाश्त कर सकती थी। अधिकाधिक भय से उसके मुँह से एक चीख निकली और वह बेदोश हो गई।

५

मासूमा को जब होश आया तब उससे अपने आपको एक जलील बिस्तर पर पड़ा पाया। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। क्योंकि उस जगह जेल की तरह अँधेरा था। हवा में नमी और बदबू थी, और भारी मालूम होता था। हाथ को हाथ न सूझता था और वह यही सोच रही थी कि मैं जीवित हूँ, या मर गई हूँ। भय का एक संसार था, और सन्नाटा छाया हुआ था, और मासूमा का दिल बैठा जा रहा था कि अँधेरे में उसने ऐसी आहट सुनी की जैसे कोई साँप की तरह आ रहा है। “जालिम आ पहुँचा” उसने अपने दिल में कहा, “हाय मासूमा, तेरा यहाँ अब कोई मददगार नहीं।”

इतने में एक बियासालाई जली और उसने उस भयानक चेहरे को देखा। इसके बाद कड़वे तेल का एक चिराग जलाया। मासूमा ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसको मालूम हुआ कि वह शायद किसी तहखाने में है।

वह जालिम चारपाई के पास आकर एक तख्त पर बैठ गया। मासूमा भिड़कर अलग हो गई। उसने मासूमा को कुछ मिठाई और दूब दिया और अफसोस कि उसने उसको मार-मार कर खिलाया।

+

+

+

चाटी तक अपनी रक्षा के लिये हृदय से अधिक कोशिश करती है; और मासूमा ने भी अपने को उस जालिम से बचाने से लिये सिर-तोड़ कोशिश की। अपनी उम्र में पहली बार उसने अजनबी से बात की। और वह भी इस तरह कि हाथ जोड़ कर कहा, “खुदा के लिये मेरे ऊपर दया करो और मुझे मेरे घर पहुँचा दो।” किन्तु तोबा कोजिये ! इन्दिय ने क्रोध में आकर उसका गला ऐसा रगड़-रगड़ कर घोंटा कि वह घायल

मुर्गे की भाँति तड़पने लगी । उसने अपनी जान बचाने की आखिरी कोशिश की । फिर हाथ पैर ढीले हो गये, और वह बेहोश हो गई।

जब वह होश में आई, कि फिर उसके मुँह से चीख निकली और वह बेहोश हो गई। इसी तरह वह कई बार होश में आकर बेहोश हुई।

न जाने वह कितनी देर तक बेहोशी की दशा में पड़ी रही कि उनकी आँखें खुलीं और उसको मालूम हुआ, कि अब दिन है। उसके हाथ पैरों में बिलकुल जान न थी, और वह बड़ी देर तक उसी तरह पड़ी रही। चारों ओर वह अँधेरे में देख रही थी। थोड़ी देर बाद उसको दिखाई देने लगा। वह एक तहखाने में थी, जिसके बीच में तीन खम्भे खड़े थे। बड़ी देर तक वह उसी तरह पड़ी रही। फिर अन्त में उठी और उठते ही सब से पहले उसने चारपाई का पायतानी की रस्सी खोलकर एक फन्दा बनाया, कि वह अपनी घृणित जिन्दगी का जल्द से जल्द स्वातमा करे। उस बेचारी को यह भी न मालूम था कि इस तरह जान देना कठिन नहीं, बल्कि असंभव है। जैसे ही फन्दा कड़ा होता था, हाथ अपने आप ढीला हो जाता था। जब हर प्रकार से उसको इसमें असफलता हुई तब उसने एक पत्थर लेकर बहुत-बहुत अपना सिर फोड़ा। किन्तु इस तरह भी वह अपने को मार न सकती थी। वह मरने के लिये तड़प रही थी। किन्तु भला मौत कहाँ? अन्त में थक कर सिर पकड़ कर बैठ गई। थोड़ी देर बाद उठी और उस तहखाने का कोना-कोना देखा। दरवाजा उसका क्या था; मानों लोहे का तख्ता था, जो रङ्ग से भर-पूर रंगा हुआ था। उसने देखा कि जब दरवाजा नहीं खुलता, तब फिर हार और थककर चारपाई पर आकर पड़

रही और अपनी लाचारी पर विलख-विलख कर रोना शुरू किया। रोते-रोते सो गई।

न जाने वह कितनी देर तक सोई कि उसने एक दुःख स्वप्न देखा। उस ने देखा कि असगर सामने रज्जु दा खड़ा है। वह दौड़ी। उसने घृणा से कहा, “तू अब किस मुँह से मेरे पास आती है।” वह रुक गई, और उसने गिडांगड़ा कर अपने प्यारे शौहर के पैर पकड़ लिए कि उसने झटका देकर पैर छुड़ा लिया और वह जाग उठी। आँखें जब खुलीं, तब वह सन्न था। वह पगली-सी उठकर सिर धुनने लगी और पागल होकर उसने अपना सिर दीवानों की तरह दौड़कर दीवाल के टकरा दिया। वह बेहोश तो न हो सकी; किन्तु बेजार होकर जमीन पर गिर पड़ी। वह उसी अवस्था में बड़ी देर तक पड़ी रही।

×

×

×

सन्नाटा उसी तरह छाया हुआ था; और वह उसी तरह चुपचाप निर्जीव सी पड़ी थी। उसको पहले तो कुछ सन्देह-सा हुआ, किन्तु फिर उसने जब कान लगाकर सुना, तब विश्वास सा हो गया, कि कोई आदमी दीवार की आधी से अधिक ऊँचाई के पास कुछ खोद रहा है। धमक अधिक जार-दार होती जाती थी, और वह उसी ओर देख रही थी कि इतने में कुछ मिट्टी भी उस जगह से गिरी। उसका दिल धड़कने लगा, और वह ठिठक कर दीवार से लगकर गिरती हुई मिट्टी और ईंटों को देखने लगी। ईंटें गिरनी बन्द हो गईं और थोड़ी देर बाद धमक की आवाज कम होकर बंद हो गई, और पहले की भाँति सन्नाटा छा गया। जब काफी देर हो गई, तब वह उठी। उसको डर लग रहा था कि कहीं वह जालिम फिर न आ पहुँचे। उसने उठकर ध्यान से दीवाल को देखा, जहाँ से ईंटें

और मिट्टी गिरो थीं। “भारवर्च क्या, कि मैं उसी ओर से निकल सकूँ।” यह बिचार उसके दिज्ञ में आया। उसने पलंग को घसीट कर दीवाल के पास लगाया। किन्तु वह जगह ऊँची थी, जहाँ से ईंटें गिरी थीं। उसने इधर उधर देखा और पलंग को हटाकर उसकी जगह बड़ी कठिनाई से तख्ते को खींचकर लाई। तख्ते के ऊपर उसने चारपाई के सिरहाने के दो पाये रक्खे और उसपर खड़ी होकर जहाँ से ईंटें गिरी थीं, उस स्थान का उसने निरीक्षण किया। हाथ से उसने मिट्टी और ईंटें हटानी शुरू की और इस काम में कोई कठिनाई उसके सामने न आई! क्योंकि वह जगह अभी ताजी ही खोदी गई थी। थोड़ी ही देर में उसने एक बड़ा सूराख कर लिया। अब केवल मिट्टी ही मिट्टी थी; जिसे उसने हाथ से हटा-हटाकर गिराना शुरू किया। किन्तु ज्यों-ज्यों यह मिट्टी हटाती जाती थी, ऊपर से मिट्टी और खिसकती आती थी। मिट्टी हटाने में उसका हाथ टीन के किसी सन्दूक से लगा, जिसको उसने पकड़ कर खींचा। उसके साथ ही बहुत सी मिट्टी खिसक आई। सन्दूक छोटा-सा था, किन्तु काफी बजनी था। उसने उसको हिलाकर देखा, तो मालूम हुआ कि शायद उसमें रुपया पैसा है। उसमें ताला लगा हुआ था। उसने ताला से मिट्टी हटाना शुरू की और थोड़ी देर में उसका आँखों को दिन का प्रकाश दिखाई पड़ा। उसने और मिट्टी हटाई और भाँककर देखा, तो उसको आसमान की जगह पर दूरी हुई दीवार दिखाई पड़ी और सामने कुछ ईंटें, और कूड़ा पड़ा था। उसने जल्दी से सूराख को बड़ा किया, और जब काफी बड़ा हो गया, तब वह उसमें लेटकर ऊपर निकल आई। उसने देखा कि मैं एक छोटे से पुराने किन्तु ईंटों और चूने से बने हुए गुफा में हूँ। यह एक तज़्ज जगह थी। अब वह

यह सोच रही थी कि इस सन्दूक को क्या करूँ ? यदि उसी जगह छोड़ती थी, तो उसको पूरा विश्वास था, कि वह जालिम आकर ले लेगा । और यदि साथ लिये जाती तो उसका दिल इसके लिए तैयार न होता । क्योंकि उसको पूरा विश्वास था कि हो न हो इसमें रुपया है जिसे कोई कंजूस इस जगह गाड़ करके उससे छुटकारे का कारण बना है । उसने कुछ सोचा और अन्त में चार और अपराधी बनना स्वीकार किया । किंतु यह मंजूर न किया कि यदि इसमें कुछ करया पैसा और माल हो तो वह उस जालिम के हाथ लगे, जिसने उसको ज़िन्दगी से निराश कर दिया था । जब उसने यह निश्चय कर लिया तब उसने, डरती-डरती कि कोई देख न ले, उस संकीर्ण गुफा के बाहर झाँक कर देखा कि मैं एक पुराने जमाने के कब्रिस्तान में हूँ, जहाँ दूर तक टूटी हुई पुरानी कब्रें फैली हुई हैं । सूरज डूब चुका था और शाम हो गई थी ।

६

जब कुछ अंधेरा-सा हो गया, और उस जगह उसको डर मालूम होने लगा तब वह उस गुफा से निकली । वह कुछ डर सी गई । क्योंकि वह बड़ी पुरानी कब्र में से निकली थी जो ऊपर से ज्यों की त्यों थी । चारों ओर टूटी और पुरानी कब्रें दिखाई दे रही थीं और विचित्र भयानक दृश्य था । किन्तु यह सब उस स्थान से अधिक डरावना न था, जहाँ इसको उस जालिम से दूसरी बार भेंट हो जाने का डर था । वास्तव में यह उस जालिम का डर ही था, जो उसको इस धुँधले अँधेरे के समय कब्रिस्तान में अज्ञात दिशा की ओर लिये जा रहा था । नहीं तो वह डर कर बेहाश हो गई होती । बहुत दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था, और एक आदमी भी दिखाई न पड़ता

था। वह अब कुछ निडर-सी थी। क्योंकि मौत की इच्छुक थी। वह तेजी से इस जगह से दूर होना चाहती थी। इस कारण से नहीं कि वह मुर्दों के रहने की जगह में थी, बल्कि वहाँ वह भयानक और अंधकार-पूर्ण तहखाना था। वह उसी तरह तेजी से चलने लगी। उसका आँखें किसी खास चीज को खोज रही थीं, और उसकी खुशी की कोई सीमा न रही, जब उसने एक बड़े कुँए की चबूतरा देखी। वह तेजा से दौड़ कर वहाँ पहुँची। पुराने जमाने का न जाने किस समय का बना हुआ एक बड़ा कुँआ था। उसने भाँक कर कुँए के भीतर उभर में पहली बार देखा, और भीतर के अंधकार को देखकर उसका दिल कॉप उठा। मरना कोई सरल बात नहीं है, और फिर उसके लिये जो जवान और तन्दुरुस्त हो। उसने अपने आपको विचित्र पेशापेश में पाया। उसको अपनी जवानी का खयाल आया और साथ ही असगर का खयाल आया। बस, मन मसोस कर रह गई। वह कोशिश करके उससे अवश्य मिल सकती था। किन्तु यह कैसे हो सकता था? नहीं, नहीं, अब मैं कभी असगर को मुह न दिखाऊँगी। तो फिर आखिर क्या होगा? संसार उसके लिए अंधेरे के समान हो गया।

उसके लिए मरना ही अच्छा है, और यह निश्चय करके उसने उस सन्दूक को कुँए में फेंक दिया। उसके गिरने को लौटी हुई आवज अभी गायब भी न हुई थी कि सामने से कोई आदमी अंधेरे में आया हुआ मालूम हुआ। वह डर सी गई और उसने इस प्रकार रोता-पीटती अपने को कुँए में डाल दिया।

एक धमका हुआ और यह पानी के भीतर तक चली गई कि उसका पानी ने ऊपर फेंका। उसके हाथ पैर उसके कपड़े में चलाफ गये थे। उसने बेवसी की हालत में जोर से चिल्लाकर

हाथ-पैर मारे। क्योंकि उसको वास्तव में अब मालूम हुआ, कि मरना कैसा होता है, किन्तु उसकी चीख का पानी के रेले ने शान्त कर दिया और वह थोड़ी देर की कशमकश के बाद एक बेहोशी की अवस्था में डूब गई।

७

जब उसकी आँखें खुलीं तब उसने अपने को हुसेनबख्श के घर में चारपाई पर पड़ी हुई पाया और सेवा के लिये उसकी बहन थी। उसे वहाँ हर तरह से आराम मिला। जब से वह आई थी हुसेनबख्श धीरे से घर में आता और वही तरह चला जाता। सवा सान भहने के बाद उसको बच्चा पैदा हुआ।

हुसेनबख्श ने उस समय से लेकर अब तक उसको अच्छी तरह रक्खा। वह जानता था कि वह किम्मत की सताई हुई है और पीड़ित है। क्योंकि वह सदा दुःखी और उदास रहती थी और उसको वहन हर तरह से उसके गम को दूर करने की असफल कोशिश कर चुकी थी। लेकिन फिर भी हुसेनबख्श को पूरी आशा थी कि कभी न कभी तो उसके मन का दुःख जाता रहेगा और तब यह मेरी औरत बन कर रहेगा। वह अपनी बहन के द्वारा कई बार उसकी मंशा मालूम कर चुका था और हर बार मासूमा को अपने रास्ते पर हट पाया था कि वह इस प्रकार जिन्दगी व्यतीयेगी। वह जानती थी कि हुसेनबख्श के रिज को हालत क्या है? वह नौकरों की तरह उसकी सेवा करता था और मासूमा को भी उससे मुहब्बत हो गई थी, जिसको भाई की मुहब्बत कहते हैं। उसका मुँह उसको “भाई-भाई” कहते सुखता था और वह उससे हृद से ज्यादा सहानुभूति रखती थी। क्योंकि उसने अपनी जान खतरे में डालकर उसको कुयें में से निकाला था।

खुलासा यह कि वह इस समय तक हुसेनबख्श के यहाँ थी और इस समय वह हुसेनबख्श के साथ रेल में उनके कुछ रिश्तेदारों से मिलकर आ रही थी। क्योंकि हुसेनबख्श उस घर में बिलकुल अकेली छोड़कर कहीं बाहर न जा सकता था कि सौभाग्य से असगर और हम मिल गये।

८

असगर कमरे में गये। उन्होंने देखा, कि मासूमा गन की तस्वीर बनी हुई है, जमीन पर बठी है। वह एक तरह के रङ्गान कपड़े का पाजामा पहने हुए थी और एक गंदी-सी सफेद चद्दर। पैर में जूता तक न था। जैसे ही उसने अपनी आँखें पोंछकर असगर की ओर देखा, तो असगर के दिन पर एक चोट लगी और वे व्याकुल होकर उसकी ओर भुके, क्योंकि वास्तव में असगर की मुइब्बत मासूमा से इश्क का सम्बन्ध रखती थी।

“खबरदार, मुझे हाथ न लगाना। अलग, अलग” मासूमा ने बड़ी गम्भीरता से कहा। असगर एक साथ ही इस एक असाधारण बर्ताव को देखकर हैरान से हो गये। क्योंकि वे तो यह समझते थे कि वह मुझे देखते ही लपट कर बेहोश हो जायगी। उसके मुँह से एक साथ ही निकला, “मासूमा” और यह कहकर वह फिर बढ़ा, कि मासूमा ने हाथ उठाकर कहा, “अलग, अलग, खबरदार, मुझे हाथ न लगाना।”

असगर ने आश्चर्य में आकर कहा, “यह क्यों?”

मासूमा ने ठंडा साँस लेकर असगर की ओर बिचित्र ढंग से देखा और कहा, “अफसोस, मैं तुम्हें मुँह दिखाने के लायक नहीं और यह केवल संयोग था कि……।”

“नहीं तो”— असगर ने कहा।

‘मैं उम्र भर तुम्हें मुँह न दिखाती’— मासूमा ने कहा—
“यह बच्चा तुम्हारा है, तुम इसे ले लो और मेरा पूरा किस्सा सुन लो। इसके बाद यह निश्चय करना, कि मैं तुम्हारे काम का हूँ या नहीं ?”

असगर को सचमुच सन्देह होने लगा और उसने रुकते-रुकते कहा, किन्तु मुझको तो कहा गया है, कि हुसेनबख्श, हुसेनबख्श, हुसेनबख्श.....।”

‘वे मेरे सगे भाई के बराबर हैं—“मासूमा ने कहा।

कुछ प्रसन्न होकर असगर ने कहा, “तो फिर क्या ?”

“पहले मेरा किस्सा सुन लो”—मासूमा ने कहा—“जल्दी न करो।”

यह कहकर उसने दिल को हिला देने वाली अपनी कहानी को गे-गेधर सुनानी आरम्भ की और ठीक ठीक आरम्भ से लेकर अन्त तक व्योम का व्योम किस्सा सुना दिया।

असगर के ऊपर कमबोरी ने अपना प्रभाव डाला और वह आँखें नीचा धिये हुए सोच रहा था। उसके दिल का मुहब्बत का जोश उड़ गया था। ‘मेरे मालिक मुझ पर रहम करो।’ यह कहकर मासूमा उठकर आई और उसने असगर पैर पकड़ लिये। असगर बिलकुल हिले डुबने न, कि उसने कहा, “मुझको दासी की तरह एक कोने में पड़ी रहने देना और शेष घृणित जिन्दगी तुम्हारे कदमों में ही बिता दूँगी। तुम कोई दूसरी शादी कर लेना।”

इसी तरह गिढ़गिड़ाकर न जाने क्या कहती रही, कि असगर ने ध्यान से फिर मासूमा को देखा और कुछ सोचकर पूछा, “तुमने मुझको कोई खत भी नहीं लिखा, यदि चाहती तो खत लिख सकती थी।”

“यदि मैं चाहती तो तहखाने से निकलने के बाद कुयें में न गिरकर तुम्हारे पास आने को कोशिश भी कर सकता था और आश्चर्य नहीं कि इसमें सफल भी हो जाती और फिर यदि चाहती तो तुमसे अपनी जिल्लत को छिपा भी सकती थी और झूठ भी बोल सकती थी।” मासूमा ने रोती हुई कहा। इस वाक्य ने असगर पर विचित्र ही प्रभाव डाला। क्या यह सच बात न थी कि यदि वह उससे कुछ न कहता, तो उसको उसकी जिल्लत का पता भी न लगता। खुदा का कदरत कि असगर ऐसे मनुष्य की पुरानी फिलासफी पर इस्लाम की आबरू की फिलासफी ने अपना प्रभाव डाला और उसने कुछ विचार करके कहा, “मासूमा !” वह चुप हो गया और फिर बोला, “तुम्हारा इसमें कुछ भी कुसूर नहीं। वास्तव में मुझको आज नहीं, बल्कि अभी यह मालूम हुआ कि वास्तव में पवित्र और बेगुनाह वह है कि जिसका दिल सभी बुराइयों से बचा हुआ है, चाहे उसका शरीर गन्दा ही क्यों न हो ? लेकिन जिसका शरीर पवित्र है, किन्तु हृदय और आत्मा पवित्र नहीं है, वह वास्तव में किसी भी तरह पवित्र नहीं है। तेरे ऊपर यदि किसी नीच व्याक्ति ने मैला डाल दिया तो तुमने उसको अपना गला घोटकर और कुयें में गिर करके धो डाला और अब तक धो रही है। यदि तू चाहती तो इसमें सन्देह नहीं, कि मुझको अपनी मुसीबत का पता ही न लगता और वह वास्तव में बहुत ही बुरा होता। किन्तु चूँकि तू पाक और साफ है और बेगुनाह और सच्ची है, अतः तुमने सच-सच बात कही। मैं ऐसी बीबी के बिना कभी भी जीवित नहीं रह सकता।”

कठिनाई से बात खतम हो पाई थी, कि मासूमा के मुँह से खुशी की एक चीख निकली और वह वहीं असगर के कदमों में

बेहोश होकर गिर पड़ी। असगर ने अपनी आबरूदार और सच्ची बीबी को उठाकर अपने गले से लगाया।

×

×

×

हम अलग कमरे में बैठे थे, और सोचते थे, कि चाँदनी भीतर जनानखाने में गई है, कि वह आँखों से आँसू पोंछती हुई आई। हमने कहा, “अरे, यह तुझे क्या हुआ, तो उसने अपनी चोरी का किस्सा सुनाया, कि वह किस तरह बेईमानी के साथ दरवाजे के एक सूराख से मियाँ बीबी की मुनकात देख और सुन रही थी। हमने उसकी कमबोरी और चोरी पर उसको बहुत कुछ बुरा भला कहा; किन्तु अब तो वह सुन आई थी; और खुदा को इसी तरह मंजूर था, कि यह किस्सा पूरा होकर नसाहत का कारण बने।

६

बेचारा हुसेनबक्श अब भी प्रसन्न था, और वास्तव में उसको सच्ची प्रसन्नता हुई होगी। क्योंकि वह अच्छे स्वभाव का था। मासूमा ने उसकी सेवा का यह पुरस्कार दिया कि वह जिस तरह उसको भाई कहती आई थी, उसी तरह उसको अब भी भाई समझेगी और उस सन्दूक का पता बता दिया, जो अब तक उसी कुएँ में पड़ा था, जिसमें से उसने मासूम को अपनी जान पर खेल कर निकाला था। इस सन्दूक को मासूमा अब तक अमानत समझती थी, किन्तु अब उसको इस तरह पड़ी रहने देना बुरा मालूम हुआ। उस सन्दूक में साढ़े चार हजार मूल्य की बादशाही मोहरें निकलीं, जो हुसेनबक्श की मुहब्बत और सेवा का सर्वोत्कृष्ट भेंट थी।

बुरा समय किसी पर बह बर नहीं आता। संसार के भगड़े में बरजोर और बेबस होना कोई तारीफ के लायक गुण

नहीं है। प्रत्येक मज्जहब की सभ्यता ने शरम, और हया, और पर्दे की कोई न कोई सीमा नियत कर दी है और इसमें अति-शयोक्ति करना सम्भव है, कि किसी तरह लाभकर हो, किन्तु खतरनाक अवश्य है। ऐसी बेवस औरतें वास्तव में न तो शौहर की निदमन कर सकती हैं और न मज्जहब और जाति की। क्या आवश्यकता के समय मासूमा को-सी ही औरतें पर्दे से निकल कर नज़वार चलायेंगी ? क्या हम ऐसी ही औरतों के बज़-वृत्ते पर आज़ादी लेंगे ? क्या ऐसी ही औरतें टर्की में रहती हैं; जिन्होंने समय पड़ने पर मर्दों से कहा, कि जाओ, तुम लड़ाई के मैदान में जाओ, और शेष कामों को हम सँभालती हैं और समय पड़ने पर तुम हमें बुला लेना। हम तुम्हारे साथ दुश्मनों की गोलियों का सामना भी करेंगी। इन औरतों ने जो कहा वह किया। यदि ध्यान से देखा जाय तो हमारी गुलामों का सब से बड़ा यही रहस्य है।



चगताई साहब की अन्य पुस्तकें

(१) लेफ्टिनेंट—यह चगताई साहब की लिखी लेफ्टिनेंट, महारानी का सपना तथा खतों की दिल्लगी, इन तीन कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी अपने ढङ्ग की एक ही है। लेफ्टिनेंट हास्यरस प्रधान है, आरम्भ से अन्त तक हास्यरस की गहरी पुट है। महारानी का सपना एक पति परायण पत्नी के पति प्रेम व बलिदान की अद्भुत कहानी है। खतों की दिल्लगी भी हास्य व व्यङ्ग्यपूर्ण अनोखी कहानी है। मूल्य १।।।

(२) फुन बूट—यह चगताई साहब का लिखा हुआ एक प्रेम-रस पूर्ण अनोखा उपन्यास है। एक मनुष्य की प्रेमिकाओं के प्रेम, पात्रों के अन्त-ईन्द्र का अद्भुत चित्रण इस उपन्यास में मिलेगा, साथ ही हास्य व व्यङ्ग्य का पुट भी यत्र-तत्र उपन्यास को और भी रोचक बना देते हैं। एक बार उपन्यास हाथ में लेने पर इसे समाप्त किये बिना चैन नहीं मिलती। मूल्य १।

(३) चगताई की कहानियाँ—भाग १ व २, इसमें चगताई साहब की कहानियों के संग्रह हैं। इन संग्रहों के छोड़े ही समय में तीन २ संस्करण निकल चुके हैं, इसीसे इन कहानियों की लोकप्रियता का पता चलता है। प्रत्येक का मूल्य १। है।

(४) कोलतार—चगताई साहब की जिन्होंने दो चार भी कहानियाँ पढ़ी होंगी, वह जानते होंगे कि आप लोगों को हँसाने की कला में कितने पटु आपकी चुटकी कि नी गहरी होती है। इस उपन्यास में इतना हास्य, व्यङ्ग्य और चुलबुलाहट है कि आप इसे एक साँस में पढ़ जायेंगे। ऐसा रोचक उपन्यास हिन्दी में आज तक नहीं निकला है। मूल्य २।।

(५) मिर्जाजंगी—यह चगताई साहब के मिर्जाजंगी, शादी की जरूरत, वे रजामन्दी तथा नौजवान डाक्टर नामक चार छोटे प्रहसनों का संग्रह है। प्रत्येक प्रहसन रम्य व व्यंग्यपूर्ण है। पहला प्रहसन ऐतिहासिक है, शेष तीन सामाजिक हैं। मूल्य १।

मैनेजर - छात्रहितकारी पुस्तकपाला दारागंज, प्रयाग।

सचित्र, मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद, सरल, रोचक, जीवन को
जैसा उद्यनेवाली सस्ती पुस्तकें (प्रत्येक का मूल्य 1=)

- | | | |
|-------------------------|-----------------------|-----------------------|
| १ श्रीकृष्ण | २१ मोतीलाल नेहरू | ५३ गैरीबाल्डी |
| २ महात्मा बुद्ध | २८ जवाहरलाल नेहरू | ५४ स्वामी शङ्कराचार्य |
| ३ रानाडे | २९ श्रीमती कमला नेहरू | ५५ एफ. एन्ड्रूज |
| ४ अकबर | ३० मीरा बाई | ५६ गणेशराकर वि० |
| ५ महाराणा प्रताप | ३१ इब्राहिम लिंकन | ५७ डा० सनयातसेन |
| ६ शिवाजी | ३२ अहिल्या बाई | ५८ स० गुरु रामदास |
| ७ स्वामी दयानन्द | ३३ मुसोलिनी | ५९ महा० संयोगिता |
| ८ लो० तिलक | ३४ हिटलर | ६० दादा० नौरोजी |
| ९ जे० एन० ताता | ३५ सुभाषचन्द्र बोस | ६१ सरोजिनी नायडू |
| १० विद्यासागर | ३६ राजा राममोहनराय | ६२ वीर बादल |
| ११ स्वामी विवेकानन्द | ३७ लाला लाजपत राय | ६३ पद्मभि सीतारमैया |
| १२ गुरु गोविन्दसिंह | ३८ महात्मा गांधी | ६४ देवी जोन |
| १३ वीर दुर्गादास | ३९ महामना मालवीयजी | ६५ प्रिन्स बिस्माक |
| १४ स्वामी रामतीर्थ | ४० जगदीशचन्द्र बोस | ६६ कार्ल मार्क्स |
| १५ सम्राट् अशोक | ४१ महारानी लक्ष्मीबाई | ६७ कस्तूर बा |
| १६ महाराज पृथ्वीराज | ४२ महात्मा मेजिनी | ६८ रवीन्द्रनाथ ठा० |
| १७ रामकृष्ण परमहंस | ४३ महात्मा लेनिन | ६९ सरदार पटेल |
| १८ महात्मा टाग्लेस्टाय | ४४ महाराज छत्रसाल | ७० संत ज्ञानेश्वर |
| १९ रणजीत सिंह | ४५ अब्दुल गफ्फारखाँ | ७१ जवाहरलाल नेहरू |
| २० महात्मा गोखले | ४६ मुस्तफा कमालपाशा | ७२ राज गोपालाचार्य |
| २१ स्वामी भद्रानन्द | ४७ अबुल क० आजाद | ७३ चंद्रशेखर आजाद |
| २२ नेपोलियन | ४८ स्टालिन | ७४ सरदार भगतसिंह |
| २३ बा० राजेन्द्र प्रसाद | ४९ वीर सावरकर | ७५ बन्दा बैरागी |
| २४ सी० आर० दास | ५० महात्मा ईसा | ७६ एस० राधाकृष्णन |
| २५ गुरु नानक | ५१ वीर हम्मीरदेव | ७७ राजर्षि टंडन |
| २६ महाराणा सांगा | ५२ डी० बेलरा | ७८ योगी अरविंद |

